❀ श्रीः ❀

करणीन्द्र - कला - प्रकाश

रचयिता

श्री हिंगलाज दान जागावत

प्रधान संपादक व संशोधक

श्री जुगलकिशोर मिश्र एम० ए०, एल-एल० बी०

राजमिश्र ठिकाना जोवनेर, मलिकपुरा (जयपुर)

उप-सम्पादक

श्री रामनाथदान बारहठ, हाथीपुरा

प्रकाशक

सु श्री चिमन कुँवरि आढी जी,

धर्मपत्नि कविराजश्री १०५ श्री मुरारिदानजी आशियात्मज

श्री गणेशदानजी (जोधपुर)

विशेष:—श्री-मण्ढ खुड़द (मारवाड़) की मुहर-विहीन पुस्तक चोरी की समझी जावेगी।

प्रथमावृत्ति १०००
आश्विन शुक्ला,
नवरात्रि, २०१० विक्रम.

[मूल्य १) रुपया

श्री करणी मन्दिर देशनोक (बीकानेर)

मुहर (श्री-मण्ढ खुड़द)

मारवाड़

....

....

....

समर्पण

श्री करणीन्द्र-प्रकाश की कला, किरण-राकेश,
श्रवण-सुण्यां हियै संचरैं, भांजण तोम-विशेष ।
सुधा-सरस शशि-शरद सम, पद पदान्त भरपूर,
कवि हिंगौल अर्पित करे, हाजिर ग्रन्थ हजूर ॥

कृपा-पात्र

हिंगलाजदान जागावत

चारणवास
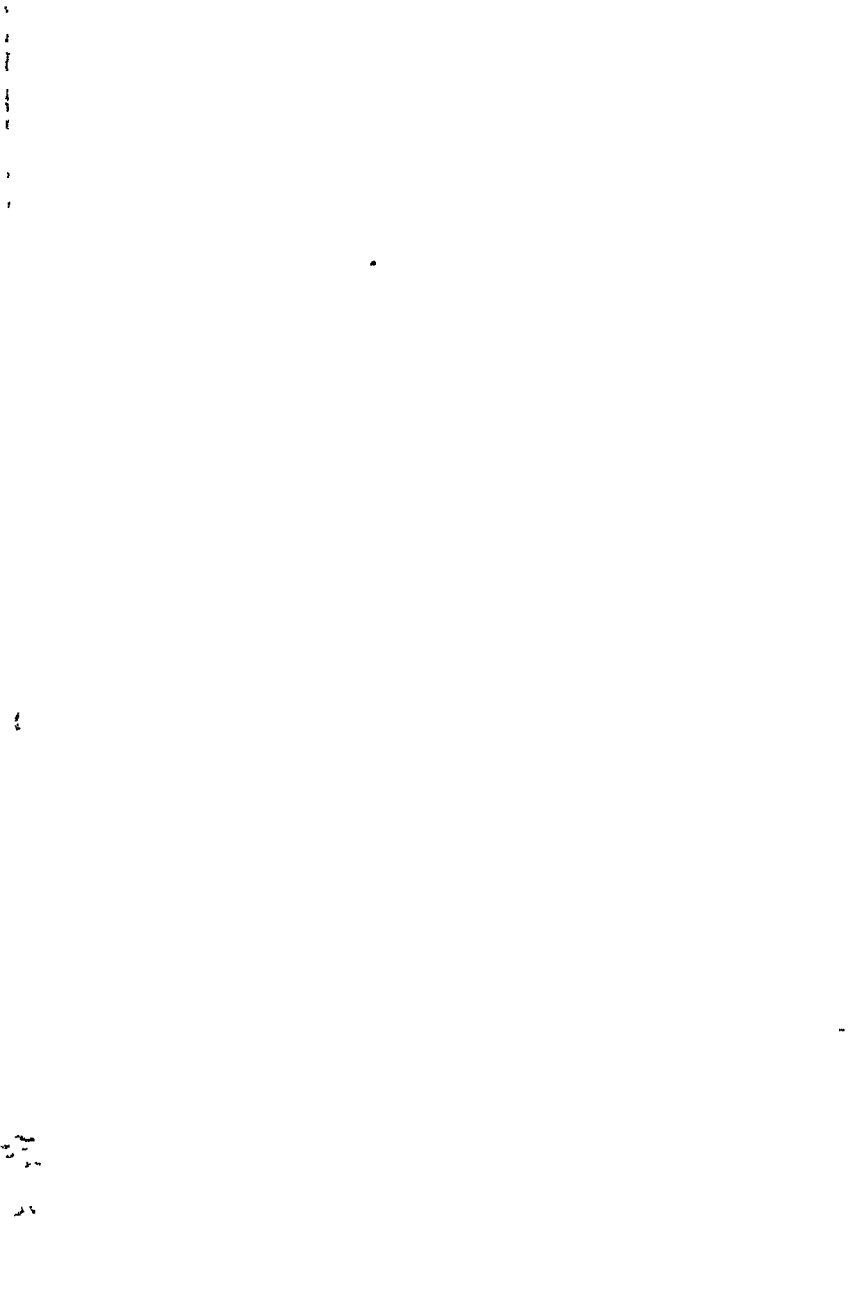
परम पूज्य कलावतंश शक्त्यावतार सुश्री इन्द्रकुँवरि बाईजी महाराज
खुडद (मारवाड़)
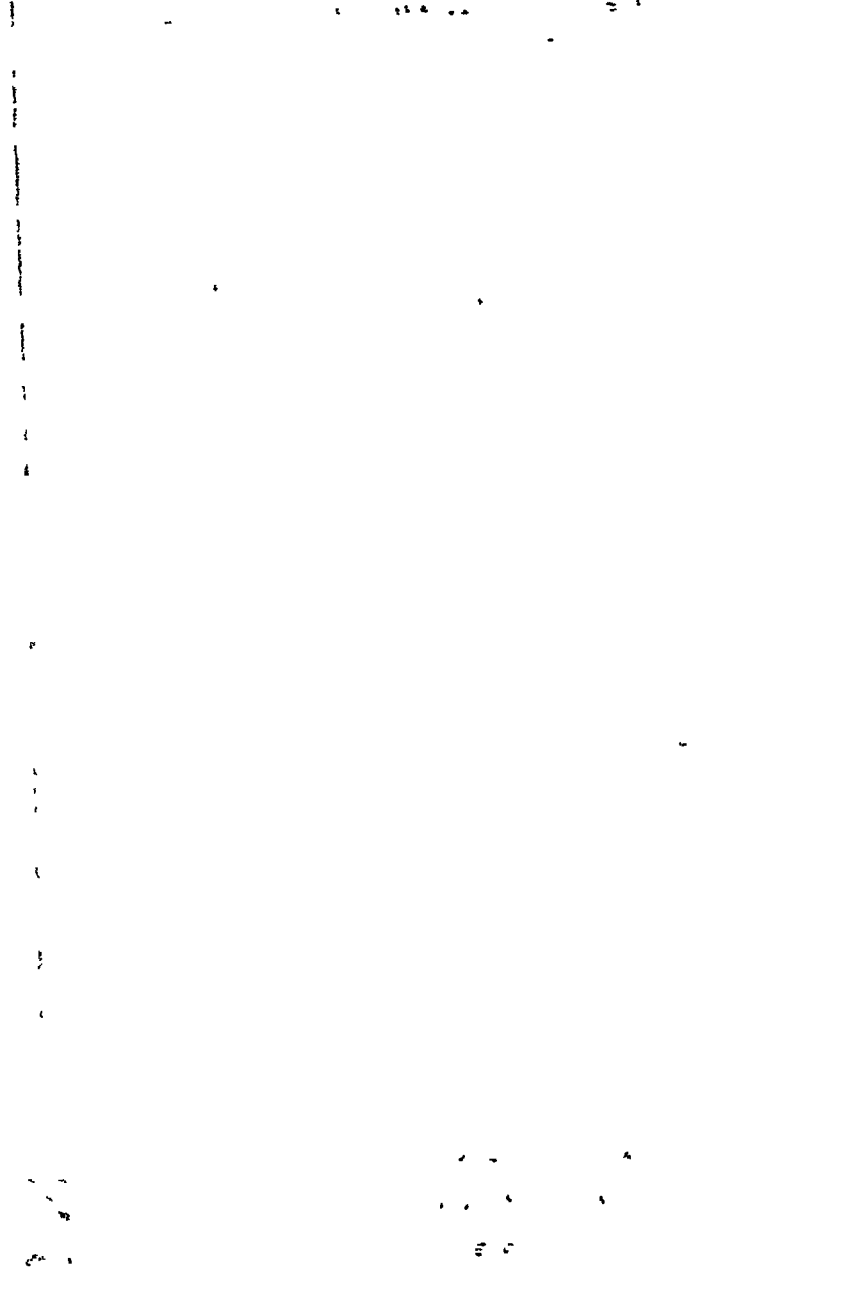
इस पुस्तक के रचयिता—

कवि श्री हिंगलाजदान बारहठ जागावत
चारणवास (जयपुर)

❀ अनुक्रमणिका ❀

क्रमसंख्या विषय	पृष्ठ संख्या
१—आमुख	अ
२—भूमिका	क
३—शुद्धि पत्र	(i)
४—सरस्वती-वन्दना	१
५—करणी-मंगल	३
६—बलिदान विनोद उर्फ भक्ति प्रदान	१५
७—चरजा-खण्ड	३७
८—आरती	६१
९—इन्द्रकला-प्रकाश	६२
१०—खुडद-मँढ-मूर्त्ति-स्थापन	६४
११—खुडद-मँढ-वर्णन	७४
१२—चरजा-खण्ड	८४
१३—खुडद-मन्दिर में श्री करणी-जन्मोत्सव समारोह	९७
१४—कवि-भक्त कुटीर पर इन्द्रेश का पदार्पण	१०४
१५—शक्ति-पदार्पण पर चरजा	१०९
१६—राजबाई-महाराज	११२
१७—चरजा श्री हिंगलाजदानजी जागावत-सुता-कृत	११५
१८—चिमन कुँवरि-चिन्तामणि	११७
१९—आरती	१२१
२०—जगडू-साहु री अर्ज	१३०
२१—विशेष छन्दादि व सम्पादन-कृत कवि-प्रशस्ति	१३५/१४०

★ आमुख ★
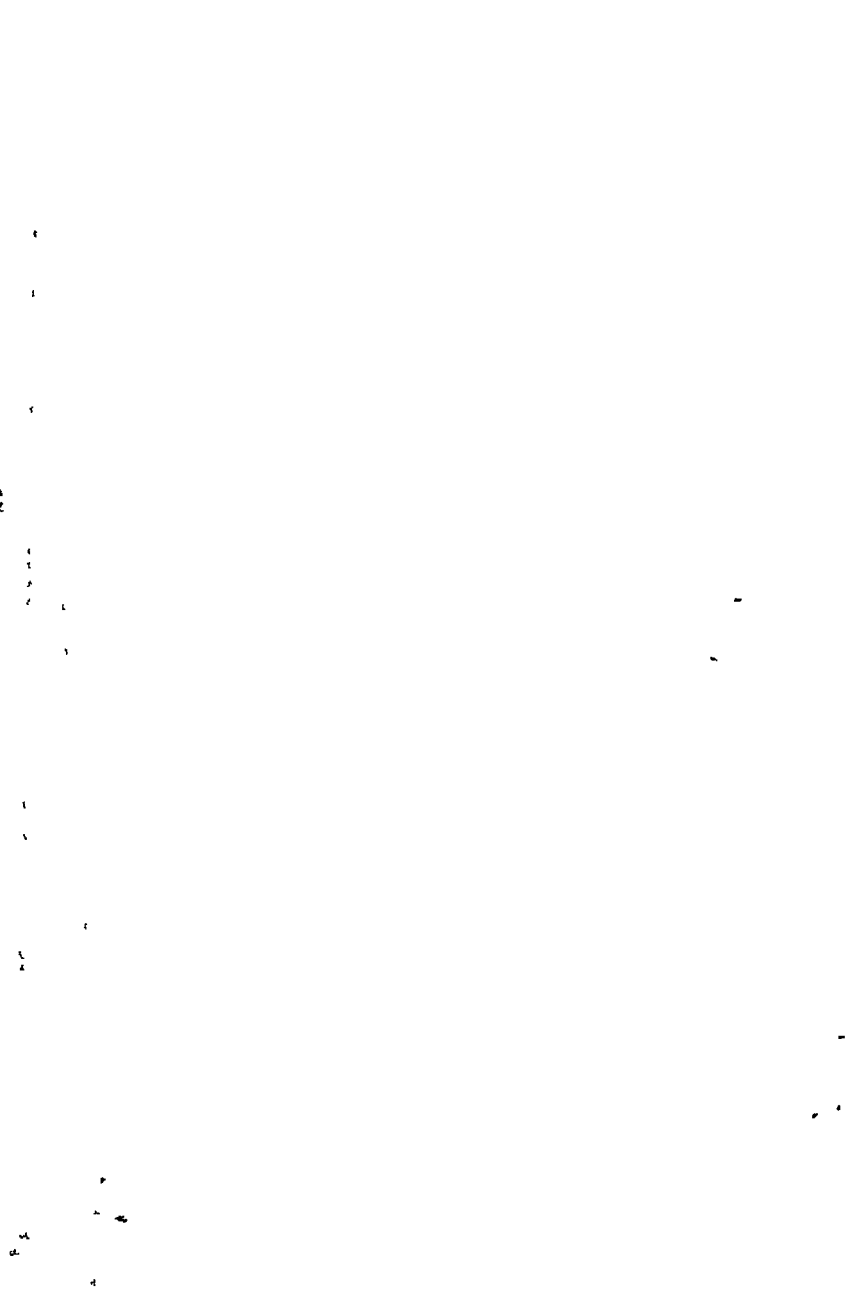
वाचक वृन्द !

कवि की अन्तः प्रेरणा इस प्रकार है जो कवि के भाव और सम्पादक की भाषा में आपके सम्मुख 'आमुख' में समक्ष है। भावानुभूतियों को पुस्तकाकार रूप देकर आप लोगों के कर-कमलों तक पहुँचाने की धृष्टता जो इस अल्पज्ञ ने की है, उसके लिये यह किंकर सदैव क्षम्य है। शक्ति-काव्य में नूतन अभिव्यञ्जनाओं का आगमन प्रज्ञाशक्ति को अतिरंजित कर ही गया, और मुझ जैसे अल्पज्ञ की भी अनुभूति वेगवती बन ही गई। हृदय की उन उन्मुक्त कल्पनाओं और प्रज्ञा की ईषत् अभिव्यंजनाओं को अभिव्यंजित होने से रोक नहीं सका। इसे जो चाहें कहलें, एक ओर यह धृष्टता की पराकाष्ठा है तो दूसरी ओर अस्सीम साहस। साहस मौलिक स्वरूप में हेय है, किन्तु भावना-जगत की कल्लोल चुटुल लहरियों की अभिव्यंजना इसे अतिरंजित होने से बचा नहीं

सकती और यही कारण है कि कवि-कुल-शिरोमणी तुल
के श्री शब्दों में वह 'स्वान्तः-सुखाय' होकर प्रस्फुटित
शक्ति-शील और सौन्दर्य की एकीभूत अभिव्यक्ति, सत्यं
सुन्दरम् का लोकहित में अवसान और जगज्जननी महामाया
का निखिल विस्मयाकार स्वरूप उस प्रौढ कवि की उन्मुक्त
का विषय बन ही गया। दर्शन-शास्त्र की प्रवरणता का
सत्य स्वरूप को ओझल कर ही देता है, किन्तु उसी जग
की यशोगान गाथा का प्रस्फुटित स्वरूप इसे झंकृत होने
नहीं सकता। अतः इस काव्य में रसज्ञ-जन कुछ
मुद्रा का ही अवलोकन कर सन्तुष्ट होंगे।

'मा-निषाद' वाली प्रथम पंक्ति ने आदि-काव्य की
महाशक्ति का जो विपद् स्वरूप अनावृत रूप में प्रस्तुत
जो उपनिषदों की माया-शक्ति कहलाई तथा जो मध्य
कवियों की रहस्य-भावना की पूर्व पृष्ठिका बनी, उसी मह
का अवतार आज मरूभूमि के पावन अंचल में दृष्टिगोच
से मरु-सिन्धु अपनी प्रशान्त भाव लहरियों को तट-विटप
तक प्रेषित करने को कटिबद्ध हो ही गया। इसे आप कोई
कहें।

जो कुछ मैंने यह यशोगान किया है, प्रत्यक्षानुभ
बंधा-बंधाया रूप है। सुश्री इन्दुबाई महाराज का

विभूति की दमकती मुक्तावली में संवत् १९६४ वि० शुभ आषाढ़ शुक्ला नवमी शुक्रवार को हुआ। वास्तव में शक्तियों का लोक-रंजनकारी स्वरूप विषमताओं में ही प्रकट होता है जो परा-शक्ति की प्रेरणा से झौंपड़ियों से प्रासादों में, कारागारों से दुष्ट-स्खलित राज्य-मन्दिरों में एवं राज्य-प्रासादों से स्वर्गतुल्य वनोद्यानों में परिणत होकर, लोकहित का बाना पहनता है। इस किंकर को उसी आद्याशक्ति के चरण-कमलों में आज निकटतम चतुर्थांश शताब्दी का अवसर बिताने का मौका मिला है जोधपुर मण्डलान्तर्गत बेसरोली स्टेशन से दो मील दूर इसी आद्या-शक्ति ने मरू-वसुन्धरा को निज अवतारणा से पावन एवं पूत किया है। भौतिक स्वरूप में आत्मश्लाघा करने में हिचकिचाहट अवश्य होती है किन्तु मानस-प्रकृति की उच्छृंखल भावना पुनः बाध्य करती है कि कवि को श्री बाईजी महाराज की नर-देह का मातुल-पद भौतिक देह-स्वरूप भी प्राप्त हुआ है।

काव्य में वर्णित जो कुछ शुद्धाशुद्ध व्यञ्जनस्वरोयुक्तपदावली काव्य-मर्मज्ञों को मिले वह सब बाईजी महाराज की वाक्-वरदान-विभूति की-ही एक अणु-सम्मत कनी है। यदि इस कनी में दमक है तो यह उन्हीं चरण-कमलों का प्रसाद है, और यदि धुन्धलाहट है तो इस किंकर के दंभ-तिमिरावृत हृदय की धृष्टता है।

मैं कवि नहीं हूँ ! शब्द ज्ञान मुझे नहीं, रस प्रक्रिया का बोध नहीं, काव्यगत गुण दोष, अलंकार, छंदशक्ति प्रभृति का तनिक भी बोध नहीं, तथापि शब्दबद्ध अन्त्यानुप्रासयुक्त शैली का जो स्वरूप इस तुच्छ ने ग्रहण किया, इसे उसी पराम्बा का वचन-वरदान समझिये। यह गुणगान, यथासमय, कल्पना संगत भावनाओं की अभिव्यक्ति है जिसे आराध्य की महानता ही कहिये। इस किंकर के पास क्या रखा है ?

जो कुछ आपका था सो तो आपही को समर्पित कर दिया; क्योंकि वाणी, शब्द, स्वर, स्वांस, लय और गति में भी उसी महाशक्ति का रूप मुखरित है और वही अखिल विश्व व्याप्त है। अतः इसमें मेरा तो कुछ भी नहीं है, जो कुछ था वही उसी पराशक्ति का है और उसीको भेंट है। यदि स्वीकृति प्रदान है तो मुझे हर्ष नहीं और अस्वीकृति है तो क्षोभ नहीं। कारण स्पष्ट है।

अन्ततः मैं इस पुस्तक के प्रकाशन में नर-देह स्वरूप सु श्री बाईजी महाराज श्री इन्द्रकुंवरीजी का कृपादृष्टि-पात्र हूँ। साथ ही साथ मम सुहृद श्री जुगलकिशोर मिश्र एम. ए. एलएल. बी. राजमिश्र ठि० जोबनेर व श्री रामनाथदानजी हाथीपुरा का अत्यन्त अभारी हूँ जिन्होंने इस पुस्तक के भावस्थलों एवं पंक्तियों की यथास्थान परिणति एवं संशोधन कर इस पुस्तिका को आपके

कर-कमलों तक पहुंचाया है।

कुछेक कारणों से पुस्तक को छपवाने में अत्यन्त जल्दी की गई है, अतः अशुद्धियों का रह जाना परम संभव है। आशा है वाचक वृन्द इन अशुद्धियों के लिये सूचना सम्पादक श्री जुगल-किशोरजी मिश्र एम. ए. एलएल. बी. मलिकपुरा पो० पचार (जयपुर) को यथा समय प्रेषित करें ताकि पुनः संशोधन में उन्हें हटा दिया जाय। किं बहुना।

विनीतः—

हिंगलाजदान जागावत

संपादक—

जुगलकिशोर मिश्र एम० ए०, एल० एल० बी०

☆
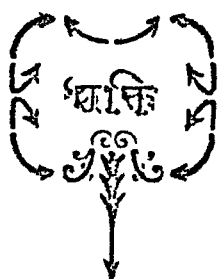
काव्य' में एक नवीन धारागमन आज परिलक्षित होते देख कर स्वतः उपनिषदों की अवतारवादी धारणा की ओर ध्यान जाता है। माया और ब्रह्म, प्रकृति और पुरुष प्रभृति द्वन्द्वात्मक विश्व की आदिसृजन भावना के आधार रहे हैं। माया स्वरूप इसी अपरा-शक्ति की निरंतर सृजन-नृत्य की नूपुर झंकार में ही इस महान् दृष्टिगत संसार का नर्तन व अस्तित्व समाहित है, वही नृत्य परोक्ष सत्ता में अमरापुर की अमराइयों में अमर-वैभव का प्राण है और वही नृत्य नर-देह-तन्त्री का राग-पूर्ण-तार एवं देव-विलास का कौतुकमय परिहास है। दूसरी ओर उसी पराशक्ति का एक विषम भ्रूभंग देव-सृष्टि का लय और मानव-सृष्टि का विहाग बन जाता है। अतः प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से उसी पराऽपरा शक्ति का ही कनिष्टिकांगुली नृतन ही देव, गंधर्व, यक्ष, किन्नर, पन्नग, एवं मानव-प्रभृति सृष्टियों का राग एवं विहाग, सृजन

एवं संहार आदि बन जाता है। वही परा शक्ति युग युग
अपना नया स्वरूप लेकर द्विरूपा बन-कर अवतरित होती है
एक ओर मनुष्य देह धारण करने से मानव-स्वभाव ए
तत्सम्बन्धित मानव-गुण, मानव-विफलता, मानव-राग एवं ज
भौतिक विफलता एवं वैभव, रोग व राजस रंजाटादि का यो
रहता है—यह तो उनका दृष्टिगत लोकमयी स्वरूप है, इस
ऊपर एक दूसरा अदृश्य स्वरूप और होता है जिसका आभा
मात्र हम मानवी-जगत के प्राणी पा सकते हैं—किन्तु इसक
पूर्ण स्पष्ट स्वरूप प्राप्त करने के लिए मानव को एक ही नहं
अनेकों जन्म धारण करने पड़े तो भी नहीं पा सकते।

वही पराम्बा शक्ति हिंगलाज आवडजी करणीजी एव
रांजबाई महाराज की कला-शृंखला में इस युग में खुड
ग्राम (जोधपुर मण्डलान्तर्गत) अवतरित हुई। जो दृष्टिगत
एक प्रत्यक्ष-स्वरूप में देह नाम पर सु श्री इन्द्रकुंवरि महाराज
नाम से सुशोभित है और अलौकित कृतियों की पर्यवेक्षणा एवं
प्रत्यक्ष चमत्कारों से उसी अमरापुर-सृजनी पराम्बा के अवतार
हैं जिनका स्वरूप निर्धारण दुष्कर है। मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक
एवं कवि भावुक हृदय आज एक तट होकर इसका परिचय पाना
चाह रहे हैं, किन्तु आभास सभी को होता है, सत्य पर अभी
कोई नहीं पहुंचा। दैवी-शक्तियों की कला का पार पाना सहज
नहीं है। उसी-सत्य की खोज में मम सुहृदवर कविवर

श्री हिंगलाजदानजी जागावत जो जयपुर मण्डलान्तर्गत चारणवास ग्राम-निवासी हैं, ने अपनी प्रत्यक्षानुभूति से यह कला प्रकाशक काव्य समदय रखा है।

यह काव्य, भक्त हृदय की आवाज है अतः काव्यकोटि में इसका स्थान दूसरा होगा। कारण स्पष्ट है कि श्री हिंगलाजदानजी जागावत गौत्रीय उस कवि-परम्परा के प्रसून हैं, जिन्होंने आदि युग में हिन्दू हिन्दुत्व एवं हिन्दवानी को उद्बोधन करवाया था। कविवर का जन्म सम्वत् १६५४ वि० की कार्त्तिकीय गोपाष्टमी को चारणवास नामक एक छोटे ग्राम में हुआ। आपकी वंश पावनता की प्राचीनता की क्या कहें, प्रत्यक्ष की प्रभुता यही पा सकते हैं कि प्रस्तुत काव्य के वर्ण्य भौतिक नर देह स्वरूप जो कि उस पराम्बा आद्याशक्ति के अवतार श्री इन्दुकुंवरि बाईजी महाराज हैं, कविवर की पूज्य भगिनी सु श्री धापूबाईजी की कुक्ष से अवतार हुआ। कविवर की काव्य में एक पंक्ति—

"जाय जनम लेवो जकां, देवल री वह देह।"

अक्षरशः सत्य है। श्री करणीजी महाराज ने देवल मां के कुक्ष से मनुष्य तन धारण किया था, तो श्री इन्दु कुंवरि महाराज ने धापू मां के कुक्ष से।

कविवर का प्रारंभिक जीवन गृहस्थ-जीवन की विषमता से आवद्ध रहा। भौतिकता का परदा कवि सुषुमा को दबाये बैठा

था। किन्तु एक दिवस 'मनुपोत के मच्छ चपेट'—के समान कवि की प्रौढावस्था में बाईजी महाराज के वचन-मच्छ का कवि-पोत को चपेटा मिल ही गया और वह पोत कविता-हिमश्रृंग पर पहुँच कर भाव-भूमि को ढूँढने लगा। बस यहीं से कविवर का कवि-जीवन अथ को प्राप्त कर पाया। स्कूलीय शिक्षाविहीन यह कवि स्वतः मुखुरित हो उठा। जिसे पिंगल शास्त्र का बोध नहीं, ह्रस्व दीर्घ का परिज्ञान नहीं था, सहसा कवि पद प्राप्त कर बैठा, और वचन-वरद-सुधापान में विह्वल हो बैठा। भाव भूमि मिल गई और प्रतिभा जग उठी। अनायास कविता पर कविता का तारतम्य जुड गया। वह बाईजी महाराज का एक दिवस का वरदान वाक्य था, जिसके फल-स्वरूप प्रथम निम्न चिरजा का कवि ने सृजन किया।

पातां करन प्रतिपाल इन्दरबाई अवनि पै आयाजी।
सकल पधारया सुरग सूं करत कमठ पग कोच॥
तखत खुडदगढ तपि रह्या बस्त कसू रे बीच।
आता दीस्या अम्बिका सातादीप समेत॥
पातां न करबा प्रगट दाता दत्त वित्त देत।
जापूं जाप सुजोगणी बापू चड ज्यों विहड॥
आपूं आप ही ऊपन्यां बापू बाई रै दिहड।
बन ठन बैठ्या बाघ पै तन मन सैं हुयि त्यार॥
अन्न धन्न देबा आविया अनगन हंस—आहार।
दिल दराज करज्यो दया हिंगलाज पै आज॥

इन्द्रराज करज्यो अवश्य कुभराज ज्यो काज ॥
(संवत १६७५)

कविवर का व्यक्तिगत अनुभव बाईजी महाराज के चरणाम्बुज के भक्ति मकरन्द पान की अनवरत विद्यमानता का ही फल है। जो कुछ कवि ने इन्द्र-कला प्रकाश में कहा है वह स्वानुभूति का ही फल है और करणी-कला प्रकाश में पूर्व-कालिक करणी चरित्र व मेहाई महिमा स्थित वर्णन का नव-कल्पना व नव-पद्धति में वर्णन है जहां व्यक्तित्व और भावना की छाप है।

कवि का व्यक्तित्वः—

कविवर हिंगलाजदानजी साधारण प्रकृति के मानव एवं असाधरण प्रकृति के भावुक हैं। लम्बा कद, गम्भीर मुद्रा और दार्शनिक नेत्र आपके प्राकृतिक गुण हैं, साथ ही साथ प्राचीन पद्धति का साफा व लिवास है। कविता में—कवि का हृदय गत व्यक्तित्व जो ओज एव माधुर्य से भरा पड़ा है, ज्यों का त्यों प्रकट होता रहता है। आधुनिक युग की विषमताओं में कवि का ओज प्रकट हो उठता है, और अपने आराध्य को 'जूनो विरद सभाल' कह कर भर्त्सना भी दे डालता है। माधुर्य भाव कवि के वात्सल्य को लेकर चलता है जहां आराध्य की महानता के सामने कवि नत मस्तक होकर अपनी तुच्छता प्रकट करता है, जहां 'माऊ' शब्द कितना सुन्दर बन पडा है। अतः यहाँ कवि का कोमल, सुशील, संयत एवं उदार व्यक्तित्व झलक पडता है।

भक्ति का स्वरूप:—

अब जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि कवि ने भक्ति के किस स्वरूप को अपनाया ? उपनिषदों की अवतार भावना को कविने दत्तात्रय की माया व मारकण्डेय की—"क्रीं श्रीं ह्रीं" में अपनाया है जहां इन्द्र कुंवरिजी का अवतार दुष्ट-संहारणार्थ हिंगलाज के आदेश से हुआ है। अतः कवि अपने आराध्य को हिंगलाज के आदेश से आवडजी का अवतार मान कर नरदेह में एक पावन गुण-प्रभूत व्यक्तित्वमय देह माना है और दूसरी ओर महाशक्ति। यह शक्तित्व तांत्रिकों का विकृत स्वरूप नहीं, योगियों का माया निशाची रूप नहीं है, अपितु यह लोकरंजनकारी अरण्य कांडान्तर्गतस्थित जगज्जननी सीता का रूप है जो अपरणांस्थामुक्त है। अतः कवि अवतारवाद की उस श्रेणी की भक्ति भावना को लेता है जो पुष्टि मार्गीय रागानुगा से मिलती हुई है। दिनचर्या का अनवरत अवलोकन करनेवाला कवि यह भूल कैसे करता। परास्त्वा की अपराशक्ति पर विश्वास है; किन्तु लोकरंजनकारी स्वरूप में ही कवि का पूर्ण विश्वास है। इन्द्र कुंवरि का अवतार कवि ने प्रत्यक्ष परवाडों एवं कल्पना में रुग्न-त्राण, दुष्ट-दलन एवं आदेश पालिका में ही माना है —

भावस्थली के लिए :—

कवि की प्रस्तुत कृति पर दृष्टिपात करने से विदित होता है कि भाव जगत में कवि का हृदय आराध्य की महानता एवं

महानता सम्बन्धित घटनाओं में अधिक रमा है। प्रज्ञात्मक गुण से बौद्धिक प्रतिबन्ध का संचरण कृति को अनूठा स्वरूप दे गया। अतः कवि को प्रेरणा प्राप्ति पूर्वकालिक परवाड़ों की अभिव्यक्ति से मिली है। अतः कवि करणी प्रकाश खण्ड में 'करणी चरित्र' व 'मेहाई महिमा' से प्रभावित रहा है।

'अलख रूप वह आतमजी'—में अलख शब्द से विदित है कि कवि योगमार्गियों से अवश्य प्रभावित हैं पर साकारोपासना में अटल विश्वासी का हृदय दृश्यमान जगत में ही अधिक रमा है, अतः घटनाओं का विशेष आगमन है। काल का ध्यान रख कर घटनाओं को कवि !ने अपनाया है। समस्त काव्य पर विहंगम दृष्टि डालने से शांतरस का द्योतन है जो वात्सल्य रस में ओतप्रोत है। शृङ्गार रस का कहीं वर्णन नहीं, यह कवि के व्यक्तित्व का फल है। ओज युद्ध में वीर, माधुर्य वर्णन प्रकृति व उद्यानादि में कवि हृदय रम गया है। मन्दिर वर्णन, कूप, तडाग, फुलवाडी सभा आदि में कवि ने सूक्ष्म पर्य्यवेक्षण से काम लिया है।

' करणी-जयन्ती समारोह ' कवि की कल्पना प्रसूत सच्ची घटना है। ऐसी कल्पना शक्ति-काव्य में आज तक किसी ने नहीं की है। 'बलिदान-विनोद' में कवि ने किस प्रकार जनश्रुत-गाथा को मौलिक रूप देकर समक्ष रखा है जिसका अवसान भक्ति-प्रदान में है। समस्त चरजा खण्ड अनूठी कल्पनाओं से ओतप्रोत

है। 'मत्ता-सुख' शब्द की आवृत्ति मोतीदाम छन्द में विदित कराती है कि कवि बौद्ध-दर्शन के सम्यक-स्वरूप को जानता है जो शक्ति-काव्य में ग्रहणयोग्य है। नीति शास्त्र के वैध्य वैधानिक स्वरूप का अवलोकन हमें 'कान्हसिंह के चरवार्तालाप' में मिलता है तथा 'सभा-विधान' एव 'उत्सव-समारोहण' का असली स्वरूप 'करणी-जयन्ती' समारोह में। इस प्रकार कवि का ज्ञान-भण्डार वहुत व्यापक है। औषधी स्वरूप विभूति के समन्द्य परवाडों की करामात के सामने आयुर्वेद व अम्बादेश प्रस्थान पर ज्योतिप न्योछावर है। 'मॅढ' मन्दिर 'सैन्य' एवं शोभा वर्णन में कवि शक्ति-काव्य का प्रथम गुरु है। इस प्रकार शक्तिशील और सौन्दर्य को कवि ने लोकहित में समाहित कर समष्टि-स्वरूप में वाईजी महाराज में एकीभूत किया है जो अत्तरशः प्रत्यत्त एवं परोत्त दोनों रूपों में सत्य है। चित्रण कला में कवि अद्वितीय है। मुद्रा विशेप में 'उनमनी' मुद्रा की कल्पना कवि ने नये स्वरूप में रखी है जो पहले नहीं पाई जाती। करणी प्रकाश-खण्ड स्थित शक्तिशील का भाव परिपाटी संयुक्त एव 'रत्तणाय चलोकानाम्' व ह्रीं स्वरूपा बन कर 'ह्रीं काराम्बर अंग नर्तनकरी ओंकार लक्ष्यां परां" है जो अद्वितीय परवाडों से पुष्ट है और क्रीं वीज की अपेत्ता ह्रीं एवं ऐं की ओर ही विशेष झुकाव है।

आचार्य मम्मट की काव्य प्रेरणाओं—

काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरत्ततये।

मद्य परनिर्वृतये कान्ता स.म्मततयोपदेश युजे ॥

मे से कवि को 'सद्यः पर निर्वृतये' से ही प्रेरित पाते हैं। परमानन्द की तुरन्त प्राप्ति ही काव्य रचना का उद्देश्य होता है अतः कवि परमानन्द को "परम कृपा प्राप्ति" में समाहित करते हैं और "लरज कहै हिंगलाज" में लरज शब्द कवि की भक्ति साधना को स्पष्ट कर देता है। इसमें अभिलाषा आशा, निर्वेद दैन्य एवं भर्त्सना आदि सभी भाव व्याप्त हैं।

भक्ति काव्य की वाटिका में कृत्रिमता स्वरूप कला का ढूँढना ठीक नहीं, किन्तु फिर भी ध्यान दें तो विदित होगा कि कवि काव्य-गत दोषों को जानता है. कहीं भी च्युत सस्कृति, न्यून पदत्व प्रभृति दोष नहीं होने पाये हैं। काव्यगत गुणों में, जैसा कि पहले कहा जा चुका है, ओज और माधुर्य को ही कवि ने अपनाया है। अलंकारों के भेद से अनभिज्ञ होने से कवि ने अलंकार काव्य रीतिग्रन्थ लिखना नहीं चाहा था अतः रूपक एवं उपमा अलंकार विशेष बन पाये हैं। काव्य के उपकरण—उपमा में दिव्य हैं। सुधा, अमर, अमराई, सुर, इन्दु, सूर, उडगण प्रभृति ही अलौकिक उपमेय के उपमान हैं। मालोपमा में विच्छृंखलता नहीं।

अभिधा के सहारे समस्त काव्य चलता है, कारण कि कवि प्रथम भक्त है, तत्पश्चात् कवि। किन्तु लाक्षणिक प्रयोगों की कमी नहीं। गूढ़ातिगूढ़ सिद्धान्त प्रतिपादन में 'अलख रूप'

गाया शक्ति की विवेचना में, कान्ह की कुटिलता पर लाक्षणिक प्रयोग है।

भाषाः —

कवि की भाषा राजस्थानी पूर्वी है। डिंगल कहलाये जाने वाली पद्धति के अनुसार शब्दों में द्वित्व एवं विकृति अवश्यंभावी है। बृज शब्दों का भी आगमन है—ठौर, कोऊ, तिहुं। ग्रामीण राजस्थानी का प्रयोग भी निःसंकोच है— विराजना' ब्राजत रूप गेयता के लिए नजदीक का नजीक (फारसी से) ग्राम्य प्रयोग रूप है। पैंड, सोव्रण, कदे, धिराणी, विटक, जचाय, खिनाय, जारूं, इत्यादि पूर्वी राजस्थानी के ग्रामीण शब्द हैं जो काव्य में कवि कर-कमलों से स्थानापन्न होकर, भाषा के शब्द-भण्डार-वृद्धि के साधक हैं। यह कवि कार्य स्तुत्य है। फारसी शब्दों का प्रयोग भी कवि ने किया है। ज़रा, तमाम, इन्तजाम, हुकुम, अदूल, गरीवनिवाज इत्यादि फारसी—के शब्द भी राजस्थानी ने हज्म कर लिये। यह कवि का औदार्य-भाव है।

भाषा विज्ञान के नियमानुसार कवि ने प्राकृत शब्दों को ठीक उसी प्रकार निभाया जो कि भाषा वैज्ञानिकों के लिए अपनी अन्वेषणा में बहुत सहायक हो सकते हैं। कम्म, धम्म, भुवंग, औगुण, सुछि किस प्रकार सही नियम से बने हैं—इस प्रकार के ग्रंथ उच्चश्रेणियों के विद्यार्थियों के लिए पाठ्य-पुस्तक बनने योग्य

प्रद हो सकते हैं।

छन्द ज्ञान कवि को बहुत है। छप्पय, सोरठा, दोहा, भुजंगप्रयात, कवित्त (मनहरण), मोतीदाम, त्रोटक, चौपाई एवं सवैया-यथास्थान प्रसंगानुकूल हैं। युद्ध वर्णन और ओज संयुक्त वार्तालाप में त्रोटक एवं मोतीदाम का प्रयोग कितना समीचीन है।

विस्तार भय से हम संक्षेप में इतना ही कह सकते हैं कि कवि ने कई मौलिक कल्पनायें की हैं जैसे "बाईजी महाराज का आपाढ शुक्ला ६ शुक्रवार १६६४ वि० में अवतार लेना और इसके ठीक ६ पहले आश्विन शुक्ला १, १६६३ वि० को हिंगलाज देवी के स्थान पर एकत्रित होकर, आवडजी को धापू कुल से अवतार लेने का आदेश" ऐसी कल्पनायें शक्ति-काव्य में कहीं भी नहीं है। करणी-जयन्ती समारोह पर भैरव को पहले बुलाकर समस्त देवियों का पदार्पण व वार्तालाप, परम्परा पालन हित के लिए है जो अलौकिक कार्य का अलौकिक वर्णन है।

इस प्रकार यह काव्य समस्त दृष्टि से सुन्दर और नित्य पाठ्यत है। शक्ति-स्तोत्र प्रणाली में देवियों के नाम माला जप से कम नहीं।

गीति काव्य की दृष्टि से अन्तर्वृत्ति-निरूपण में कवि ने बाह्य जगत का ध्यान रखा है और कोमल पदावलि के साथ

सुगेयता के लिये बीच २ में 'से' र, 'थे' 'ज' इत्यादि शब्द रखे हैं जो आधुनिक कवि पन्त की प्रणाली से मेल खाते हैं।

अन्तमें इतना ही कह देना ठीक है कि यह ग्रन्थ किसी और ही रूप में आपके समक्ष आता किन्तु कुछ कारणों से इसे छपवाने में शीघ्रता की गई है अतः विशेष ध्यान न दिये जाने से त्रुटियां रह गई हैं इसके लिए कविवर उत्तरदायी न हो कर मैं हूँ। कारणकि यह भार मुझ ही पर डाला गया था और यह सम्पादन कार्य अत्यन्त शीघ्रता से किया गया है। मैंने तो इन यत्र तत्र बिखरे हुये मोतियों को कुछ बटोर कर टूटे से धागे मे पिरो दिया है—धागा अवश्य कमजोर है। इसमें कवि का दोष नहीं, यह तो मेरी अपनी ही गलती है कि आस्था की प्रेरणा ने मुझे भटकाया और बिखरी हुई मुक्ता-राशि को त्वरित हृदय से उठा लिया और किसी भी प्रकार आप सहृदयों के कर-कमलों तक पहुँचाने को उत्कण्ठित हो गया। यह हृदय की वस्तु व हृदय का भाव है जहां सादृश्य-भावना वाले हंस तो भक्ति भावना से देखेंगे और गुण ग्रहण करने के प्रयत्न में लग कर कविकृति को स्तुत्य व मेरे परिश्रम को सार्थक बनाने की सोचेंगे और नास्तिक भावना वाले जले भुने कीड़े इसके पृष्ठों में सच्चे झूठे छेद करने के प्रयत्न में लगेंगे; उनकी आप लोगों को कोई परवाह करनी नहीं है, क्योंकि यह भी उसी जगज्जननी की ही प्रेरणा है जो श्रद्धा, तुष्टि, छाया, बुद्धि एवं लज्जा तथा पुष्टि प्रभृति में संस्थित है, वही अन्त में जाकर "या देवी सर्व भूतेषु-भ्रांति रूपेण संस्थिता"

हुई है। अतः छिद्रान्वेषण भी भ्रांति के कारण ही होता है और भ्रांति को आप समझते ही हैं कि 'सूर्य' में चन्द्रमा की भ्रांति अवश्य हो जाती है किन्तु वास्तव में वह है क्या ? 'सूर्य या चांद', बस यही फैसला है।

आशा है वाचक वृन्द त्रुटियों के लिए मुझे लिखेंगे जो अवश्य अग्रिम संस्करण में ठीक करा दी जावेंगी।

अन्ततः मैं परम श्रद्धेय श्री महंत भूरारामदासजी के सुपुत्र श्री सीतारामजी, खवासजी का मन्दिर, जयपुर का अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने इस पुस्तक के छपवाने में मुझे बड़ी मदद दी है।

नवरात्रि,
२०१० विक्रमाब्द
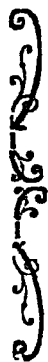
विनीतः—
जुगलकिशोर मिश्र
एम० ए०, एल-एल० बी०
राजमिश्र० ठि० जोबनेर व मलिकपुरा
प्रधान-सम्पादक
रामनाथदान बारहठ हाथीपुरा
उप-सम्पादक

इस पुस्तक के संपादक—

श्री जुगलकिशोर मिश्र एम. ए. एल-एल. बी

राजमिश्र ठि० जोबनेर

मलिकपुरा (जयपुर)

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ संख्या	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४	११	चखार्यण	चरवावण
४	१३	दृखी	दृखि
६	१७	असनाई	अरुणाई
१०	२	महा	मह
११	३	प्रणाम्वे	प्रणाम्वे
११	१५	बाजे हु	भ्राजे हु
१२	४	दिती	अदिति
१४	८	शाह	साहु
१४	१४	हरि	हरी
१६	१	कीत	क्रीत
१६	१४	तिण (प्रथम)	जिण
१७	१	पोड़ि	जोड़ि
२०	११	बदाल	भ्रदाल
२२	२०	करीब	करीष
२३	४	नष्टर	नष्ट
२४	५	जे	जु
२५	१३	चढ्यां	चढ्यो

पृष्ठ संख्या	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२७	१५	आयास	आय
२७	१५	राणीवा	रणिवास
२७	२०	किर	फिर
२८	६	मगाया	मंगाया
३५	६	भुवनेश्वर	भुवनेश्वरी
३५	१५	यह	यहै
३६	३	पती	पति
३६	२	वाकी	बाकी
४१	४	ह	है
४६	छन्द ७ वां	श्यामा	श्याम
४६	„ ८	भञ्जराम	भवराय
५७	६ पंक्ति	मेटो	मेट
६०	छन्द ६	हणज्यो	हणसी
६२	मोतीदाम १	शक्ति, उक्ति	शकत्ति, उकत्ति
६३	पंक्ति ७	गलूं	लूंग
६५	७	ज्याति	ज्योति
६६	६	चाएड	चण्ड
६७	१३	भृता	भृत
६८	१६	हैलैं	हलैं
६८	२०	पंगुलतैं	पंगुचलैं
७०	१३	माना	मानों

पृष्ठ संख्या	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७०	१७	हगां	हगां
७२	३	पेट	जद्
७२	५	तूं कला	कला तों
७३	१	दोनू	दोनों
७३	१५	शुल्क	शुक्र
८८	१७	भोय	मोय
८६	चरजा ६	सणिक	माणिक
६१	पंक्ति ५	अनोप	अनूप
६२	५	अमाता	अै माता
६२	१७	सहकोय	सब कोय
६३	६	पेल	पेर
६३	७	सर	सेर
६३	८	अलगा	अलग्ग
६४	१५	आख	आंख
६५	८	शीश	शिर
६६	१	मभ	मय
१०६	७	सको	जकां
१०७	१५	दिव	दीह
१०८	२१	का रूप है। 'करत्या इन्द्रेश घणां सिद्ध काम'	
११५	६	उजाड़न	उजालन

पृष्ठ संख्या	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११६	१०	दधसुत	दधिसुत
११७	५	अवल	अव्वल
११६	४	माह	मात
११६	१०	किन्दर	कन्दर
१२०	६	भूर	भूप
१२१	४	वड़	व्रह्म
१२५	१६	भांसकर	भासंकर
१२६	६	हैं न (द्वितीय)	है न
१३२	८	दुखन्त	दुहन्त
१३७	६	झांझ	झाझ (जहाज)
१४०	१४	हीति	रीति
१४०	१६	अज्ञमाना	अज्ञमना
आ	१	आर	और
च	१०	अपरणांस्थामुक्त	अपरणांस्था-युक्त
छ	१३	जोवनेर व मलिकपुरा	जोवनेर मु॰ मलिकपुरा

★

सरस्वती-वन्दना

॥ दोहा ॥

मुक्ता-माल अमोल गल, कर वीणा झणकार।
हँस सुवाहण सोहणों, धिनो सुबुदि दातार ॥
सुर सह थारा सरस्वति, करैं विमल वाखाण।
तूँ हिय तिमिर नसावणी, उक्ति अधिक उपजाण ॥

चरजा

सरस्वति नमो शक्ति तोकों, महर कर सुबुद्धि देहु मोकों।
थारा देव त्रिहुं गुण थावै, तूं हियै उक्ति बहुत उपावै।
स्वच्छ अपार रावरो साम्प्रत, है यश तिहुँ लोकों ॥
सरस्वति नमो शक्ति तोको ॥१॥

अमर-इन्द्र थारा गुण आखै, दुहुं कर-जोड ऋषिगण दाखै।
रूठ्यां अधिक करै तूं राजी, नामी ग्रह नो को ॥
सरस्वति नमो शक्ति तोकों ॥२॥

नारदादि पांवा शिर नामैं, दाता सुबुद्धि देव बड़ धामैं।
तैं हिय राज्यां जीत सके जन सो पण्डित सौको ॥
सरस्वति नमो शक्ति तोकों ॥३॥

दुहु कर जोड़ धणी हूं ध्याऊँ, पूरण कृपा राजरी पाऊँ।
व्यञ्जन स्वच्छ बणाय बहुविधि, दिन रजनी धोकों।
सरस्वति नमो शक्ति तोकों ॥४॥

सुमति हंस-वाहन-सरसी ज्यौं, मात कदापि देर मत कीज्यौ।
गुणि "हिंगलाज दान" गुण गावै, ईश्वरी इण दो को
सरस्वति नमो शक्ति तोको, महर कर सुबुद्धि देहुमोको ॥५॥

॥ कवित्त ॥

आंगन है अवनि जा अम्बर सुछात ओपै,
जाम आठ रोशनी-सु-चन्द रवि जेह की
नामी हैं नक्षत्र सो तो शोभा है सुभौन वांकी,
छाई छवि ओर-चहुँ तारन अछेह की
कारज करत देव तिहुं वा कृपा की जेम,
हारे अहि गाय गान, पावन सु-खेह की
कहै हिंगलाज कवि कल्पित वखाणै कीत,
प्रभुता न पावै कोऊ ईश्वरी सुगेह की

॥ दोहा ॥

भुवनेश्वरी प्रभुता प्रवल, आकृति अधिक अनूप।
जव-तिल जतो न जे लखै, शारद शेप स्वरूप ॥१
तन-मन-हूं तिण ऊपरैं, वारों वार अनेक।
जेहु उपमा खूंवै जसी, उपजै हिय न एक ॥२

करणी-मंगल

॥ छप्पय ॥

आदि शकति अवतार, वेद हिंगलाज वखाणी।
धरि मानुष री देह, कुँवरी मामड़ कहलाणी॥
आवड़ प्रकट्या आय, स्वापनगरी सुर राया।
सह सुकन्यां रे शीश, सको सूरज दरशाया॥
देशाणराय करि कै दया, दान घणों बुद्धि दीजिये।
कवि हिंगोल वन्दै कदम, काज महा सिद्ध कीजिये॥ १॥

अम्बा आदि अनादि, बात बहु ठीक विचारी।
करन कन्यां सिद्ध काज, देश बीकाण पधारी।
मारण कान्ह महीप, देण रिड़मल रजधानी॥
मूरति घणी मनोज्ञ, हेतवां विपत हटानी॥
करनी लय असुरां करन, बाहू राज्य प्रलम्बिका।
करत विनय हिंगलाज कवि, जय जय जय जगदम्बिका॥२॥

जय करणी जगदम्ब, दया कर लाल धजाली।
जय करणी जगदम्ब, रेणवां वंश रुखाली॥
जय करणी जगदम्ब, दुष्ट वृन्दा दुख देणी।
जय करणी जगदम्ब, तूही तीर्थादि त्रिवेणी॥
बीकाण राज्य राजै प्रबल, हरषि-कन्यां-कुल दुख हरण।
कमलासन हरि-हर कहत, शकति यह अशरण-शरण॥३॥

॥ चौपाई ॥

जय आवड़ हिंगलाज बिजाई ।
प्रकटेहु आप स्वाप पुर आई ॥
मेहो तातऽरु देवल माता
तिण री दीह भये जग त्राता ॥
कुल किनिया उज्ज्वल तप कीधो ।
लोवड़वाल जन्म जहँ लीधो ॥
गिरि राया तव रूप घनेरे ।
करनल नाम कलेवर केरे ॥
आसांत हिव नासति उपजाई ।
वरषा बिन गायां अकुलाई ॥
चर चायण सुरभी निज चाली ।
हरषि श्रीमात बीकाणै हाली ॥
तृण-बन देखी पेखि सुखतम्बा ।
डट गये आय जहां जगदम्बा ॥
गाय बच्छ आवत उमगाई ।
पीवत नीर महासुख पाई ॥

॥ दोहा ॥

दूत- कान्ह के आय द्वै, बरजन लगे विशेष ।
वेगि निकासहु बीड़ तैं, मऊ तिहारे मवेश ॥१॥

मृग धुर्तक सुन बात हमारी ।
मुख निज देखहु नीर मझारी ॥
प्यास लगी दौड़े क्षित पानी ।
जम्बुक से आनन भट जानी ॥
छल कर निज मुख वस्त्र छिपाये ।
आरत करत कान्ह पैं आये ॥
दुहु कर जोडि, मोड़ मुख भाखी ।
मिल रह्यो बीड़ कछू नहिं बाकी ॥
" अर्जुन भीम जरा यहां आवो ।
भेद तमाम हमें बतलावो" ॥
चर दुहु आय विनय अस चारी ।
झेलत घास तिकां बल भारी ॥
तहां हम जाय गाय सहताड़ी ।
अम्ब कह्यो मोहे बहुत अनाड़ी ॥
सो समचार कहूँ किमि सारा ।
मुख जम्बुक जिमि भये हैं हमारा ॥

॥ दोहा ॥

तम्बा तव करनी तणी, ताड़न भये हु तैयार ।
कान्ह भ्रमायो कालको, उपजै कुमति अपार ॥२॥

भूप कान्ह दरबार बनाये ।
सबको निजमुख हुकुम सुनाये ॥
जलदी चालहु सुभट्ट हुजूरी ।
देखहु वेग अबै नहिं दूरी ॥
सुयश दूत अप-जोग सुनावै ।
बाघ चढ़ी दुर्गा बतलावै ॥
जिनकी बात सत्य नहिं जानूं ।
मन निज मैं बीरोटण मानूं ॥
सज नृप चलेहु गयन्द सवारी ।
नागर संग भये नर नारी ॥
बीड़ नजीक जाय कहि बानी ।
" मेरी काण रती नहिं मानी ,,
अब निज ऊठ ऽसबाब उठालै ॥
गायां वृन्द जरूर भगालै" ।।
चारण कौम लोभ भइ चण्डी ।
दिन वह गये कहत रजदण्डी ॥

॥ दोहा ॥

जोग नींद तजि जग-जननि, दृग असनाई धार ।
करनी कह्यो जु कान्ह सो, "बोलहु वचन विचार" ॥३॥

शीघ्र उठी अरि वृन्द नशाणी।
करि चित क्रोध कहत किनियाणी ॥

"नृप गायां अरु दीन निवाजै।
छत्री-धर्म येहु जग छाजै ॥

तूं नृप कान्ह महान हत्यारो।
पापऽरु पतन्यां गनिका प्यारो ॥

भूप गाय मो हाय भगादै।
अनुचर भेज करण्ड उठादै ॥"

दास खास सुनि आयुस ध्याये।
जाय जाय बड़वीर लजाये ॥

तब कुंजर जोये मतवारा।
करत महा म्हावत ललकारा ॥

धरि चित क्रोध कान्ह फिर धायो।
अहि रावण रावण ज्यों आयो ॥

मानहु करण्ड धनुष महादेवा।
वस होय काल लख्यो नहीं भेवा ॥

॥ दोहा ॥

कान्ह नृपति ऐसे कही, "जादू लखत जरूर।"
क्रिरण्ड मेर सम कर दियो, वीरोटण भरपूर ॥४

करे मत हाल त्रिरोटण केरा ।
तूं मत रच छल अब बहुतेरा ॥
मूर्ख कान्ह की मति भरमाई ।
शक्ति है तो बता सकलाई ॥
कबसी मैं नरदेह छटकास्यूं ।
जन्दी कहहु, अमरपुर जास्यूं ॥
भ्रम मत राख, भाख सत वाणी ।
देवहु भख अंग मो रुद्राणी ॥
करनी निज कर कार कढ़ाई ।
अश्व कुदाय इधर को आई ॥
लोपण कार तुरी ललकार्यो ॥
शक्ति सिंह ह्वै कान्ह संहार्यो ॥
लख-नव आय भक्ख ले लीधो ।
करनल शीघ्र प्रवाड़ो कीधो ॥
कान्ह संहार्यो ह्वै सिंह शक्ति ।
बीकै लखी आदि भगवत्ती ॥

॥ दोहा ॥

जन निज बीको जानिके, देवी करी न देर ।
राज तणी दीधी रजा, भूप होउ इण बेर ॥५॥

वचन दियो दुर्गा मन भायो,
हुकुम सुणत सेवक हरषायो।
चरण पखारि ध्यान धर चाल्यो,
हरि पद वन्द सुग्रीव ज्यों हाल्यो।
आगैं सुभट सचीव उडीकैं,
सुन्दर नृप-हित सोई लीकैं।
विप्र वेद-मधि भेद विचारैं,
नजरां सूणी सूण निहारैं।
पद-वन्दत वीको गढ़ पूगो,
हर्ष विप्र सूण्यां चित्त हूगो।
तुपक चलीजु थती विन ताजा,
भयो नरेश दास बजि बाजा।
द्रव्य कुबेर लुट्यो धन देते,
कवि नृप कीन्ह अयाचक केते।
गद्दी बैठ महा गुन गायो,
सख्त हुकुम सब को सुनवायो।

॥ दोहा ॥

आदि शक्ति मौपे अधिक, हरपि जनायो हेत।
शीघ्र चलहु अब दर्श हित, सब नर कुटुम समेत॥६॥

बाजे घम झम रिम झिम बाजा,
तन्त्री तार तणयां महा ताजा।
हो रही तोप धोक भव हालै,
चतुरंगिनि आपस अड चालै।
बीर बणट कुन्जर-कटि बेडी,
जिष्णु के निज ऐरावत जैडी।
चपल सवार तुरंग-चलावै,
तडित तोमतम तिमि दरसावै।
गज गामिनी वरजा शुभ गावैं,
कोयल राग सुनत सकुचावैं।
झांझर पद हद ध्वनि झणावै,
लखि गति-चाल मराल लजावैं।
करनी चन्द ज्यूं बाल चकोरी,
सो छवि देखि हूर भई सोरी।
जय ध्वनि सुणत असुर भग जावै,
त्रद-दुख-हरण करनी बतलावैं।

॥ दोहा ॥

भूप भजत चित भगवती, गद्गद् वाणी गात।
लंक पाय मानहुँ उलटि, हरपि विभीषण आत ॥७॥

तब नृप निज पद तैं तजि आना,
बीस हथी के दरश लुभाना

पैंड पैंड नृप करत प्रणाम्बे,
ध्यावत चित आवत जगदम्बे

त्रिहुं कर-जोड़-चरण आवन्दे,
मेटहु मात अङ्क मम मन्दे

पुष्प माल नृप को पहराई,
रवि सुतहि जिमि कौसल राई

दास मात लखि खास बधारे,
अमर बेर उण पुहुप उछारे

घुरत अधिक आनन्ध की धोकाँ,
सुणत जय जय धुनि सह लोकाँ

कीन्ही महर अजौं किनियाणी,
है साखी आखी हिन्दुवाणी

भूप तखत साजेहु बीकाणौं,
श्री सुरराय माय देशाणौं

॥ दोहा ॥

हरषै कवि हिंगलाज हद, पुर मानहु परब्रह्म।
[illegible] प्रतिष्ठ कियो देशणोक जगदम्ब ॥८

पुष्कर अड़िव ध्वजा फहरावे,
सोव्रण कलश अनेक सुहावे।
बुरज च्यार चहुं ओर विशाला,
होत दिती सुत देख विहाला।
मंढ के द्वार खड़े मृगराजा,
लखि तिण गात गयन्द रिपु लाजा।
सुन्दरता दिवि द्वार सुहावै,
भाल्या नयन नको धाशि आवै।
दक्षिण दिशि द्वै पैएड अन्दाजे,
छत्रपति जिमि चित जन छाजै।
धन्य धन्य वह ठौड धिराणी,
किंकर जँह परसै किनियाणी।
कञ्चन दिव्य कपाटां फेरो,
तामें अरुण रंग बहु तेरो।
मूरति हद सुन्दर मेहाई,
कीरति कथन जैस कठिनाई।

॥ दोहा ॥

मन्दिर करणी मात रै, सोव्रण छत्र सुहात।
देव पुरी लखि कै दुरी, चतुरानन चकरात ॥ ६ ॥

अवनि–देव मुख वेद उचारैं,
अनुचर हित–कर चँवर उतारैं।
पाठ करत विधि-संजत पूजा,
देव-ऋषि मानों वह दूजा।
धूप्या जोड़ घिरत हृदि पूरैं,
चिटक पतासा मेवा चूरैं।
दीपत जोति महा जय आखैं,
वाह वाह जात्री जन भाखैं।
सारंग-पुञ्ज खुवैं हदसारा,
तिमि दधिसुत चहुँ तरफां तारा।
झालर बहुत मंजीर झणंकैं,
तत् तन्त्री बहु तार तणंकैं।
बाजा सर्व-प्रकार सु बाजैं,
धुनि सुनि घन–आनदूघन लाजैं।
गुन कवि केम एक मुख गावै,
पार न को सहसानन पावै।

॥ दोहा ॥

जय जय बोलत जयति जय, विप्रवयश अरु भूप।
व्रन चारण री बाहरू, श्री हिंगलाज स्वरूप ॥ १० ॥

महाजन एक विदेश कमायो,
लाल, पना, मुक्ता घण ल्यायो ।
लम्बी नाव सु-तीर लगाई,
वंश विभैं तैं सर्व भराई ।
ओपत नाव चलत दधि अच्छी,
मानहुँ उमंगि चलत है मच्छी ।
वारिधि इत तूफान चढायो,
लहरां देखि शाह अकुलायो ।
अवर नहीं दीखै अवलम्बा,
अनुचर जाण आवियो अम्बा ।
शक्ति महा तव-अद शरणाई,
मो दुख हरण आव मेहाई ।
गज ज्यों जानि दुखित गिरिराया,
दूहत धेनु हरि सम ध्याया ।
आमति नाहिं हरी की अत्ती,
पक्ष लघु, दीरघ भगवत्ती ।

॥ दोहा ॥

गज राख्यो सजि हरि गरुड़, चक्र सुदर्श चलाय ।
भगत उबारयो भगवती, वाहू हेक चढाय ॥ ११ ॥

तरनी करनी दधि में त्यारी, भीजी कंचु-बांह जल भारी।
चण्डी निज कर बांह निचोई, वन-त्रय हाथ तलै अग्र-बोही।
मात तणांजु रहै पुर मांही, नीर नगर के बाहर नाहीं।
भूत भविष्य वर्तमान भवानी, करनल शक्ति नमो किनियानी।
करनल मात कृपा तुम कीज्यौ, दान-भक्ति मोको वर दीज्यौ।
मात माफ औगुन करि मेरो, चण्डी-चरण-कमल-हूं चेरो।
कर करनी रक्षा जन केरी, जागावत 'हिंगलाज' तणेरी।
आनन्द कन्द दयानिधि अम्बे, जय जय जयति जयति जगदम्बे

॥ दोहा ॥

मंगल-करणी मात को, सुणै सुणावै सोय।
सको सुजन जग में सुखी, कदे न आफत कोय ॥१२॥

बलिदान-विनोद उर्फ भक्ति-प्रदान

॥ छप्पय ॥

श्री करणी सुर राय, विनय कर जोड़ बखाणूं।
माता मैं मतिमन्द, जुगति छन्दां नहिं जाणूं॥
आप कृपा करि आज, उक्ति ऐसी उपजावो।
महर घणी करि मात, बात भूली बतलाओ॥

सक्कि रूप सिंह समझावियोस (थे) सूरत सिंह नरेश नैं ।
कविता जु मांहि चाहूँ कह्यो, सो शकति महा इन्दरेश नैं ॥१॥

॥ दोहा ॥

सुकवि घणातैं हूँ सुणी, वह परचारी बात ।
करिहूँ बरण सो काव्य में, मैं बुद्धिसारूं मात ॥१॥

कमंध मौड़ बीकाणपुर, नरयंद सूरत नाम ।
सो भावी वश बीसर्‌यो, देशनोक सो धाम ॥२॥

राजनीति तजि सुरतसिंह, कर्म दिया छिटकाय ।
अनरथ लाग्यो करन अति, तापर कान लगाय ॥३॥

(छन्द मोतीदाम)

कहूँ कर जोड़ि कृपा निधि कीत ।
भयो जिमि सूरतसिंह विप्रीत ॥

थयो इक भूप को सेवक थान ।
दगां जो लख्यो चढतो बलिदान ॥

घणी करि भिन्न गयो निज गेह ।
दुखी तिण रैण हुई तिण देह ॥

पुनीचर ऊठऽरू न्हाय प्रभात ।
गयो नृप पै अति कम्पत गात ॥२॥

दुहूँ कर पोड़ि खड़ो नजदीक।
कह्यो नृप "काह हुवो कह ठीक ॥"
"वखाणत शास्त्रजु वेद पुराण।
सुणौ करि गौरव आप सुजान ॥३॥
भणी मुनिराज घणौ जु विचार।
कही हरि-भक्त जु सार निकार ॥
मरैं कई जीव जहाँ बिन मौत।
हरीपुर कैद जको नृप होत ॥४॥
मतासुख ह्वै जे रियासत मांहिं।
नृपो दुख पावति को कबू नाहिं ॥
भणी अणु-बात घणीज बणाय।
अजू तव राज्य नरेश अन्याय" ॥५॥
जकैं दई भूप के बात जचाय।
लयो नृप तापर कान लगाय ॥
भयो वस भूप मात्री उण वेर।
करयो अति कोप करी नहिं देर ॥६॥
जवैं नृप लीन ताजीम बुलाय।
सबै लघु दीरघ आय सुभाय ॥
हुवो कर्मचारी खड़ो हरषाय।
सभासद ही को रह्यो यूं सुणाय ॥७॥

"भएयों यह हुक्म गरीबनिवाज।
हिदायत है तुमको यह आज ॥
अजासुत मार सको नहिं एक।
हुक्म्म अदूल सजा है अनेक" ॥८॥

लयो इक सेवक और बुलाय।
'धजावन्द' के दियो कोट खिनाय ॥
करया झट दूत भेला कवि लोग।
थली वड़ गांव कर्‌यां घण थोग ॥९॥

करो तुम इतला पाइ कविन्द।
पड्यो तुम्हरे शिर आय के फन्द ॥
"कहो यह कौन हुकम्म करूर।
जको हमें वांच सुनावै जरूर" ॥१०॥

"यहां बलिदान गयो बन्द होय।
करो नर भूलि अबै मत कोय ॥
खगां मँढ़ काढि करो वडखण्ड।
दिवे बलिदान तिको सह दण्ड" ॥११॥

'यहां बलिदान हुवै बन्द नांहि।
ममं रहै प्राण जितै तन मांहि" ॥
इती सुण दूत भग्यो अकुलाय।
हुये उत हाजिर सेवक आय ॥१२॥

करैं कर जोड़ अनेक बखाण।
"अमा सुण आ अब आवड़ आण ॥
चण्डीसुण बात घणों कर चेत।
खड्यां जु धण्यां उजड़ै किमि खेत ॥१३॥
छत्र्या मद सिन्ध गा शेख छुड़ाण।
बण्यां जिण बेर में चील विमाण ॥
महाजन की इक नाव समन्द।
बचायं लई कर बाहुविलन्द ॥१४॥
कहावत हेक सुणी हम कान।
धजाबन्ध जोहसुणैं कर ध्यान ॥
नये तब जो न भये जगनथ्य।
नसे जन जो जग बीच अनथ्य ॥१५॥
भला गुण येहु बिहूं बिरदाल।
रूखालत तेण सदा छतराल ॥
पगां रज आप तणैं परताप।
थयो नृप सूरत थाप उथाप ॥१६॥
गिणैं नहिं कोट सुरत्त गयन्द।
मड़ो बलराज हुयो कि मयन्द ॥
अम्मा तब दास चुहाँ अनुमान।
सुरत्त नरेश्वर बाज समान ॥१७॥

हुसी जग मांहि घणो उपहास ।
दल्यां रण आप तणां निज दास ॥
अजौं कई वेर हुई जु उभेल ।
अबैं जगदम्ब करीजै उवेल ॥१८॥

हण्यों नृप कान्ह तू केहरि होय ।
जकी गत आज गई वण जोय ॥
घणी मिलि स्वासनि गावत गीत ।
रखो जगदम्ब थिरू मँढ रीत ॥१९॥

वह मम जीव दुखी घण हाय ।
अबैं यह कष्ट हरो तुम आय ।"
भण्यो सुपनै उण रैण वदाल ।
"पुत्रो तव ह्वै हैं अभै प्रतिपाल ॥२०॥

चढो बलिदान जु होय निचिन्त ।
वणू' तव-काज हरी-बलवन्त ॥"
सुण्यां यह शब्द सुण्या सुख खास ।
बन्ध्यौ तब दासन के विश्वास ॥२१॥

चढा बलिदान दई मद छाक ।
पुनः दिव जोत में भोजन पाक ।
पढैं कवि छन्द झड़ैं जनु फूल ।
भगैं सब दैत्य जु होय बघूल ॥२२॥

धज्राबन्ध मात नमो जगदम्ब।
अजूं यह कोट कह्यां अवलम्ब ॥
उचारण चारण हो बड़ आप।
तिकां कुण देय सकै भव.ताप ॥२३॥

उत घर जाय करी फरियाद।
वृथा अणुजोर गयो नृप वाद ॥
उठे कवि लोग घणां है अडाक।
लियां लठ त्वेष तणांजु लड़ाक ॥२४॥

"बचे मम प्राण मुसक्किल साण।
बधे हम जावे बिना धनुबाण ॥"
पढ्यो नृप कोफ इती सुण बात।
"रहैं नर वे न यहां परभात" ॥२५॥

नरेन्द्र प्रभात सुजागृत होय।
दुजेन्द्र बुलाय लये निज दोय ॥
कह्यो नृप "विप्र करो यह काम।
दयो तुमको हम पूजन धाम ॥२६॥

करो द्विज कूच करन्नल कोट।
सको नहिं मान जड़ों सिर सोट ॥"
हुये सुनि हुक्म द्विजेन्द्र वहीर।
भये संग भूप के वीर सुवीर ॥२७॥

लख्या मग आत परैं कविलोग ।
अज्यां अड़िया जु दड़ी पैं अमोग ॥
पड़ै कई वीर कढे नँह प्राण ।
बचे द्विजराज कढा इक आंण ॥२८॥

थमे सुण नाम कवि थलराय ।
भगे नर सो कहि बात बढ़ाय ॥
उतैं कविराज गये मँढ आय ।
घणा जगदम्ब तणां गुण गाय ॥२९॥

उतैं कही जाय नरेश को ऐम ।
"कछू न रहै नृप कुसल खेम ॥
महा मरमार हुं मैं मजबूत ।
जकां भिड़ जींत नँह जमदूत ॥३०॥

रह्यो वढ़ जोर जकां सुरराय ।
सको नृप दै हैं तुझे समझाय ॥"
खिज्यो नृप देखि द्विजां शिरखून ।
कह्यो भर त्वेप "कर्यो यह कौन" ॥३१॥

जवान थया जै हतै कर जंग ।
रंग्या सब वस्त्र रगत्तर रंग ॥
बढ़ी तब रीस नरेस के आन ।
अबां चित आह करीब समान ॥३२॥

मत्सरी मोह मति-सर आन ।
भख्यो बल वेग बढ्यो अरमान ॥
बुलाय कह्योजु सेनापति फौज ।
करो कल गामड़ नष्टर स ओज ॥२३॥
बड़ी अति तोप कढ़ी जु बिलन्द ।
घणैं बल लागि टला जु गयन्द ॥
बड़ा घण जोर जुप्या अति बैल ।
हली नंह तोप हलै मग हैल ॥२४॥
चढ्या कई कूर कूवीरन छोह ।
धजावन्ध हूँ तै बढावन द्रोह ॥
खड्या अति बाज उड़ी घण खेह ।
लखी रवि की जब धुन्धल देह ॥२५॥

॥ सोरठा ॥

गढव्यांला गासाँह, मलफा भरि मोडाणियाँ ।
सेना नै सामाँह, उछलि बांघा आवियां ॥२६॥
बिच अति रह्यो भगाय, सेनापति निज अश्व नै ।
इक नाहरियो आय, मारि तुरंग भो-मालफ्यो ॥२७॥
रोक लयो इक रात, दिल सेनापति सोचि दल ।
सूण कहैं साच्यात्, विजित न ह्वै देसाण री ॥२८॥

रही न मो अङ्गरीस, कोट हूंत निकस्यो जती।
घॉसै विसवा वीस, आती दीखै ईश्वरी ॥३९॥
अजकर लिखिया अङ्क, भल हलसी सिर भूपरै।
कै मिर मूँफ कलंक, कै परवाड़ो होवसी ॥४०॥
वीर जे नांहि वन्दूक, ओट कोट नांही उटै।
सर-जल जासी सूक, दग्यां तोप ज्यों दामणी ॥४१॥
हुय गो अस्त ग्रहेश, धोरां आयर दल डट्यो।
निद्रा हेत नरेश, अन्तः पुर पूग्यो उतैं ॥४२॥
राजा हूं राणीह, वाणी ऊभी इम भणैं।
"पीत्रा हित पाणीह, कहो राठौड़ां हो कठै ॥४३॥
आ कव सोची आप, कहो कोट दीधो कवण।
पान जकां-परताप, थाप उथापि थह रह्या ॥४४॥
आप जकाहूं आज, द्रोह करण री धारली।
लाल धजाली लाज, आसी राखण ईह गां ॥४५॥
मुण्ड चुण्ड हणि माय, शुंभ निशुम्भ संहारिया।
आ जगदम्बा आय, काल विडारयो कान्ह नै ॥४६॥
भुज वल कहाँ विशेप, असुर इसां सो आपमें।
निज कर अङ्क नरेश, कलंक लगावै कम धजां ॥४७॥
रेणु न उखड़ै रंच, उण तोपा वल आप हूँ।
पुहमी पै परपञ्च, रचिया जँह सुरराय रा ॥४८॥

भव पें मिली न भीक, कर झोली झाली कितां ।
ठावोड़ां नै ठीक, ईष्ट तज्यां पड़ियो अवस ॥४९॥

चीको कव को भूप, कव को दुरबल कान्हियों ।
सकती आदि स्वरूप, आपी थलवट आप नैं ॥५०॥

महिपतियां सिरमौड़, ईश्वरीयां भगती अठै ।
आयो दरशैं ओड़, पुनि रूड़ा प्राचीन रो ॥५१॥

राणी पैं करि रीस, मद घण पीकर मन्दमति ।
चन्द करि महल बलीस, सूतो मन में मान सुक्ख ।५२॥

छन्द मोती दाम

गुणैं गण जोड़ि कवि हिंगलाज ।
सुणैं इन्दरेश सुरां सिरताज ॥
भणूं अब हूँ जै सुणी जिमि बात ।
घुली नृप नींद दगां अधरात ॥५३॥
घणों करि कोप चढ्यां घटियाल ।
हरौल चन्दोल दुहूँ लटियाल ॥
भुजा गहि भूप कह्यो भुजलम्ब ।
"दुज्यो मिस कौन पड्यो नृप दम्भ ॥५४॥

धरैं नृप क्यों न करै सो ऊध्यान ।
उड़ूं तुझ लेय अवैं असमान ॥५५॥
करूं तोहि मूढ़ यहां चकचूर ।"
निद्रागत होत गयो उड़ि नूर ।
चढ़्या कटि-केहरि दीखैं छत्राल ।
झलाहल नेत्र घणी उरझाल ॥५६॥
सकत्ति तण्यों यह देखि सरूप ।
भयातुर दीन भयो अतिभूप ॥
पड्यो तब राव विनय करि पांव ।
"भुवा अब होवै लुवा ज्यों बचाव ॥५७॥
करो मम औगुन माफ कृपाल ।
अत्यांअत्य जानि गरीब वृदाल ॥
दहूँ निज हाथ सुवै बलिदान ।
तहां जगदम्ब थपे तुम थान" ॥५८॥
गई तब होय अदृश्य खगाल ।
पुरातन मात-सनातन पाल ॥
सबै नृप को जु गयो तन-शीत ।
गया रणिवास तवैं शुभ गीत ॥५९॥
लख्यो नृप-भक्ति, दियो छल छांडि ।
किया कवि कैद दिया तव काढि ॥

दियो इक बीर को शीघ्र खिनाय ।
लई निज सेन गई जो बुलाय ॥६०॥

बुला इक बीर कह्यो इमि भूप ।
अवै तुम जाहु जँह शक्ति सरूप ॥

यह बड़ काज पड्यो तव-योग ।
जेहो जलदी अब जै जन-जोग ॥६१॥

बखाण करूं कहा तूं बुद्धिमान ।
सबै विध तूं हनुमन्त समान ॥

खडे जिण द्वार रहैं जन खास ।
करो मम हाजिर होण प्रकाश ॥६२॥

गयो सुण दूत प्रफुल्लित गात ।
हुयो मँढ हाजिर जाय प्रभात ॥

कही उण जाय सुणौं कविराज ।
"हुजूर यहां वहै हाजिर आज ॥६३॥

रहे नृप आयास मयै रणिव ।
खडै नृप पैदल ज्यों जन-खास ॥"

भई गढ़ मांहि खुशी उण वार ।
पड़े जन आ कदमा अणपार ॥६४॥

बड़ाँह बड़ी जु बड़ी यह बात ।
हुई फिर आज नई इण हाथ ॥

कृतैं कविराज अनेक सुकीत ।
गवैं अति स्वास्नै सुन्दर गीत ॥६५॥

यहै घण आज कृपा करि आप ।
धजावन्ध खूब करी धणि आप ॥

छिताछित बीच रह्यो यश छाय ।
जुगैं जुग बात येहू नहिं जाय ॥६६॥

॥ छप्पय ॥

चढ्यो मोह नृप छोह, द्रोह को दूर दुरायो ।
मोह तणों तजि मूल, भाव-भक्ती मन भायो ॥
छाक हेतु बड़-छाग, मोल अति देय मगाया ।
बड़ घण अमृत-बाण, वारुणी हूँत भराया ॥
उपकरण अमित अमल्ल लेय, नैण भूप निहारि कै ।
करवाजु चक्र धारी कमन्ध, बीजल सार बधार कै ॥६७॥
भयो पयादो भूप, विनय नय शीश बखाणी ।
गाय सुरंगा गीत, हरखि हाली महाराणी ॥
देण जका बलिदान, थान करणी रे थाया ।
भाई बेटा बहुत, उमंग-सागै उठि धाया ॥
द्विजराज-इन्द्र आवै दरगा, श्री मँढ़ लखि सकुचावता ।
उत करी सजावट मँढ अधिक, ईहग गुण घण गावता ॥६८॥

अमरां नै कहि इन्द्र, "दान बलि देखां देतां।"
मन्दिर धोय मनोज्ञ, कियो सेवक मिल केतां।
आवैं दाम अनेक, ओलखि भूपति नै आतो॥
छतराली हित छाक, खडै नाहर नै खातो॥

घूघरा पांव बाजिऽरू घणा, डम डमाक हुये डैरवा।
लेबा उच्छिष्ट आवै लुभ्या, ये बावन देखो भैरवा॥६६॥

बैठ्या देव विमान, छाव पुहुपां भरि छाई।
बजा दुन्दुभि बहुत, उमंगि अम्बा मँढ आई॥
सुरंग केशरयां श्वेत, लाल कई फूल गुलाबी।
सजल स्वच्छ सुगन्ध पुहुप पंकतियां फाबी॥
कर जोड़ि विहूं गन्धर्व किन्नर, गुण घण आछा गाविया।
बलिदान इन्द्र देखण बठै, इन्द्र आदि सुर आविया॥७०॥

(छन्द त्रोटक)

भणि भूप खमा जगदम्ब भजी,
तिण वेर प्रकृत्ति भो तर्क तजी।
छल छांड़ि तमाम जु छोह छयो,
बड़ पात्र-कृपा जगदम्ब भयो॥७२॥
हरख्या नृप भ्रात अनेक हलैं
सुर मानों सुरेश के संग चलैं।

गजगामिनी कामिनि गान करैं
मन हूर-परी सुन मोद भरैं ॥७३॥
रमि रागिनि रानि करैं हरखी ।
विबुधा जु झरी पुहुपां वरखी ।
छवि देखि नरेश की इन्द्र छिपै ।
धजवन्ध' आदीश्वरि जेम दिपै ॥७४॥
धरि पांव यला नृप धोक दिवै ।
लुभि लाभ अलौकिक भूप लिवै ।
यहि भांति जु हाजिर आय हुवो ।
दुहुं जोड़ि ज्यूं हाथ सुरेश दुवो ७४॥
द्विजराज खड़ा अति मोद घणों ।
विहुं जोड़ियां हाथ सतुति भणों ॥
झलकी उत ज्योति उद्योत भली ।
रमि ता मय हव्य हविष्य रली ॥ ७५ ॥
धक धक्क गिरथ्य घृत जोति धकै ।
डक डक्क जु आसन वहुत डकै ॥
नृप जोड़ि विये कर शीश नयो ।
वलि-म्हूरत-श्रेष्ठ तां वेर भयो ॥७६॥

(छन्द मोतीदाम)

धजावन्ध इन्द विधी बलिदान ।
कहूं कर जोड़ि सुनि जिमि कान ॥
छई छिति धूंह हवन्न अछेह ।
मँडी जनु धूंरि महा-खण्ड-मेह ॥७७॥
भयो जग तिम्र गयो लुखि भाण ।
सुरां जु विमाण रुक्या असमाण ॥
उठी अष्ट-गन्ध सुगन्ध अपार ।
भये मन देव खुशी उण वार ॥ ७८ ॥
करी भर छाव भरी कुसमाण ।
पड़्या मंढ फूल खुवैंऽप्रमाण ॥
सुगन्धित सज्जल 'स्वच्छ विशेष ।
अलौकिक फूल सो है इन्दरेश ॥७९॥
गुलाब ऽरु लाल हर्‌यो रंग जेण ।
कहे कवि कीरति कौ द्युति तेण ॥
भला वह फूल अजूं सब भांत ।
तुट्या सुर-तीय हियै करि ख्यांत ॥८०॥
कढ़ी कर खैंच नरेश कृपान ।
लखैं सब देव खड़े बलिदान ॥

चढ्या मँढ़ आय वड़ा घण छाग ।
खिवैं जिमि बीज हुतां चक्रखाग ॥८१॥

भणैं सुर यैस सवै मिल वात ।
हुवैं नहिं चक्र इसा किण हाथ ॥

छकां छक छाक हुमें छतराल ।
खमा मुख दाख खड़ा लटियाल ॥८२॥

कह्यो नहिं जाय जका तप तेज ।
झिलैं अति छाग हुवै नहिं जेज ॥

हुयो उण वेर अलौकिक रूप ।
सकै को वखाण वे तेहड़ रूप ॥ ८३॥

धतांधत होय नशै रणधीर ।
भखैं वकरा घण भैरव वीर ॥

भणें यश भैरव वीस वतीस ।
कहैं सुर कीरति कोटि तेतीस ॥ ८४ ॥

करे कर जोड़ सुरेश वखाण ।
भई अति व्योम में भीड़ विमाण ॥

अम्मा इन्दरेश सुरां उण वार ।
पुहुप्प झरी जु करी अणपार ।८५॥

खमा भणि भूप कही कर-जोड़ि ।
करैं मम औगुण माफ करोडि ॥

"रह्यो इण पाट सदा तव राज ।
रखी वरनेक घणी तुम लाज ॥८६॥
करे निज बालक नेक कुसूर ।
वलू रह मात सदा भरपूर ॥
भणैं इमि वेद सुणी हम वात ।
"महा दुख मांहि रहे संग मात ।'८७॥
करैं मम औगुण पै न खयाल ।
भणैं व्रद रावरो वेद दयाल ॥
पगां रज आप तणौं जु प्रणाम ।
कृपा करि राखि सदैव कलाम ॥८८॥
सनातन येह पुरातन सोच ।
मूझ तणां जु घणां दुख मोच ।"
भणी इमि भूप विनै घण वार ।
धजाबन्ध मात तणैं दरबार ॥८६॥
तन्त्री घन आनध रूप छतीस ।
बज्या जिण द्वार, तपैं भुजबीस ॥
अछीज कलाँवत माढ़ आवाज ।
बजावत बेणु मनो बृजराज ॥६०॥
घणी सुर-वाम करै मिलि गान ।
धरैं मुनिराज खड़ा मंढ़ ध्यान ॥

कथैं कविराज सुकाव्य बखाण।
सुणैं चुपचाप सौजन्य सुजान ॥६१॥
समैं इक विष्णु गये सुख सोय।
धरी जर देह जु दानव दोय ॥
करे बल कौण जकां जु बखांण।
घल्यो जिण बहुत सिरा सुरधांण ॥६२॥
अजू दुख पाय भये अज ईश।
भजी उण वार भुजा वड़ बीस ॥
घणों बल धारि भुजा घंटियाल।
बलू विबुधा जु चढ़या बिरदाल ॥६३॥
हली इण हाथ भली चन्द्रहास।
भयो जिण दाणव वंश विनास ॥
करी तुम जाय सुरां रखवाल।
नमो प्रतिपाल नमो प्रतिपाल ॥६४॥
धजाबन्ध क्रोध घणों उरधार।
करया त्तय शुंभ निशुंभ वकार ॥
छकी मद हूँ तैं मृगेन्द्र चढीह।
वडांह वड़ीह वड़ांह वड़ीह ॥६५॥
पड्यां वड़ दैत्य मरया अणपार।
भणी "जयदेव" घणी उण वार ॥

गुण्यां कवि छन्द कवित्तऽरु गीत।
"जयो जगजीत जयो जग जीत" ॥९६॥
भविष्यऽरु भूत तूं है व्रतमान।
सुणे सुर हेक न आप समान॥
महा महमाय तूं चाण्मुड माय।
शिवा भुवनेश्वर तूं सुरराय ॥९७॥
थपे रघुनाथ करां निजथान।
भणीं जय रींछ हरी बलवान॥
बंधी किरपा तव वारिधि पाज।
जयो हिंगलाज जयो हिगलाज ॥९८॥
धजाबन्ध आपधरी फिर देह।
धणी कर महर जु मामड़ गेह॥
भयो भव आवड़ नाम विख्यात।
जयो जग मात जयो जगमात ॥९९॥
हुयो अवतार यह फिर आय।
मह्रा कवि मेह धरां महमाय॥
भयो कवि लोगन को वड़ भाग।
पगां इण आय धरैं नृप पाग ॥१००॥
अम्मा जु करन्नल आदि अनादि।
वड़ांह वड़ी जे मिटावण व्याधि॥

भूतां हित मात हुवै व्रतमान ।
भुजा तव मात घणी बलवान ॥१०१॥
पती अहि पावै रती नँह पार ।
जपैं दिन रात नु जीभ हज़ार ॥
थये पुल जेण जको जन थान ।
भलो उण भाग लख्यो बलिदान ॥१०२॥
घट्यां बड़रोग मिट्या अङ्ग पाप ।
तिका सुनि इन्दु ! रिधू परताप ॥
पगां इण सूरत मूर्ति प्रणाम ।
कृपा करि राखैं कलि में कलाम ॥१०३॥
घणों हिंगलाज खुशी गुण गाय ।
सुण्या जग साम्प्रत जो सुर राय ॥
लखैं नहिं औगुण मों लवलेश ।
बणी रहे आप कृपा जु विशेष ॥१०४॥
सुणैं इन्दरेश सकति सुजान ।
करी जिमि भूप को भक्ति प्रदान ॥
कहै हिंगलाज सुनै कवि वृन्द ।
करैं मम औगुण माफ कौ छन्द ॥१०५॥

चरजा (१)

कृपा करि दीजियो करणी, चरणकी भक्ति चाऊँ हूँ ॥ टेर ॥

दाटा कानां खोलि दुहुँ, ओलखि आंख उघार ।
झांक सुदृष्टि इत जरा, बीस हथी इण बार ॥
श्रवण अरजी सुनाऊं हूँ ।
कृपा करि दीजियो करणी, चरण की भक्ति चाऊं हूं ॥ १ ॥

कहणू ममता नहिं करै, दहै महा तप द्रोह ।
सहणू पड़ै शरीर नैं, मन मय रहणू मोह ॥
त्रिपति के दिन बिताऊं हूँ ।
कृपा करि दीजियो करणी० ॥ २ ॥

अधम उद्धारण आप अति, मैं हूं अधम महान ।
मम भव त्यारथाँ मावड़ी, जाणैं सुजस जहान ॥
बह्यो वारिधि में जाऊं हूँ ।
कृपा करि दीजियो करणी० ॥ ३ ॥

देव न दूजो आज दिन, आप शक्ति अन्दाज ।
करनी नह सरसी करयां आना कानी आज ॥
कछुक सेवक कहाउं हूं ।
कृपा करि दीजिये करणी० ॥ ४ ॥

अरज सुकवि हिंगलाज री, सुनो सकति दे श्रौन ।

इच्छा पूरण आप विन, करै मात मो कौन ।
दिवस रजनी तो ध्याऊं हूं ।
कृपा कर दीजियो करणी, चरण की भक्ति चाऊं हूं ॥५

चरजा (२)

जगत में रचना है जाकी, कहै कुण कीर्ति सुकवि वाकी ।टेर।
ब्रह्मा विष्णु महेश बखाणैं, जाकी रचना कोऊन जाणैं ।
सहसानन की रसना सारी, थाकत गुण थाकी ।
जगत में रचना० ॥ १ ॥

दीप दिवाकर वा घरवारो, आठहुं जाम रहै उजियारो ।
सुर तैंतीस कोटि जिंह शरणैं, वेद चहूँ भाकी ॥
जगत में रचना० ॥ २ ॥

पुरुष रूप पर ब्रह्म कहावैं, अवतरि कबु चारण कुल आवैं ।
काटैं विकट सुजन के संकट महरि ह्वै माँ की ॥
जगत में रचना ॥ ३ ॥

धन्य धन्य शक्ति सुजन सुखदाता, मेहाई बाजी जगमाता ।
धरि तन मनुष जगत आदेश्वरी, प्रचलित प्रभुताकी ।
जगत में रचना० ॥ ४ ॥

शक्ति अनादि नमो सुरराया, गुण 'हिंगलाज' यह कवि
मा सुख सम्पत्ति ज्ञान दयो मोहि, भक्ति विमल व
जगत में रचना है जाकी, कहै कुण कीर्ति सुकवि वाकी

चरजा (२)

जमानैं इण आपरा जूनां, करो बुद याद किनियाणी
रक्तादिक रण मारिया, सबल असुर सुर राय
करि किरपा कीन्हा खुशी, सुख देवां वगसाय
वेद बहु वेर वाखाणी ॥ जमानैं इ

कान्ह कुटिल न करणाला, मारयो होय मयन्द ।
कीन्हौं निज जन बीक नै, नांमी आप नरिन्द ।
जकी ये बात जग जाणी ॥ जमानै इण ॥

शेखा हित ह्वै सम्बली, मात गई मुलतान ।
कैद हूंत जिंह काढ़ि के, आया गरुड़ उडान ।
गुणी यह कीर्ति घण गाणी ॥ जमानै ॥

वारिधि में सकुटुम्ब डूबत, कीन्ही साह पुकार ।
तरणि तराई ताहि तुम, वाहु वढ़ा उण वार ।
सरिस देशाण सहनाणी ॥ जमानै ॥

विरियां पीथल भूपरी, लीन्ही राखि कलाम।
धर्यो हरि रूप धिनियाणी ॥ जमानै ॥ ५ ॥

आवड़ मुख आखी नकी, होय रही जग आज।
भूप निवल ह्वै बैठगा, दे निज दोरां राज।
हुई कुल छत्रि धर्म हाणी ॥ जमानै ॥ ६ ॥

वचन निभाया भगवती, आवड़ रा इण वार।
कछुक वदां प्रति झांकज्यो, नाजुक समय निहार।
भणै हिंगलाज इम वाणी ॥
जमानै इन आपरा जूनां, करो वद याद किनियाणी ॥ ७ ॥

चरजा (४)

छावया मद आज्यो जी छतराल, अम्बा मोरी ले सागै
लटियाल ॥ टेर ॥

श्रंवणां संकट साद सुनि, डोकरड़ी डाढ्याल।
हाला ले अति हांकज्यो, लांबी भीख लंकाल ॥छाक्या.॥१॥

कार उलांघत कान्ह कों, तैं मार्‌यो तत्काल।
आद् अै वद इण वखत, भूलैं नँही विरदाल ॥छाव्या.॥२॥

भूमि घणी तव वल भुजां, गढवाड़ां घंटियाल।
उथपैं ज्यां सिर ओलखै, दृष्टि करूर धजाल ॥
छाक्या मद ॥३॥

धारहु इण पै आप दृग, जिण दिन की सी झाल ।
झमरा नैं दीव्या सकत बहुत होय विकराल ॥
छाक्या मद ॥४॥

थान सींमा रावण थिरू, आज्यो हु अकराल ।
हेलै इण हिंगलाज रै, पूरण है प्रतिपाल ॥
छाक्या मद आज्यो जी छतराल, अम्बा मोरी० ॥५॥

चरजा (५) दोहा—

शेष पार नहिं पा सकै, जाकै जीभ हजार ।
कवि ताकी प्रभुता कथन, विरथा करैं विचार ॥
हे मेहाई थारा प्यारा औ घण लागै सारा नाम ॥ टेर ॥
कथणी थां नावांरी कविता, लागी म्हारै लाम ।
कर दुंहुं जोड़ करूं थां कदमा, श्री सुर राय सलाम ॥
हे मेहाई ॥ १ ॥

कीर्ति कृतै त्रिपुरम्बा केरी, शिव ब्रह्मा घनश्याम ।
वाघेश्वर चरणां रज वन्दैं, उर सुर आठों याम ॥
हे मेहाई ॥ २ ॥

विरदाली, कुमगल्या, भुजलम्बा मदमतवाल, अमाम ।
गावैं गुण दिन रात खगाली, थारा देव तमाम ॥
हे मेहाई ॥ ३ ॥

आंदीश्वरि, भुवनेश्वरी, आई, विमल, चला, शिवबाम।
करुणानिधि, धनि मा किनियाणी, सबला, कमला श्याम ॥
हे मेहाई ॥ ४ ॥

देवल-दीह, सुता मेहारी, डाढ्याली सुख धाम।
लोवड़वाल, रिधू, कहलावै, नामी करणी नाम ॥
हे मेहाई ॥ ५ ॥

राजल नाम रखी राजांरी, केहरि होय कलाम।
अकब्बर नैं भुगताविया उण, पाप तणां पैगाम ॥
हे मेहाई ॥ ६ ॥

तूं जोगण जूनी जग त्राता, अवलम्ब दुनियां आम।
अवतरि औरूं आविया अब, गैदै छोटै गाम ॥
हे मेहाई ॥ ७ ॥

पावां इण रोगी रज परस्यां, आवै अंग आराम।
प्रापत जेण हुवै सुख सम्पत, कछु नहिं संकट काम ॥
हे मेहाई ॥ ८ ॥

अगणित नाम तिहारा अम्बा, गिण नहिं सकत गुलाम।
कहै हिंगलाज अजू किनियाणी, पांवां आप प्रणाम ॥
हे मेहाई थारा प्यारा औ घण लागै रूड़ा नाम ॥ ९ ॥

चरजा (६) दोहा—

१ ९ १५
मयक अङ्क पख मांगसिर, सिद्धि योग शनिवार।
कृष्ण पक्ष की चोथ को, ले देव्यां घण लार।

जंग नृप जैत जिताया, लागी असवारी लोवड़ वालरी ॥टेर॥

शोभित आप शक्ति संग केती (अरु) जो जोगणजग मांय।
आसव लेण वेर हिय धारै, नाकारो मुख नांय॥
जंग नृप० ॥ १ ॥

केहरि पै केशर खुवै, लालां कटि लंकाल।
वलधारी ववरीक विराज्या, फूल भरावैं फाल॥
जंग नृप० ॥ २ ॥

मारै मलफ मयन्द मेहाई, दौड़ धरा अधकोस।
गूंज्यां जेण गुडैं गज घोड़ा, होय घणा वेहोश॥
जंग नृप० ॥ ३ ॥

प्रण कर पांव पागडै कीन्हो, माँ आवड़ मृगराज।
हाला लेय हरी चढि हांक्यो, हुय आगे हिंगलाज॥
जंग नृप० ॥ ४ ॥

धरि उर क्रोध अधिक डाढ्याली, कर वड़ लीन्ह कृपाण।
दल काबुल सांमां धक्या, लेण यवन वलिदान॥
जंग नृप० ॥ ५ ॥

भैरव दाखि खमां मुख भाख्या, बिरद तणां बाखाण ।
खिल दाढी खाता खड्या, चक्र अधिक चलाण ॥
जंग नृप० ॥ ६ ॥

सुनि घण्टा घणव्याली श्रवणां, हुवौ सूचित अहिराज ।
देखण युद्ध देवी रो जा दिन, रोक लियो रवि बाज ॥
जंग नृप० ॥ ७ ॥

आई नाथ चढ्यो थां अधिको, जिण पुल आनन जोश ।
हरि हर ब्रह्मा आदि तिहारो, रोक सकै नहि रोष ॥
जंग नृप ॥ ८ ॥

नारद वेणु बजा द्विज नाचै, हँसि हँसि मन हरषाय ।
शङ्कर संचै हेतु सुमरणी, मोटा शीश मंगाय ॥
जंग नृप० ॥ ९ ॥

पड़िया यवन खेत कहं पीरां, जैत नरिंद पख जोर ।
छत्र चढ़ाय छोटड़े छटक्यो, रूमरो कावुल ओर ॥
जंग नृप० ॥ १० ॥

मरिया वीर जिवा मेहाई, पिण्डा मेटी पीर ।
सांवत खड़ा हुया यों सोहैं, ज्यों मुनि गंगा तीर ॥
जंग नृप० ॥ ११ ॥

बैठ विमान पुहुप बरसाया, देव घणां उण दीह ।

वड परवाड़ो भगवती (स) ओ, आंखूं किमि इक्क जीह ॥
नृप जंग ॥ १२ ॥

अै वुद मात आपका इन्दू, करि किरपा सुन कान।
कहै 'हिंगलाज' राखज्यो कलि मैं ब्रद जूनां री बान ॥
नृप जैत जिताबा लागी असवारी लोवड़ वालरी ॥ १३ ॥

चरजा (७)

जय करनी हरनी दुख जनके, जय जय आनड़ रूप जयो ॥टेर'

करनल-शक्ति, भक्त-जन केरी, लखि विपदा अवतार लियो।
मेहो तातऽरु देवल माता, भाग महा कवि-वंश भयो ॥
जय करनी० ॥ १ ॥

कूप पड़त अणदो वण कूक्यों, "अवलम्ब अवर न अम्ब अयो
ढावी लाव भमँग ह्वै डाढाँ जन प्रहलाद ज्यों बोल्यो 'जयो' ॥
जय करनी० ॥ २ ॥

सिन्ध-नरेश भूप शेखा को, काल कोटड़ी कैद कियो।
धरि दिव्य रूप चील्ह रो देवी, दान-कन्या समें ल्याय दियो ॥
जय करनी० ॥ ३ ॥

गिरि राया चरतीं तव गायां, घेरण-कान्ह महीप गयो।
हिरणाकश्यपु ज्यों हरि हो हणियो, छिति पै तव यश वहुत
छयो ॥ जय करणी० ॥ ४ ॥

धजबन्ध मात दयानिधि देवी, थलवट राज सुथान थयो ।
जन 'हिंगलाज' रावरो देवी, रात दिवस यश गाय रह्यो ॥
जय करनी हरनी दुख जनके, जय जय आवड़ रूप जयो॥५॥

चरजा (८)

करनल भय हर वीस भुजाली, दया करो लाल धजाली ॥टेर॥

वैण सुणो मम वीसहथ, नैन अमी भर न्हाली ।
चैन देवो हद चारणां, रैन दिवस रखवाली ॥
करनल भय० ॥ १ ॥

दुख हरनी सजि केहरी, डरनी नँह डाढ्याली ।
करनल कहूँक काम ही करनी, थे महा काली ॥
करनल भय० ॥ २ ॥

सबल सिन्धु में साह पै, निवल जांण शुभ न्हाली ।
अलग करन दुख अम्बिका, प्रबल आप प्रतिपाली ॥
करनल भय० ॥ ३ ॥

कुटिल वैण कान्है कही, "करनी तुम चिरताली ।"
क कहतां ही करनला, मयन्द भई मतवाली ॥
करनल भय० ॥ ४ ॥

पकड़ शेख नै असुरां पांवां, डिग वेडी झट डाली ।

करनी होयत् संभली कुलफां, पाव कढाली ॥

करनल भय० ॥ ५ ॥

पाघ तिहारा पाव में रिड़मल आ झट राली ।
कियो छत्रपति रङ्क नैं, दियो राज बिरदाली ॥

करनल भय० ॥ ६ ॥

करणी कर मो पै कृपा, हर दुख दीह-मेहाली ।
कवि हिंगलाज राजरै कदमां, चरजा भेंट चढाली ॥

करनल भय हर बीस भुजाली, दया करो लाल धजाली ॥७॥

चरजा (६)

म्हारी करनल माऊ, आती तूं पहली ज्यू औरूं आव ॥टेर॥

आया आप कई बर आगै, सो, करज्यो कान पसाव ।
वारिधि में डूबंत उबारी, निज जन हंदी नाव ॥

म्हारी कर० ॥ १ ॥

आरत श्रवण सुणी अणदा री, पड़तां कूपज पाव ।
दंभी रूप तुरत होय धाई, ले मुख ढाबी लाव ॥

म्हारी कर० ॥ २ ॥

मारण कान्ह महीप मेहाई, रूप सज्यो मृगराव ।
बीकाणूं बगस्यो बीका नैं, भगती रो लखि भाव ॥

म्हारी कर० ॥ ३ ॥

कोपि छटा शेखा सिर कड़की, तामें न लाग्यो ताव।
दुख करि दूर रु दर्शन दीधा, शीतल धारी सुभाव।

म्हारी कर० ॥ ४ ॥

कहं हिंगलाल कलू में करनी, त्यागो मत बरताव।
आनन्द कन्द दयानिधि अम्बै, आती ज्यौं ही आव॥

म्हारी करनल माऊ, आती तूं पहली ज्यों औंरू आव ५॥

चरजा (१०)

अरज सुनि आवो यह आई, माऊ, मेहाई बाई इन्दरा। टेर॥

नागणेच, भुवनेश्वरी, शाकम्बरि, सकराय।
कुष्माण्डा, कात्यायनी, चन्द्र घण्ट चखड़ाय॥

अरज सुनि० ॥ १ ॥

गूंगी, गहली, रायगिर, जीण, शिला, जमवाय।
धमला, कमला अद्रिजा, शिवा सुन्दरि सभराय॥

अरज सुनि० ॥ २ ॥

वामंगी, विमला, वला, विजिया, बांके राय।
कामाख्या, कृष्णा, कालिका, महिमण्डे महमाय॥

अरज सुनि० ॥ ३ ॥

इ, चावण्ड, चण्डिका, छेछी आछ छत्राल ।
वड़ आवड़, शैचरा, चक्रेश्वरी, चिरताल ॥

अरज सुनि० ॥ ४ ॥

, लालां, अप्रणां, हेमसुता, हिंगलाज ।
ा, वसन्त-कुमारिका, सैणल, करण सुकाज ॥

अरज सुनि० ॥ ५ ॥

ा, त्रिजटा, त्रिपुरा, आई, आशापूर ।
ा, तारा, तोतला, जेहा, ज्वाल जरूर ॥

अरज सुनि० ॥ ६ ॥

भवानी, अम्बिका, सांचल, सुशीला, श्यामा ।
भृंगा, भैरवी, तृषा त्रिनैत्र तमाम ॥

अरज सुनि० ॥ ७ ॥

इ, राजल, कौशिकी, गायत्री गीगाय ।
अरु पद्मावती, बाघेश्वंरी, भवराम ॥

अरज सुनि० ॥ ८ ॥

विराय, निकुंबला, सिद्ध आदि, साता दीप ।
र्ण आदीश्वरी, मारण शुम्भ महीप ॥

अरज सुनि० ॥ ९ ॥

ाढा, अम्गला, खोड़ी, खाण्डेराय ।

हर्षवती हेला हथी, भागवतीऽरु भणाय ॥
अरज सुनि० ॥ १० ॥

भूखडो कलजुग भगवति, भूप भया बद नीत ।
सूनां लखि तव सेवकां, अब घण करत अनीत ॥
अरज सुनि० ॥ ११ ॥

आयां सरसी आपनैं, कवि-कुल सारण काज ।
आयल गुण सुधि अ:परा, गावै कवि हिंगलाज ॥
अरज सुनि आवो यह आई, माऊ मेहाई बाई इन्दरा ॥ १२ ॥

चरजा (११) दोहा—

मास-मधु सुदि अम्बिका, उज्ज्वल पख आसोज ।
हरपि शक्ति भेली हुई, रचण रास नवरोज ॥
उमंगि मँढ आवैं जी सब अम्ब, अम्बा मोरी देसाणैं जगदम्ब
॥ टेर ॥

दमकति कर दामिन समौ, खण्डण दुष्टां खाग ।
उमंगि चहुं दिशि आत अति, बिरदाली सजि बाग ॥
उमंगि मँढ० ॥ १ ॥

बिछत बिछायत विविध बिधि, बहु होय सौरंभ बास ।
पान-दान रूपालिया, दारू दाख गिलास ॥
उमंगि मँढ० ॥ २ ॥
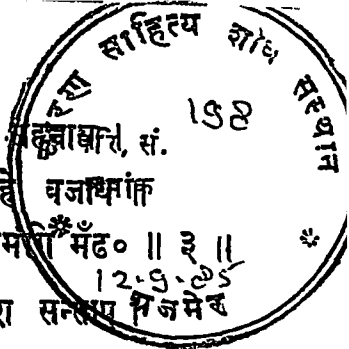
ढोल मृदङ्गऽरु झांझ ढप, सारंगी [illegible]
बाजा स्वच्छ छत्तीस विधि भैरव रहे बजा[illegible]
उमंगि मँढ० ॥ ३ ॥

मँडत नृत्य ध्वज-मेदिनी, शेष-शीश सन्ताप ।
गुँजत व्योम गंभीर घण, ऊँची चढ़त अलाप ॥
उमंगि मँढ० ॥ ४ ॥

प्याला वढ़-हाला पुरसि, राय खुड्द हरषन्त ।
मँडल नृत्य मनुहारियां, कर दुहुं जोड़ि करन्त ॥
उमंगि मँढ० ॥ ५ ॥

घम घमाट होय घूघरां, डैरव होत डमंक ।
पुनि रिम झिम वह नूपुरां, झांझर वण झमकन्त ॥
उमंगि मँढ० ॥ ६ ॥

मेहाई आई महा-मुदित, अहा मन मांहिं ।
विहुँ शक्ति किज मुख भणौ, 'नृत्य कमी कछु नाहिं" ॥
उमंगि मँढ० ॥ ७ ॥

लखि नृत्य लोवड़वाल रो, सकुचत वहुत सुरेश ।
देव करत मुख दाखि 'जय' वृष्टि पुहुप विशेष ॥
उमंगि मँढ० ॥ ८ ॥

वेदां लिखित विशेष-विधि, पार न को नृत्य पात ।

मृड़ हरि इन्द्रऽरु देव मिलि, गुण घण अम्बे गात ॥
उमंगि मँढ० । ६ ॥

आनन्दित आदीश्वरी, शक्त्यां पेखि समाज ।
कीरत तव नृत करनला, गावै 'कवि हिंगलाज' ॥
उमंगि मँढ आवैंजी सब अम्ब, अम्बा मोरी देशाणैं-जगदम्ब
॥१०॥

चरजा

करनल किनियाणी, परचा अपरिमाणी जग में आप रा ॥ टेर ॥
आछा अधिक किया कई अम्बा, परचा-भव-परमाणी ।
थायां सुयश शेप-मुख थाकैं सहस-जीभ सुर-राणी ॥
करनल. ॥ १ ॥

जलधि बिचैं जलयान सुजन री, तूं कर हूँत तिराणी ।
झूठ न को यामें जब-जेती, पुर वह औरूं पाणी ॥
करनल. ॥ २ ॥

न्याय करी नर दो उन केरी, जो जग कीरति जाणी ।
कर उण पकड़ि दूध गहि काचै, धूर्त-दौर दभाणी ॥
करनल. ॥ ३ ॥

समर शाह-काबुल सैं करतां, लख-नव रूप लखाणी ।
खग्ग गहि असुर आप रण खण्ड्या, जैत नरेश जिताणी ॥
करनल. ॥ ४ ॥

सिन्ध हूं काढ़ि कैद तैं शेखो, लव में पूंगल ल्याणी ।
हाल्या सरिस लेय युद्ध हूं तां, डाकू री तुम ढाणी ॥
करनल. ॥ ५ ॥

मॅढ इण ले संग मोहि पधारया, धजबन्द खुड़द धिराणी।
काबी मन्दिर राव री किरपा, श्वेत रूप दर्शाणी ॥
करनल. ॥ ६ ॥

दे दरशण उर हर अंधियारो, जननी भाव जणाणी ।
गुण हिंगलाज सु कवि यह गाया, उक्ति आप उपजाणी ॥
करनल किनियाणी, परचा अपरिमाणी जग में आपरा ।।७॥

राग-विहाग (१२)

किये तुम भक्तन के सब काज, अम्बा मोरी मेहाई महाराज
॥ टेर ॥

समझवान नहीं बीसरै, उण दिन रो ईपान ।
भटियाणी री वेर में, बाघ हुया बलवान ॥
किये तुम० ॥ १ ॥

तिण दिन केरी ताहरी, छत्री मानै छाप ।
आखति कर पूगा उठै, आपति मेटण आप ॥
किये तुम० ॥ २ ॥

विकट कैद संकट प्रबल, लखि शेखो अकुलात।
रूप चील धरि ल्याविया, महर घणी कर मात॥
किये तुम०॥ ३॥

कमरो आयो सजि कटक, भइ बंका बतलाय।
विजय करन बीकाणपुर, बाजा बीर बजाय॥
किये तुम०॥ ४॥

इततैं नव-लख आविया, सबला सिंह सजाय।
जीत करी नृप जैतरी, खागां असुर खपाय॥
किये तुम०॥ ५॥

पच घण हारयो पातशाह, कई दफै करि दौड़।
पचरंग नहि दीनो रुपण, चण्डी गढ़ चित्तौड़॥
किये तुम०॥ ६॥

पद-रज कवि हिंगौल तव, वन्दै चरण विशेष।
करणी कृपा जु राखियो, मो पै आप हमेश॥
किये तुम०॥ ७॥

राग-विहाग (१२)

कृपा निधि शक्ति नमो किनियाणी,
देवी धर-देशाण-धिराणी॥ टेर॥
अणदै कूप पड़न्ते आखी, "चण्डी आव बचाणी।"

छ्याया रूप धार थे दम्बी, गढव्यां कीरति गाणी
कृपानिधि० ॥ १ ॥

कान्ह संहार बीक नै करणी बंको भूप बणाणी।
तरनी शाहु जगड़री त्यारी, समन्द बडै सुरराणी ॥
कृपानिधि० ॥ २ ॥

अलवर बखत नृपति री आरत, अम्बा तू सुणि आणी।
जवन मुगल शहीदां रा जगदम्ब, मन्त्रां जोर मिटाणी ॥
कृपानिधि० ॥ ३ ॥

जैत भूप-कमरा रा जंग में, नव-लख रूप लखाणी।
कर-त्तय सेन सबै कमरा की, जैत की जीत कराणी ॥
कृपानिधि० ॥ ४ ॥

अमित प्रबाड़ा बहूत अबीढ़ा, कीन्हा जग किनियाणी।
'कवि हिंगलाज' राज री कीरति, बुद्धि जेम बखाणी ॥
कृपानिधि० ॥ ५ ॥

राग भैरवी (१४)

मेहाई जागो सूरज कियो है उजियारो ॥ टेर ॥

खिल रहे कमल, कुमोदनि कुम्हली।
धरनि मिट्यो अंधियारो। मेहाई० ॥ १ ॥

दधिसुत शरद, जरद दिशि पूरब ।
निद्रा जोग निवारो ॥ मेहाई० ॥ २ ॥
गन्द्रप किन्नर भैरवि गावत,
खेतल अमित अखारो ॥ मेहाई० ॥ ३ ॥
धोवण नयण गंगोदक झारी,
लीधां पति-छीला रो ॥ मेहाई० ॥ ४ ॥
मुख पोंछण रेशम पट मखमल,
हाजिर इन्दर निहारो ॥ मेहाई० ॥ ५ ॥
कवि हिंगलाज दरश तव कीधां,
मानत सफल जमारो ॥ मेहाई० ॥ ६ ॥

चरजा १५ (क)

श्री बाई जी महाराज के रोगाक्रान्त दिवस पर कवि की प्रस्तुत-कुशल-याचना सूचक आकांक्षाः—

दोहा—

सुधा विभूती औषधी, सत-मुख-वचन विशेष ।
अम्ब अमी भर ओलखो, रहैं कुशल इन्द्रेश ॥

करणी कदै न कीन्हीं इतनी तूं देर आगै ॥ टेर ॥
करलै कृपा नखैली, युद्ध में तूं ही अकेली ।

जस-जीत-चीज लेली शक्ति न और सागै ॥

करणी करदैन० ॥ १ ॥

सो होय रोग सारै, करवा इलाज हारै।
उनको तूं ही उवारै जिन को दवा न लागै ॥

करणी करदैन० ॥ २ ॥

जहां राज-ध्यान ह्वै है, वहां ऊठि आप जैहैं।
लव देर हू न लइ है, बवंरेल वेग भागै ॥

करणी करदैन० ॥ ३ ॥

इन्द्रेश को अन्नदाता, महारोग मेटो माता।
खड़ आवो खुड़द खाता, जव ही मो भाग जागै ॥
आखै हिंगोल आई, दीज्यो श्री मा दवाई।
राखो खुशी सुर राई, इन्द्रेश को थे आगै ॥

करणी करदैन० ॥ ४ ॥

चरजा १६ (ख)

जोगण आवज्यो जरूर, जूंनी तेमड़ा तणी ॥ टेर ॥

हेतवां अनेक ही तो, वाहरू भणी।
आज काजइन्द्र आज्यो, दूथियां धणी ॥

जोगण आवज्यो० ॥ १ ॥

ऊठैंजु सांस सात अंग, ऊंन भो अणी ।
वृथा असाध्य व्याधि, थाई इन्द्र कैं बणी ॥
जोगण आवज्यो० ॥ २ ॥

आवड़ा मेहाई आदि जेति जोगणी ।
देखियो सुदृष्टि दिव्य, शक्ति सोगुणी ॥
जोगण आवज्यो० ॥ ३ ॥

स्वप्न मो दर्शाई सकृत्यां मुकुट जो मणी ।
विभूत चरणामृत बीच, घोठ, दयो घणी ॥
जोगण आवज्यो० ॥ ४ ॥

हिंगलाज कैंहै, रोग हरखि मां हणी ।
चामुंडा निवारि चाढ ताकवां तणी ॥
जोगण आवज्यो० ॥ ५ ॥

चरजा १७ (ग)

धजाबन्द चावण्ड शक्ति पधारो ।
अम्बा इन्दू की ताप उतारो ॥ टेर ॥

शक्ति प्रत्यक्ष न दूसरी, धरनी पै जगदम्ब ।
चावण्ड मां तव अनुचरा, ओ ही है अवलम्ब ॥
धजाबन्द० ॥ १ ॥

खास दास थारा खड़ा, आशा कर उर ऐह।
दीन दयाल पधारज्यो, धर निज साम्प्रत देह ॥
धजाबन्द० ॥ २ ॥

सुख-स्थिर राखण सेवकां, संकट-इन्द्र नसाय।
बृद जूना करि याद वढ़, मां चावण्ड महमाय ॥
धजाबन्द० ॥ ३ ॥

बगसो हाथ विभूत निज, इन्द्र-शक्ति को आप।
दया सुदृष्टि-झांकि-दृग करै सर्व सन्ताप ॥
धजाबन्द० ॥ ४ ॥

बबर जबर सजि भगवती, अवश्य पधारो आज।
अम्बा चावण्ड आपरो, लखे सुभग "हिंगलाज" ॥
धजाबन्द - चावण्ड - सकति पधारो।
अम्बा इन्दू की ताप उतारो ॥ धजाबन्द० ॥ ५ ॥

चरजा १८ (घ)

आवड माऊ आवोजी अबै। करस्यो थे तो फिर प्रतिपालकबै
॥ टेर ॥

अनुज डसत पीवण-अही, मात गई मधु ल्याण।
रवि-रथ मात भ्रात हित रोक्यौ, मौर न दरस्यो भाण ॥
आवड० ॥ १ ॥

समय अल्प नहीं कह सकूं, परवाडा अणपार ।
करुणानिधि कवि कौमरी, विनय सुणो इणवार ॥
आवड० ॥ २ ॥

रोग धूम जिमि छा रह्यो, वायु रूप धरि चाढ़ि ।
चारण कुल रो चन्द्रमा अब) छिपत-चकोरां छाड़ि ॥
आवड० ॥ ३ ॥

इन्द्र शक्ति रो आवड़ां !, शीघ्र हरो सन्ताप ।
न्याय सुधा सुर-लोक सूं, हरपि पिलावो आप ॥
आवड० ॥ ४ ॥

जग-जननी हिंगलाज री, है तोहिं शपथ हज़ार ।
खुड़द नगर सजि सिंह खड़ो, लें करनल नैं लार ॥
आवड़० ॥ ५ ॥

जगदम्ब-जन हिंगलाज रै, बिन्कुल मन विश्वास ।
अड़चन देवी इन्द की, खड़ि सिंह हणज्यो खास ॥
आवड़ ॥ ६ ॥

आरती

ॐ जय करणी मइया ।। मैया जय करणी मैया

आदित्य हूँत तेज अति आनन,

शीष छतर छइया ।। ॐ जय करणी मइया ।। टेर ।।

सोव्रण मुकुट महा अति सुन्दर, जौवाहर जड़िया ।

कुण्डल गोल लोल विहुं काना, खासा खुभि रहिया ।।

ॐ जय करणी. ।। १ ।।

वायक सत्य दगां शुभ दृष्टि, (लखि) शंकर शंकि रहिया ।

सुन्दर प्रसिद्ध जगत सो मन्दिर, बाजा वजि रहिया ।।

ॐ जय करणी. ।। २ ।।

घुरत श्रमागल अवर नगारे, तार सुतणि रहिया ।

मॅढ़ में ताण्डव करत महा अति, भैरव दुहूँ भइया ।।

ॐ जय करणी. ।। ३ ।।

चित अति क्रोध कान्ह करि चाल्यो, घेरण तव गइया ।

मारण कान्ह-कुटिल पल माँहिं, ववर जवर भइया ।।

ॐ जय करणी. ।। ४ ।।

कान्ह संहारि बीक नृप कीधो, दुष्ट बहुत दाहिया ।

तुम करि कृपा समन्द में त्यारी, निज जन री नइया ।।

ॐ जय करणी. ।। ५ ।।

आदेश्वरी अवतार अप्रणा, जगदम्ब तूं ही जइया ।

'कहै हिंगलाज' राख मां कायम, दासन पै दइया ।।

ॐ जय करणी-मइया । आदित्य हूँत तेज अति आनन,

शीष छतर छइया ।। ॐ जय करणी मइया ।। ६ ।।

★ श्री इन्द्र-कला-प्रकाश ★

(द्वितीय)

दोहा—

आखी कीरति हूँ अवल, शक्ति जका देशाण।
अवतरि ऐही आविया, जगदम्बा जोधाण ॥ १ ॥

सुकव्यां छव्यांहित शक्ति, आय लियो अवतार।
कीरति ज्यांरी अब कहूं, उक्त्यां रै अनुसार ॥ २ ॥

—छन्द मोतीदाम—

करूं प्रण मैं घण आदि शक्ति।
अनुचर जाण मो देहु उक्ति ॥
धिनो पुर खुर्द धरा जगदम्ब।
लियो अवतार जहां भुजलम्ब ॥ १ ॥
तिकां रतनो-कुल सागर-तात।
महामिण रोहड़ धापु जु मात ॥
समत्त गुनी सैंह चौसठ साल।
सुमास अषाढ़ ऋतु वरपाल ॥ २ ॥
जयो तिथि नोमिऽरु उज्ज्वल पाख।
सको रवि चन्द भरैं सुर साख ॥

Jogi Baru

समैं घण मंगल शुक्करवार।
भयो अवतार भू टालन भार ॥ ३ ॥
घणी दिव्य पोतऽरु स्वच्छ रंगील।
रही खुलि राज रे शीश मंदील।
उपै थिन्दलीज सिन्दूर जु अंक।
मनो सरदी तिथि तेज मयंक ॥ ४ ॥
करैं दुहुकान जु ग लू प्रकाश।
जकी वह लाल सुतेज उजास ॥
झुरै जगदम्ब जु ग्रीव जंजीर।
सुशोभित मूरति इन्द्र शरीर ॥ ५ ॥
महाऽरुण रेशम कोट कमीज।
रह्यो रंग तापैं रातम्बर रीज ॥
सदा सुछि धारण धोवति श्वेत।
हर्यो रंग रेशम मोचड्यां हेत ॥ ६ ॥
जरी घण मोल हु को जु जराव।
परे मनो आय उड्गन पाव ॥
सको सब भूषण ब्रह्म समान।
भयो यह रूप मय भगवान ॥ ७ ॥
मृडाणि जितेन्द्री देव्यां सिर मोड़।
करैं सुर वन्दन तैतीस कोड़ ॥

भवानी ये आवड़ रूप भजन्त ।
जनों सुर-वृन्त ते पुष्प झरन्त ॥ ८ ॥
धिंनो धिन मात श्री दिव्य स्वरूप ।
विनय करि आवत सृष्टि के भूप ॥
नमो इन्द्रेश, गरीबनिवाज ।
गुणैं गुण आप तणां हिंगलाज ॥ ६ ॥

सवैया—

साल अठ्यासि गुनी सै के विक्रम,
जेष्ठ सुदि तिथि दूज सुहाई ।
मंगलवार समैं अति मंगल,
थान खुड़द मो उत्सव थाई ।
मूर्ति सुथापण मेह-दुलारि की,
आवड़ आदिक ईश्वरी आई ।
वेर उणां कर लेय कुवेर की,
बांटि विभै घण इन्द्र बधाई ॥ १ ॥

दोहा—

श्री मेंद हाज़िर सांझुँटा, न्हालैं खड़ा नरेश ।
आवैं करवा तप इतैं, आनंद कन्द इन्द्रेश ॥ २ ॥

(छन्द त्रोटक)

सुर पेखि छटा दिव्य होत सुखी।
दृग देखि के चाल गयन्द दुखी ॥
भृत रत्तक बाहु दुहूं हलिकैं।
महा मूर्ति माँहि वृत्ति मिलिकैं ॥ १ ॥
जपणैं दिव जाप बिराजत हैं।
सब वस्तु सु-ज्योति की साजत हैं ॥
हुय धूपिया ज्याति उद्योत हुवैं।
दिव आवड़ रूप के पास दुवैं ॥ २ ॥
शुचि व्यंजन कई समर्पत हैं।
अरु आसव दाख अरप्पत हैं ॥
तरणाट हुवैं फिर तन्त्रन का।
बहु छाजत चित्त वजंत्रन का ॥ ३ ॥
घण नोपत घोक नगार घुरैं।
कुसुमाण झड़ी सुर वृन्द करें ॥
किधो-गंधर्व किन्नर गान करैं।
धनि दाखि किधो मुनि ध्यान धरैं ॥ ४ ॥
पट वर्ण किधो कर जोड़ि खड़े।
दखि दैत्य धुजा दण्ड खोह दड़े ॥
बहु भीड़ खुड़द कविन्दन की।
धुनि गुंजत मन्दिर छन्दन की ॥ ५ ॥

"जय आदिऽरु मध्यरू अन्त जयो ।
छिति ऊपर तो यश स्वच्छ छयो ॥
त्रिपुरघ्न स्वरूप नमामि तुझे ।
भुवनेश्वरी माँ जु प्रलंब भुजे ॥ ६ ।

तृष्णा त्रय नैत्र तू है तुतला ।
शिव विष्णु हरि हिय तू सुकला ॥
भसमासुर आसुर शुम्भ -बली ।
तिन पै करि नैत्र तूं रक्त चली ॥ ७ ।

महिषासुर रक्तऽरु चाण्ड मय ।
करि क्रोध हिये किये आप क्षय ॥
कर खेंचि लुलाय की जीभ कढ़ी ।
बड़ देव कही तू बड़ा हूँ बड़ी ॥ ८

छकि छाक हुँ नैन रही तू छती ।
भइ बात सुबात यें हाथ बती ॥
जग जीतहिं को तुम जीत लये ।
भणि 'इन्द्र-जय' अति हर्ष भये ॥ ९

किये दैत्य क्षय तैं कृपाण चला ।
विबुधा यश गात है 'तूं जो भला' ॥
अजकै उरवेद है तूं अजया ।
भलि नाम सुनाम है तूं विजिया ॥१०।

पर ब्रह्म स्वरूप की तू प्रकृति ।
सिद्धि अष्ट तू ही निधिनो शकति ॥
प्रतिपाल छत्राल है तू प्रगला ।
भुजलम्ब ब्रदाल है तुं सबला ॥ ११ ॥
चक्रेश्वरी ईश्वरी तूं चपला ।
महमाय,, मलाह, तू ही नृमला ॥
करुणानिधि कौशिकी तूं कमला ।
चँदू चाँवँड चालक अचला ॥ १२ ॥
धनि माँ अन्नपूर्ण है धमला ।
मनसा-बहरि, तूं शिवा, मंगला ॥
रमि रुप स्वरुप तुँही है रती ।
जग जाहिर है तुँहि काछ जती ॥ १३ ॥
भूतापालक, सालक–दुष्ट–वृति ।
कविराज गरीब निवाज कृति ॥
महमाय मृडाणिऽरू तूं कुमख्या ।
शिशु वृहस्पति रत्तक, यत्त भख्या ॥१४॥
जुमवाय, गीगाय तूंही है रिधू ।
सिद्धि सैणल राजल तूं है सिधू ॥
समरायऽरू जीण है तूं शक्ति ।
रहै रास हिंगोल ही तूं रचती ॥ १४ ॥

हुय मात प्रसन्न हिंगोल हली ।
थिर थापण थान सुथान थली ॥
पुनि आवड़ रूप तूं है प्रकटी'
करि कोप चढ़ी मृगधीश कटी ॥ १६ ॥

इक दैत्य हत्यो वड़ आय हुकैं ।
लखि लाल धुजा शिशु शुक्र लुकैं ॥
धर जंगल आ प्रकटे दुसरां ।
गिर राय महा कवि मेह घरां ॥ १७ ॥

करणी ह्वै केहरि कान्ह हण्यों ।
भृत-बीक नरेश बीकाण बण्यों ॥
गजराज जु शाह उदधि गह्यो ।
बृजराज ज्यों कीत वैल वहो ॥ १८ ॥

भृत जानि दुखी अवतार भयो ।
दुख दासन को सब दूर गयो ॥
ब्रह्मचारिणी बाल ब्रंह्मा ब्ररणों ।
सुर कोटि तैंतीस जकां शरणों" ॥ १६ ॥

जगदम्ब जितेन्द्रिय सो जग में ।
अवलोकि सुदर्श खुशी अब मैं ॥
ह्वै देव प्रसन्न सुदर्श हैलैं ।
चख-हीन लहैं दृग, पंगुलचैं ॥ २० ॥

बुद्धि-हीन कवि गुणवान वर्णों ।
शुद्ध शब्द सदा मुख मूक भणों ॥
कदमा शिशु होत न कष्ट कदा ।
सिद्धि अष्ट रहैं नव निद्धि मदा ॥ २१ ॥
सुखपावतिको यह छन्द सुनैं ।
कहूँ व्यापहिं कष्ट न ग्रांच उनैं ॥
करि पाठ सुवह अति धूप खिवैं ।
धज-बन्द जकां अभै दान दिवै ॥ २२ ॥
सुख दायक छन्द सु-भक्ति भरया ।
कर जोड़ कवि 'हिंगलाज' करया ॥
सुकवि मम अर्ज सबै सुनिये ।
गण दोप प्रभृति तुम्ही गुनिये ॥ २३ ॥

दोहा

मैं मति सारूं मात रा, भाख्या छन्द विचार ।
इमैं भूलि कछु होय तो, सुकवि देहु सुधार ॥ २४ ॥
करै हँस पय नीर कढ़ि, आछै दूध अन्दाज ।
कवि किंकर के काव्य को, करहु शुद्ध कविराज ॥२५॥

कवित्त—

रामेश्वर, द्वारिका, प्रयाग राज, कुरुक्षेत्र,
बद्री जगदीश, हिंगलाज को परसबो ।

गंग की तरंग में उमंग करि न्हावो अंग,
काशी, कल्पवासी जैसे मन में हरपवो ।
आबू, गिरिनार, हरिद्वार, पुनि पुष्कर को,
गैया गुन गाग सम आनन्द सरस वो ।
अम्ब का उपासक को तीरथ वृतादि फल,
तारण-तरण देवी इन्द्र को दरसवो ॥ १ ॥

दोहा— करणी प्रकटी करि कृपा धरणी कन्यां विशेष ।
धरणी पै देखो दृगां, हरणी दुख इन्दरेश ॥

(भुंजग प्रसात)

शुम्भा निशुम्भादि राक्षस नसाणी,
तिहूँ लोक त्राता विधाता बखाणी ।
सकन्यां तणी जो बणी कान्ति सारी,
धिनो मात इन्द्र ज सिन्धू दुलारी ॥ १ ॥
मती लोग यामें रती भूट मानो,
जनन्नी करन्नी तणों रूप जानो ।
धिनो देश मारू जहां देह धारी,
धिनो मात इन्द्र ज सिन्धू दुलारी ॥ २ ॥
दृगां जोग निद्रा दुहूँ वेर धारैं,
सदा खुरद रै थान संज्यां संवारैं ।

कहैं छन्द श्री मुख्ख आनन्द कारी,
धिनो मात इन्दू ज सिन्धू दुलारी ॥ ३ ॥
महा मोदरा बोध देही न मांवैं,
जरां बाद अम्बा ज धूप्या ज चावैं ।
सज्यां घृत मेवाऽरू सामग्रि सारी,
धिनो मात इन्दू ज सिन्धू दुलारी ॥ ४ ॥
हुवां जोत उदद्योत आनन्द आवैं,
चखां न्हाल कै टाल मेवा जचावैं ।
तवै जोत अर्पे सबैं जो तय्यारी,
धिनो मात इन्दू ज सिन्धू दुलारी ॥ ५ ॥
चखां शक्ति पेखी वलिदान छत्ती,
मनो भिन्न मानी विरानी अमित्ति।
भई शीघ्र विक्राल त्रिक्काल भारी,
धिनो मात इन्दूज सिन्धू दुलारी ॥ ६ ॥
सुरायो नाद ज्यों नारि को साद साझो,
मुवो हाल हूंता करी भाल माजी ।
भई मात औ बात विख्यात भारी,
धिनो मात इन्दूज सिन्धू दुलारी ॥ ७ ॥
बड़ी नीमरानां तणीं हेक बाई,
सुणी हूँ विहूणी पगां हूँ सदाई ।

दिया पात्र जाकों दया आप धारी,
धिनो मात इन्दूज सिन्धु दुलारी ॥ ८ ॥
घणों पेट मोटो इन्दु जोगणी को,
दियोदण्ड गैढ़ा कलां का धणी को ।
कवि कीर्ति कृती तूं कला अपारी,
धिनो मात इन्दूज सिन्धू दुलारी ॥ ६ ॥
दया नाथ रा साथ रा देव धाप्या,
कलू कालरा न्हालता बाल कांप्या ।
चढ़ी सिह की पीठ दीखी छटारी,
धिनो मात इन्दूज सिन्धू दुलारी ॥ १० ॥
घणी गंग का अंग में खेद गामीं,
थज़ी राव की भीड़ हो पीड़ थामीं ।
पृथ्वीनाथ रा हाथ लम्बा अपारी,
धिनो मात इन्दूज सिन्धू दुलारी ॥ ११ ॥
फतै सिंह श्रीमान आसोप स्वामी,
जको धोक देतां लख्या लोक जामी ।
दयो पुत्र जाकों वड़ो भाग्य धारी,
धिनो मात इन्दूजु सिन्धू दुलारी ।
हूयो सैण को पूत नैना विहूंणों,
हुयो येम अन्धो ज दूजौ न होणों ।

दिया चक्षु दोनू दया मात धारी,
धिनो मात इन्दू जु सिन्धू दुलारी ॥ १३ ॥
धरी मात देशाणरी आण देही,
किया थे प्रवाड़ा नया सृष्टि केई ।
बड़ी बात श्रीमात करनी विचारी,
धिनो मात इन्दू सिन्धू दुलारी ॥ १४ ॥
घणी कीर्ति तेरी जु हिंगोल गावै,
चण्डी दर्श तोरे सदा दास चावै ।
घणी थे रखाज्यो कृपा शीश भारी,
धिनो मात इन्दू सिन्धू दुलारी ॥ १५ ॥

अब इण देवी इन्दरा, करूं सरल वाखाण ।
आसत भापत जग अजूं, मेहाई सामाण ॥

चौपाई—

संहारि बीक नृप कीनों, सो जगदम्ब जन्म फिर लीनों ।
वत धापू रै जाई, कुँवरि-रत्न सागर ने पाई ।
गुनी सै चौष्ठ पंचारा, शुचि सुदि नौमि शुक्र शुभवारा ।
। नक्षत्र समय संच्यारी, बाई रिधू फिर खुड़द विहारी ।
पोशाक अंग अति फावैं, तेहि सुर सुरत पेखि रहे तावैं ।
नाम सुदेह कहावै, संकट स्वजन विकट नसावै ।

मानहु प्रकृति शकति विमला सी, कान्तिलुवैमुख श्रीकमलासो।
तप निधि शक्ति अपरणां तोलै, वचन महेश जेम सचु बोलै।

दोहा— इन्दु रूप आदीश्वरी, मँढ पुर-शक्र समान।
बुध्रि मम बगसी भारती, सो करहुं सुजन दे कान ॥१॥

दीरघ अरुण मन्दिर धुज सोहैं,
मन जन मील परै लखि मोहैं।
रज चरणां धरि शिर हरषावै,
आनन्द प्राप्त होत मँढ आवै।
आदू थान सुमँढ अगारी,
वांदरवालि खुबै जहँ भारी।
द्वारपाल भैरव दुहू भाई,
सिंह भुज अष्ट चित्र सुखदाई।
द्वार दुरग मानहू देशाणों,
झांकत जेहं पूरब दिशि जाणों।
वन्दि चरण मन्दिर हूं भाल्यो,
नैन खोलि हिय सोच जुन्हाल्यो।
इन्दर भवन अलौकिक शोभा,
सो छवि देखि सुजन मन लोभा।
तांहि नजीक तेमंडै राया,
हाजिर इन्दर मन्दिर ह्वै ल्याया।

दोहा—

ऊठ सुबह करि याद अति, बन्दन करत विशेष ।
भवन सुथारी खोलि भुज, दरशैं जँह इन्दरेश ॥ २ ॥

जहाँ वृत्त जाल श्री हाथ लगायो,
छोटड़ि येजु खेजड़ो छायो ।
चारु कनीर चौक मँढ भारी,
पुहुप सुरंग अनेक प्रकारी ।
तहाँ इक टांको नीर तणो रो,
वारि जैण सब भांति भलेरो ।
वीर-घण्ट शोभित मँढ आगै,
वाज्यां जैण असुर दुरि भागै ।
तेहि करनाच समुंद में त्यारी,
हूँ जेह मन्दिर खुड़द निहारी ।
मानहु मूर्ति सुरत मेहाई,
सो मूरति जैसाण बणाई ।
शोभित छत्र शीश विरदाली,
शोभा है सब जग हुँ निराली ।
सोवण कलश सिंहासन सौहैं,
कीरत जेण भणैं कवि को हैं ।

दोहा—

प.त कपाटां फूटरा, चित्र सुचएड्या केर।
कुंवरि अनूप करावियां, (सो) पाय पांव उणवेर ॥३॥

इण मँढ़ करण इन्दर तप आवै,
सुर लखि सुरत पुहुप वरषावै।
भक्ति-निधान भवा जिमि आयी,
जग फिर विरद उजालन आइ।
निरमल नयणा मूर्ति निहारै,
पग पग प्रणमि श्री मन्दिर पधारै।
सनमुख मूरति शक्ति विराजै,
आवड मनु हिंगलाज अन्दाजै।
भूण्या जचि दुये हाथ धुपेड़ा,
जो जगदम्ब खुवै चित्त जैड़ा।
आहुति देत प्रथम घृत आई,
प्रकट जोति हुतां प्रभुताई।
मद मेवादिक अधिक मंगावैं,
अरपि सुजोति अति हरषावै।
जोतीश्वरी मधि-जोति लखावै,
गुण करि दरश इन्दर उण गावै।

दोहा—

सुन्दर कर रुद्राक्ष की माला खुवत अमाप।
धरि हग मुद्रा उनमनी, जपत अजप्पा जाप॥ ४॥

भजत शकति ऐसे भुज बीसा,
जनु ध्रुव ध्यान धरत जगदीशा।
करत योग लखि कपिल बड़ाई,
सब सुर हूँ तै अधिक सुरराई।
घुरत त्रमागल मँढ गरणावै,
मानहुँ भादों घटा घुमड़ावै।
तणित तार तन्त्री तरणावै,
झालर वीर घण्ट झरणावै।
वीणादिक बाजत मँढ भारी,
छवि सुरलोक समो मँढ छारी।
बदन चन्द अरु वारिज नैणी,
करत सुरागनि कोयल बैणी।
पाय दरश सेवक सुख पावै,
करत चमर भूपति हरषावै।
कवि कर जोड़ि कृतै कृति केती,
जो जगदम्ब खुवैं अंग जेती।

दोहा--

ज्योति रूप जोतीश्वरी, सूरज अधिक समान।
आप स्वेच्छा अवतरया, धनि धनि भक्ति-निधान ॥५।

विमल सुयश जिहं वेद बखानी,
सो जग में हिंगलाज भवानी।

करण निरत उण आत निकेता,
साता दीप मृडाणी समेता।

जो फिर जनम लयो जग त्राता,
मामड़ सुकवि तणैं घरमाता।

आवड़ नाम नमो उण अम्बा,
जो जन रक्षक अति जगदम्बा।

बात बड़ी जँह मात विचारी,
नाजुक जानि जमानू भारी।

अवतरि वहै नेह घर आई,
करनल नाम शक्ति कहलाई।

जॅह कर थप्या अधिक रजवाड़ा,
गावत गुण उणके गढवाड़ा।

करनल सो भव नाम कहाया,
अवतरि फेरि जका जग आया।

दोहा—

आनंद कन्द उण अम्ब को, नाम सुंदर इन्दरेश ।
अब इण पावां आ अजू, नावत शीश नरेश ॥ ६ ॥

जय जय जयति जयति जगदम्बा,
आदीश्वरी आदिक तुंही अम्बा ।
तूं तिहुँ देव तणी महतारी,
सृष्टि सर्व तूं सिरजन हारी ।
लख-नव तूंहि लोवड़ वाली,
छपन कोटी चावण्ड छत्राली ।
जोगनि चोष्ठ तूंहि जग जामी,
निधि-नव-अष्ट-सिद्धि तूहि नामी ।
कामुख्यादिक तूं ही काली,
बीस हथी तूं ही त्रिग्दाली ।
तंत तुही जिव मात तणेरी,
गावत वो श्रुति नेति घणेरी ।
मातु मृडाणि तूहि महमाया,
रूप अनेक तुही दरशाया ।
गर्व तूही असुरा उर गालै,
पूरण-भक्त तूहि प्रतिपालैं ।

दोहा—

आप कृपा हू ओलखैं, प्रभुता भक्त-प्रवीन।
लखि अति मानहु फूलकी, सुगन्ध अली स्वाधीन ॥७॥

घड़ियां पांच पछैं घटियाली,
ध्यान सुजागृत करत धुजाली।
दृग दुहुं खोलि धोक अति देवैं,
तोय पवित्र हथेली लेवैं।
श्रीमुख उच्चरि सुयश अजि छन्दू,
आखा ऐकी लेय कर-इन्दू।
तन धन अन मन मूर्ति पैं वारैं,
श्रुति कहैं जेम योग अनुसारैं।
पाणि विलन्द हुतैं ह्वै पाणी,
अरपत उतमंग प्रति अप्रमाणी।
जो जल बूंद सुजन अंग लागै,
विकट रोग पातक दुख भागै।
'धनि' भणि आत सुमँढ द्वारैं,
नयण अमी भरि सुजन निहारै।
वर्ण पट आय नमैं उण वारी,
धनि धनि भाषत समुद दुलारी।

दोहा—

पलक ध्यान वेदा पुण्यो, कलप अनेक समान।
जाप शकति अति पुञ्ज जपै, समझहुँ सुजण सुजांन ॥८॥

कविकी—

दरशण करि धजवन्ध का, दे अति पावां धोक।
आ मँढ हूँ अवलोकियो, (हूं) शकति तणों सतिलोक॥६॥

प्रथम वृत्ति उत्तर दिशि प्रेरी,
सुन्दरता लखि दृष्टि घनेरी।
कूप द्वार नजदीक करायो,
सरिस सिरी जल सो सरसायो।
उण वन को यह है अधिकाई,
पीवत रोग परै हुई जाई।
'भगवति-भवन' बुर्ज पै भारी,
तहँ अति रहत प्रसन्न महतारी।
भवन नजीक पुहुप की वाड़ी,
जो अति भांति रही खिलझाडी।
सजल स्वच्छ पुहुप सुहावै,
षट्पद वृन्द सुगन्ध लुभावै।
बुर्ज पछिम उत्तर दिशि आई,
नामी दुरग समान वनाई।
दिशि दच्छिण की तांहि अन्दाजै,
छवि उण हूंत कोट अति छाजै।

दोहा—

अधिक वणाई ईश्वरी, निज जन हेत मकान।

आय सुजन उतरैं उठै, सरव मिलैं सामान ॥ १० ॥

जाहुँ नजीक हवेली जानो,
तँह काफी इन्तजाम जनानो।
तांहि समीप श्रीमातु रसोई,
जो सब भांति भली हम जोई।
सुन्दर महल रसोई सहारै,
करन निरत जहँ शक्ति पधारै।
"करणी-भवन" जो नाम कहावै,
भाखि न सकूं लख्यां बण आवै।
सुन्दर टांको द्वार सुहावै,
वरषा वारि हु तैं भरवावै ।
बुरज दखिण नहीं कोट बनाई,
कारण कवन लख्यो नहीं जाई।
बात जकी जु मोर मन भावै,
सो सहि जाय न, को कहि जावै।
विमल सुयश इन्दु को भाख्यो,
देख्यो जैस दृगां हूँ दाख्यो ।

दोहा—

सुखदायक मानहुं सुधा, कथी येहु हूँ कीति।
कान-पान जेह करेहु जन, प्रेम अधिक अति प्रीति ॥११॥

छित अति राज प्रवाड़ा छाया,

दाखि सकूंन, दगां दरशाया ।
आढ़ी, चिमन, दरश हित आई,
भक्ति विमल जाकूं बगसाई ।
गुण हीरां पूगी मँढ़ गाती,
लकवा रोग हुँतै चिकलाती ।
काढ्यो रोग विकट उण माता,
धनि धनि शक्ति सुजन सुखदाता ।
'इन्दू नाम' इक राज कुमारी,
बगसी शक्ति भक्ति जेंह भारी ।
नरियन्द 'गंग' रोग अंग नामी,
दैवगति वैद्यन लखि धामी ।
दीरघ औषधि रोगन दाख्यो,
कर इण बगसि वभूति काढ्यो ।
शक्ति सुग सिर मौर लखाया,
गुण "हिंगलाज" जोड़ कर गाया ।

दोहा ।

आती मिरगी मों अजू, हुत्तो अधिक बिहाल ।
पल में मेटी आफता, सो, दग लखि दीनदयाल ॥१२॥

सुणहु सुजन सब सकति उपासी,
नमो इण चरण मात अविनासी ।
जो नव-रात खुड़द मँढ जावै,

पुनि प्राचीन दरश अति पावै ।
बड़ अघ धुपत त्रिवेणी न्हायां,
पाप कटैं दर्शन इण पायां ।
प्रान्तांत मोच्च धाम चहुँ पेख्यां,
सुरत मूर्ति-जोति सोहि देख्या ।
आशा-रहित भक्ति येहुँ भारी,
है तिहुं ताप नसावण हारी ।
जब तिल जोग यहु नहिं भूंटी,
देत सो रंज धन्वन्तरि बूंटी ।
सकृति बड़ापण अति दरसायो,
जिमि खगपति बायस समुझायो ।
अरिया गाथा हूंत प्रवञ्चा,
सार सार भाखै यहु रञ्चा ।

दोहा ।

सुयश सकृति साम्प्रत सुण्यो, मन्दिर खुड्द मझार ।
काव्य विमल हूं गान-कृत, आनन्दित अणपार ॥ १३ ॥

चरजा १ (राग-विहाग)

अम्बे जी औरूँ आय लियो अवतार ॥ टेर ॥
शुम्भ निशुम्भ आदि महिपासुर, हैं ये करन संहार ।
सुरपति की राखी थिर सम्पति, सो, भुजलम्बे घण वार ॥
अम्बेजी ॥ १ ॥

गंढे खुड़द गांव गढवाडै, मरु धर देश मझार ।
जागावत-धापू रे जनम्या, शरणाई साधार ॥
अम्बे जी० ॥ २ ॥

जगत उजागर श्री जगदम्बरी, इन्दर नाम उदार ।
हित आमत, नासन को हरिया, भूमि उतारण भार ॥
अम्बे जी० ॥ ३ ॥

झांकि सुदृष्टि करै जगदम्बा, परवाड़ा अणपार ।
काटैं रोग विकट केतां रा, साख भरै संसार ॥ अम्बे. ॥४॥
सुमरो सुजन सुकवि इण सकती, दिन रजनी चित-धार ।
कह हिंगलाज मिटैला संकट, इण चरणा आधार ॥
अम्बे जी औरूँ आय लियो अवतार ॥ ५ ॥

तरजा (७) दोहा ।

धन्य छवि इण मन्दिर तणी, धनि प्रभुता धजचन्द ।
अधिक धन्य है आपको, आनंद कन्द मा इन्द ॥
खुड़द री राय खमा घणा थानै, मोटा महीप वड़ा हू वड़ी
मानै ॥ टेर ॥

जनम्या आप उजालन जग में, इद निज राज ! बढानै ।
भुजबल जोय रावरो भारी, शक्र शिशु सकुचानैं ॥खुड़दरी॥१॥
तिरिया वांझ कई तव किरपा, ललना गोद खिलानै ।
नासति समय आसति नैणा, धज चन्द खूब दिखानै ॥खुड़दरी॥

करुणानिधि करुमा-रज केरी, जग सकलाई जानै ।
रोग्यां रोग मिटै जेंह परस्यां, होय सुखी हरषानै ॥खुड़दरी॥
थवरी वेर शक्ति कई आगै, समझाया सवला नै ।
करतव लाज सेवकां केरी, मा इण इन्द्र जमानै ॥खुड़दरी ॥
थाई इन्द्र रावरी प्रभुता बालक केम वखाणै ।
यह 'हिंगलाज दान' जागावत, चिरजा-भेंट चढ़ाणै ॥
खुडदरी राय क्षमा थानै, मोटा महीप वड़ा हू वड़ी मानै ॥

चरजा (२) दोहा ।

अवतरि औरूं आविया, गांव खुड़द घंटियाल ।
मन कर चिन्ता तूं मती, लखि लोपण कलिकाल ॥
मनुप तन धारि महमाया, हरण दुख सेवकां आया ॥टेर॥
४ ६ ९ १
वेद ऋतू ग्रह भव विमल, सम्वत इण सुरराय ।
साढ़ शुक्ल नवमी शुकर, अवतरिया जग आय
घणा गुण देव मिलि गाया ॥ मनुप तन धारि० ॥१॥
गढ़वाड़ा गैढ़ा तणी, कवि गण वरणैं कीत ।
सुर-तिय आ सुरलोक सूं, गाया मंगल गीत ।
महा मुनि शारदा भाया ॥ मनुप तन धारि० ॥ २ ॥
त्राता जग करणी तणैं, भारी मॅढ सुरजाल ।
इन्द्र पधारैं ईश्वरी, करवा जप तिहुँ काल ।
असुर तप देखि अकुलाया ॥ मनुप तन धारि० ॥३॥

शुंभ निशुम्भ का साथ में फाका जितनी फौज ।
थिर अमरा पुर थापियो, दल उण शक्ति दनौज ।
सो ही हैं इन्द्र सुरराया ।। मनुप तन धारि० ।। ४ ।।
संकट अधिक नसाविया, अवतरि जग में इन्द ।
हरयो तिमिर तिहुं लोक रो, चारण कुल रै चन्द ।
चकोरां कीन्ह चित-चाया ।। मनुप तन धारि० ।।५।।
आसति लखि 'हिंगलाज' अति, वन्दे कदम विशेप ।
गांव सरब गढ़व्यां तणैं, इण विरियाँ इन्दरेश ।
छत्र री छाजैंला छाया ।।
मनुष तन धारि महमाया, हरण दुख सेवकां आया ।।६।।

चरजा (४)

इन्द्रबाई आये कृपाकरि आप, बड़ापण राजतणूं भारी ।।टेर।।
पाप कोऊ प्रकटयों मों पिछलो, मैं मति भयो जु मन्द ।
मा मन बिल्कुल कुटिल हमारो, भूल गयो धजवन्द
फेर तब किरपा अणपारी ।। इन्द्र बाई० ।। १ ।।
अम्बा रेल उलांघतां हे, पड्यो रपट में पाव ।
उण विरियां मों ईश्वरी, बिल्कुल हो न बचाव,
करी तुम खासा रखवारी ।। इन्द्र बाई आये० ।।२।।
याद कियां विण मो अजू, जी अम्बा करी उवेल ।
जन की मूर्छा जगी न जब तक, रही ठौर डट रेल,

ब्रहुत विधि जब हौं बलिहारी ॥ इन्द्र०॥३॥
गज तारण कारण हित गोविंद, आये गरुड़ उड़ाय ।
आतुरता भारी लखि इन्दू, रहे हरी बतलाय
अधिकता बड़ां-बड़ी वारी ॥ इन्द्र बाई० ॥ ४ ॥
नासति मात जमानां मांहीं, आसति आप अपार ।
कीन्हां आप प्रवाड़ा कैता, सकति बड्यां अनुसार
छिति यश छाय रह्यो भारी ॥ इन्द्र बाई० ॥ ५ ॥
देखि ध्वजा मन्दिर अति सुंदर, असुर भगैं अकुलाय ।
विकट शक्ति भक्ति लख जनकी, संकट रहे नशांय,
कीरति कवि गाय रहे थारी ॥ इन्द्र बाई आये० ॥६॥
अनुचर तव नानाणां वालो, गावै गुण 'हिंगलाज' ।
माता बात करी घण मोटी, इण थिरियां में आज
भयो यो परवाड़ो भारी ॥ इन्द्र बाई आये० ॥७॥

चरजा (५) रागः-भैरवी

अम्बा हे गढ़ मानहु स्वर्ग बमायो ।
सो सह शकति सरायो ॥ अम्बा हे० ॥टेर॥
दिशि पूरब झांकत दरवाजो, कोट तणों करवायो ।
ऊँचा पण देशाण अन्दाजै, लोयण भोय लखायो ॥अम्बा॥
बुरज उतर वारी पै भारी, 'भगवति-भवन' बनायो ।
ताहि नजीक सरिसतूं कूवै, श्री जल सो सरसायो ॥अम्बा॥

करण निरत मँढ के नजदीकी, चारु महल चुणायो ।
द्वार जिकण नांवूं शुद्ध आंकां, 'करनल' रो लिखवायो ॥
अम्बा हे गढ० ॥

कीर्त्ति सुकवि गढ़ की को बरणे, पार न को अजु पायो ।
आसति छवि अवलोकि दृगां उण, नाक घणों सिरनायो ॥
अम्बा हे गढ० ॥

उण मूरति सूरति उण आगें, हौं गुण गा हरषायो ।
कह 'हिंगलाज' कृपा करि केता, संकट विकट नसायो ॥
अम्बा हे गढ मानहु स्वर्ग बसायो, सो सह शक्ति सरायो ॥

दोहा—चरजा ६

समत गुनी सै त्रेसटयां, साणिक पुर सामान ।
शुकल पक्ष आसोज में, श्री हिंगलाज सुथान ॥
अम्बा मोरी श्री हिंगलाज सुथान, भई नव-लाख भेरीजी टे
कुमख्या, धमला, कौशिकी, गिरिरमणी गीगाय ।
बिरवड, आवड, बैचरा, सब आई, सुरराय ॥भई नवलाख.
उमगि पधारी दिवस उण, जग जेती जगदम्ब ।
नयण गुलाबी करि नसो, आदीश्वरि मय अम्ब ॥भई नव०
राजल करणी हर्ष-हियै, चन्दू अरु चामुण्ड ।
सिन्धु सुतादिक ईश्वरी, जुडी अखाडै झुण्ड ॥भई नवलाख०
कर जोडि र भैरव कही, बीस-हथी सुन बैन ।

पात प्रबल दुख पा रहे, दुष्ट लगे दुख देन ॥भई नवलाख०
भैरव की सुन वीनती, हुकुम दियो हिंगलाज ।
'आवड़ जावहु अवनि पे, करन सु सेवक काज ॥भई नव०
आवड़ इमि मुख आखियो, 'गवन करूं किन गेह ।'
कहो जेम तुम, मैं करूं, धरहूं मानुप देह ॥ भई नवलाख०
गोड़ाटी गेढ़ो–खुडद, मुरधर देश मझार ।
सागर रतनू रे शक्ति, आप लिवो अवतार ॥भईनवलाख०॥७
जागावत धापू–जननि, उणरो तप्प अछेह ।
जाय जनम लेवो जकां, देवल री वह देह ॥भई नवलाख.॥८
समत गुनी सै चौसटैं, साढ शुकल शुभ जान ।
हुकुम लेय हिंगलाजरो, आवड प्रकटी आन ॥भई नवलाख.॥९
श्रेष्ठ महासुख सम्पदा, विगसत कर्‌यां विशेप ।
जागावत हिंगलाज रै–रक्षक मां इन्दरेश ॥भई नवलाख.॥१०

चरजा ७

इन्द्र सुन लीजियो अरजी, मया कर भक्त पर मरजी ॥टेर॥
आशा तोरी अधिक, खासा करज्यो खैर ।
वासा मारिग मत वसो, मासा करज्यो म्हैर ॥इन्द्र सुन॥१
सागर–दीह, इन्दर सकति, आगर–गुणां अपार ।
आखर भूंडा कर अलग, लांगडियों ले लार ॥इन्द्र सुन॥२
बालक की साथी बनो, मालिक हो महाराज ।
चालक चढज्यो चारणी, कालक ज्यूं करि काज ॥इन्द्र सुन॥३

हरो दुक्ख हिंगलाज रो, भरो डिग्ग जिमि भान ।
धरो ज्ञान मो देह में, करो सर्व कलियान ॥
इन्द्र सुन लीजियो अरजी, मयाकर भक्त पर मरजी ॥४॥

चरजा ८

अम्बा मोरी खुडद अति अधिकाई, जठै साम्प्रत रमै सुरराई।टे.
सुरतरु जेम भवन सुशोभित, जाल्या अनोप जडाई ।
अन्दर निज मन्दिर इन्दर रो, सुन्दर बहुत सजाई ॥अम्बा॥
मन्दिर जडित कंचन माणिक, घण तसवीर लगाई ।
तामें नवलख नृत्य करत है, इन्द्र फिरत उमगाई ॥अम्बा॥
त्रिविध प्रकार बजत कई बाजा, झालर प्रिय झरणाई ।
ताल शङ्ख बजत अति सुन्दर, तार तेज तरणाई ॥अम्बा॥
उक्त छन्द तणी नहिं जाणूं, सकति उकति बताई ।
कवि हिंगलाज कहै कर जोड्यां, माफ गुना फरमाई ॥अम्बा॥

चरजा ६

इन्द्र मा आईजी करन सेवकां सहाय ॥ इन्द्र मा ॥ टेर॥
जागावत धापू की जाई, आदि सकति मा इन्दर आई ।
महर करो मो पर अब माई, कीर्ति कथाईजी ॥ इन्द्र मा॥
दुष्ट उखालन क्रोधहि धार्यो, मात नृपति गैढा को मार्यो ।
सेवक को तुम काज सुधार्यो, आप सुरराईजी ॥इन्द्र मा०॥
करनल जेम प्रवाडो कीन्हो, जीवदान, विसनेस को दीन्हो ।
लाज राखि अम्बा जस लीन्हो, आप घर आईजी ॥इन्द्र मा०॥

जपियो जाप जाट-सुत-जायो, गमियो माल प्रत्यक्ष लधायो।
पार नहीं तेरो कोइ पायो, भँवरहिं बाईजी ॥ इन्द्र मा०॥
कर जोडिरे अब विनय पुकारो, चारण कुल सब ज्ञान विचारो।
दृढकर—नेम इन्द्र को धारो, मानि निज माईजी ॥ इन्द्र मा०॥
आश करे हिंगलाज अमाता, वचन प्रत्यक्ष करो विख्याता।
शुभ दृष्टि झांको अन्नदाता, महर फरमाईजी ॥ इन्द्र मा०॥

चरजा १०

देह नर देव कहावै, सा, ज्यांरा दरश किया अघजाय ॥टेर॥
समदृष्टि राखैं सदाजी, हरखि क्रोध नहिं होय।
अष्ट प्रहर लय रहैं ईष्ट में, सुर जग बाजै सोय ॥देह नर०॥
करै प्रकाश न आपको सा सब जग लेवै जोय।
अलखरूप वह आतमाजी, महा सुपन लखि मोय ॥ देह नर०
इन्द्री ये जीत रखैं वस अपणैं, जीत सकै जग जोय।
भवन तीन के बीच में सा, वो ही करै सो होय ॥देह नर०॥
ऐसी तपनिधि आतमाजी, दृगां न देखी दोय।
इन्द्र शक्ति सम ईश्वरी सा, हुई न, कोई होय ॥ देह नर०॥
मन मूरख ! यह अम्बिका है ताम तोल नहिं तोय।
कवि हिंगलाज दुहुं कर जोड्या, कहिं सुणो सहकोय ॥ देह नर०

चरजा ११

कृपा मोपै वेग कीज्योजी, अम्बा मोरी सब मिलिके सुरराय ।टे.
गम खाज्यो मत सुनि गिरा, धमला मत कर देर।

हम बालक हैं आपके, कमला करज्यो खैर ॥ कृपा० ॥
सिन्धु सुता कर सहायता, इन्दू मात अपार।
वन्दों तव पद कर विनय, चन्दू अरज चितार ॥ कृपा०॥
करनल तू है कल्प तरु, धरणी पर दातार।
हरनी सर्व दुख हेत्रवां, बरनी विधि कई वार ॥ कृपा० ॥
सरस्वति मा करज्यो मही, पारवती दुख पेल।
हार अती कांई अम्बिका, सार थक्यो कांई सर ॥कृपा०॥
थाक्यो केहर थाहरो, हाक्यो कठै अलगा।
भांको जननी शुभ निजर, थांको विडद अथग्ग ॥कृपा०॥
भवन हमारे बीस हथ, गवन करो गिर राय।
कवन अरज सुण सी कलू, श्रवण सुणो सुर राय ॥ कृपा०॥
मात तिहारी महर की, बात कथैं सुर व्याल।
हाथ तिहारे आवड़ा, पात तणी प्रतिपाल ॥कृपा०॥
हरज्यो सब दुख अम्बिका, करज्यो सर्व शुभ काज।
दास जाण करज्यो दया, लरज कहै हिंगलाज ॥कृपा०॥

चारजा १२

कृपानिधि करनल किनियाणी, ऐर मन! अवतरि फिर आणी ।टे.
सम्वत शुभ उगणी सै आणों, साल दिव्य चौसठ री जाणों।
नमों वह साढ शुक्ल नवमी, बडा हुं वडी अवतरिया भोमी,
स्वांति नक्षत्र संध्या समय, वार शुकर शुभ वार।

इण पल जग में जनम्यां इन्दू, मरुधर देश मझार,
जकां नै जग सारै जाणी ॥ कृपा निधि० ॥१
जण्यो जय मेहाजी जतनूं, तात धनि सागर तो रतनूं।
जयो जय देवल री जाई, उदर अब धापू रै आई।
जागावत अंज सैं अजू, धापू सी लखि दीह,
जनम्या कूख इन्दर आ ज्यारै, आखै यश अवनीह।
विबुध घण कीरति आखाणी ॥ कृपा निधि० ॥२
गुणैं गुण गढपति गढवाडा, पुणु मैं अब सुणिया परवाडा,
दान बलि हूँता अति दीहा, विराणी इक मन में भिन्न कीहा।
गहली हुय भू पै गिरी, तन सुधि भूलि तमाम।
आय पति उण रो इन्दू रै, पांवा कीन्ह प्रणाम,
शक्ति उन विरिया की स्याणी ॥ कृपा निधि० ॥३
हुयो हियै दर्शण रो हेरो, कदम रज गीगाई केरो।
स्वजन फिर लीन्हा निजसागै, अम्बेजी खुदहाल्या हुये आगै।
आव विहीनों आ उठै, दीन्ही नाई धोक,
जल्दी इन्द्र सुझायो जाकों, लोयण दे यह लोक।
प्रकट हुवौ परचो परमाणी ॥ कृपा निधि० ॥४
शकति मैं शरणैं हूँ तोरे, आप बिन अवलम्ब नँह मौरे,
अम्बेजी हूं आश्रम त्रय आगो, भवानी भ्रम रंच नँह भागो।
आप फतो आसोप सूं, करुणा एहडी कीन्ह,
सेवक जान, जकां री शकति, चित की इच्छा चीन्ह।

मथल सुत जाको बगसाणी ।। कृपा निधि० ।।५

छतर पति राटौडा छोगो, जको नृप गंग सहजोगो,
व्याधि कोऊ वाकै अंग व्यापी, जरा ई मोटी जगदम्बनै जापी।
हरषि विभूति हाथ सूं, दीन्ही मां इन्दरेश,
कदम वन्दि कर जोडि कै, ता सिर लीन्ह नरेश।
कष्ट वह नष्ट ही करवाणी ।। कृपा निधि० ।।६

समय इण नासति मैं शक्ति, दिखाई जग आमति तैं बढती,
पार कुण परवाडा पावै, 'नमो' भणि शेष शीश नावैं।
भाख सकै नँह भारती, कदमारज की कीत,
गीत सुरंग सुवासिनि गावै, ज्ञाता जनो सांगीत।
बोलत वे मधुरस सी वाणी ।। कृपा निधि० ।।७

इन्दर रूढ लोग घणां आवै, परसि रज चरणां सुख पावै,
तिका फिर संकट नंह तापै, विपति-क्षयी, सम्पति सुख पावै।
रोग कटै रोग्यां तणां-कोढ्या ह्वैं निकलंक,
माठा मिटै, इन्दर मा दरस्यां, अज का लिखिया अंक।
हर्ष घण प्रकट्यो हिन्दवाणी ।।कृपा निधि० ।।८

शकति यह विनय सुनो मेरी, सुकवि-कुल शरणैं है तेरी,
करै कोउ भोड कुटिल यातैं, भोक खग्ग समझाज्यो जातैं।
जागावत हिंगलाज नै, सेवक जाणि विशेष,
कायम किरपा राखज्यो, आज जसी इन्द्रेश।
धजाबन्ध मोटी धिनियाणी ।। कृपा निधि करनल० ६।।

भैरव हित आदेश – दोहा

भैरव जायऽरू इण वखत, मद घण ल्याहु मनोज्ञ ।
नव रात्री आई निकट, जो जन करवाजोग्य ॥
भैरव मद ल्या वेगो इण वार, सो होय सुधा अनुसार ॥टेर॥
पखवाडो पितरां तणूं, है कल बीतण हार ।
परसौं के दिन थापना, अब नँह योग अँवार ॥ भैरव० ॥
लीजै कर हाला तणूं, द्रग सादा निरधार ।
जो आसव जावै घणों करनल री सरकार ॥ भैरव० ॥
अति सुन्दर स्वादिष्ट अजु, पीत नशो अण पार ।
लागत उण लागी सणी, केशर हेक कतार ॥ भैरव० ॥
आवड करणी आवसी, ले देव्यां घणलार ।
करत नृत्य उण हाला केरी, हूँ करि हुं मनुहार ॥ भैरव० ॥
हरपि इन्दर रौकड हित सौंपी, कूंची निज कोठ्यार ।
कद् हिंगलाज नकद ले कालो, हुयै हाल्यो असवार ॥
भैरव मद ल्या वेगो इण वार, सो होय सुधा अनुसार ॥

दोहा (२)

हुकुम सुणत भैरव हल्यो, देव्यां हित मद ल्याण ।
ऊठ कलालन देहु अब, भरि घण अमृत बाण ॥
माऊ म्हारी इन्द्र करै मतवाल, दाखां री दारू ल्याजे ए कलाल।
रीझ देण घण रेणवां, करण सेवकां काज ।
खण्डन मिर दुष्टां–खगां, इण हित पीसी आज ॥ माऊ० ॥

आसो खासा ऊमदा, गहकै सुगन्ध गुलाब।
दारु दे दिव्य दाख री, तां में न होय तिजाब ॥माऊ०॥
शुचि सुगन्ध रंग केशरयां, हाला छिल रही हौद।
भैरव बतकां लेहु भरि, मन में करि घण मोद ॥माऊ०॥
बतक ल्याय खोल्या भवन, उड रही डमर अमाप।
करनल नें इन्दु कहें, अव्वल अरोगें आप ॥माऊ०॥
वड प्याला भैरव भरै, हाला तें करि हेत।
आवड़ करनल नूं इन्दू, दुंहुं कर जोड्यां देत ॥ माऊ०॥
माघ मधु शुचि अम्बिका, पुनि आश्विन सुदि पाख।
मन्दिर खुडद मजलिस मंडै, ले दारू नवलाख ॥ माऊ० ॥
करत विनय कर जोडि कै, तुल कदमां 'हिंगलाज'।
अणु उच्चिष्ट दीन्यो मोहि अम्बा, महर करि महाराज ॥
॥ माऊ म्हारी इन्द्र करै मतवाल० ॥

---

* खुडद मन्दिर में श्री करणी-जन्मोत्सव *

स मा रो ह

भैरूं म्हारै आजे वेगो इणवार, लेय इक्यावन लार ॥टेर॥
कहूँ त्रास सो कान करि, छीलैपति छत्रधार।
कह हु निमन्त्रण यूं कठै, आश्रम तुज्झ अपार ॥ भैरूं ॥
विवर कूप दिव्य वावडी, बाग तलाव सुमार

क्यारयां फूल अनेक सूं, मँढ गढ हूं मणिधार ॥ भैरूं ॥
आया दिन नजदीक अति, अब नहिं योग अंबार ।
आयो रीजै वेग इहां, भूलि न है इणवार ॥ भैरूं ॥
आसी शक्ति अनेक यहां, हुये सिंहा असवार ।
खातिर जिणरी ख्यांतकरि, सब करिहो होशियार ॥ भैरूं ॥
जन्मोत्सव करनी जबर, सुकवि न लहै शुमार ।
इन्द्र उडीकै आपनैं मन्दिर खुडद-मझार ॥ भैरूं ॥

(दोहा)

आतुर हुय आया इतैं, बीस बतीस सुवीर ।
हरखि इन्दर कहो किम हुई वाणी व्योम गंभीर ॥
भूल चूक निज बालकां, माफ करो थे मात ।
कारज इसड़ो जग कवण, होय नाहिं इण हाथ ॥
उकता बल देखि र अजू, प्रफुल्ल भई मां-पिण्ड ।
शवरयां लाहु बुलाय सब, खेतल जा नव-खण्ड ॥

निवेदन २

जन्मोत्सव करनल रै, जगदम्ब भैरूं ल्या बुलाय ॥टेर॥
अष्ट सिद्धि, नव निधि अम्बानै जल्दी कीजै जाय ।
पांच दिना रिद्ध सिद्धि नू पहली, दीजै खुडद खिनाय ।जन्मो०
चक्रेश्वरी चामुण्ड चिरताली, खोडी खाण्डेराय ।

आवड़ आदि वुला न्या अम्बा, मम राजल महमाय ।जन्मो.
कुमरुया, कृष्णा अरु महाकाली गायत्री गीगाय ।
मां हिंगलाज गिरा मातंगी, वाघेश्वरी भंवराय ॥ जन्मो. ॥
बूंट विराय वामंगी, त्रिमला, त्रिहुं कर जोड़ व्रदाय ।
आदीश्वरि न संगले आजे, करड़ी आण वढाय ॥जन्मो०॥
जोगण ज्वाला अरु जै खण्डी, भागवतिरू भिणाय ।
भुवेश्वरी विजियारु अबूढा, शाकम्भरि सकराय ॥ जन्मो०॥
इन्दर री मन्दिरां उण कीजै, मालूम धोक उमाय ।
आंता तोहि अमोलक आसौ, मैं देस्यूं मंगवाय ॥जन्मो०॥
कछनी सुरंग सु-रेशम केरी, जरियां देहुं जगाय ।
इतर अतौल अमोल अबीढो, लीजै लटियां लगाय ॥जन्मो०

निवेदन ३

अरज सुण आवो आईनाथ, म्हारै शकति घणयारै साथ ॥टेर॥
वलधारी बबरीक नै, हांको इसै अन्दाज ।
आवै उडि आकाश में, जाण हवाई जहाज ॥ अरज०॥
बिरदाली भुजलम्बिका, मतवाली मुद्राल ।
छतरा न्यां री छांग मिलि, डोकरडी डाढ्याल ॥ अरज०॥
अरज श्रवण सुनियो अति तुम, जगदम्ब तमाम ।
मोटै सिंह चढ़ि मालज्यो, गैढै छोटै गांव ॥ अरज०॥

उगणी सैं रु अट्ठ्याणवैं, सातैं तिथि शनिवार ।
शुदि आसोज पधारज्यो, उत्सव खुडद अपार ॥ अरज०॥
चालो चरण्यां चाव सूं, इन्द्र उडीकै आज ।
हालो हाला ले हरखि, हेलो सुणि हिंगलाज ॥ अरज०॥

निवेदन ४–सोरठा

उछव श्रद्धा अनुसार, तऊ जन्म करनी तणों ।
भुज थारैं है भार, इण कारज रो ईश्वरी ॥ १ ॥
ज्यादा अरज फिजूल, अन्तरजामी आप हो ।
भगवति हुवै न भूल, आया रहिज्यो ईश्वरी ॥ २ ॥
करणा आछ्या काम, भैरव पहली भेजज्यो ।
हेमा मसै हगांम, आप पधारो ईश्वरी ॥ ३ ॥
अम्बा सब आगैह, आवड़ करनी आवज्यो ।
सकत्यां सब सागैह, आप जु ल्याज्यो ईश्वरी ॥ ४ ॥
हाला हन्दो हौद, सकत्यां हित राख्यो सज्यो ।
भो मन हुँ लो मोद, ओलखियां तों ईश्वरी ॥ ५ ॥
आछा सह इन्तजाम, हित थारै कीन्हा हुँ तो ।
दूजो सुरग सो धाम, ओ मँढ आकर ईश्वरी ॥ ६ ॥
हूँ जद जाणूं हेत, नो हुँ म्हांहीं न्यौरता ।
माता दीप ममेत, आ ऐकैं नैं ईश्वरी ॥ ७ ॥

ले साथै हिंगलाज, डोकरड़ी आजे डिगर ।
अरजी म्हारी आज, आ सुण आवो ईश्वरी ॥ ८ ॥
धन वन्द हूँ देखूं ह, ऊंची चढि मारग अजू ।
पलकां कब पेखूं ह, आता थानैं ईश्वरी ॥ ९ ॥
मोटा थे माईत, इन्दू बालक आप री ।
पाली जै बड़ प्रीत, आप सदां री ईश्वरी ॥ १० ॥

झड़ सीहां मुख झाग, बोलैं शिवा नकीब[1] ज्यों ।
मावै नहिं इक माघ, अड़बड़ आया ईश्वरी ॥ ११ ॥
खड़ि सीहां उड़ि खेह, दिनकर ह्वै गो धूंधलो ।
आई सकति अछेह, आवड़ कै मय ईश्वरी ॥ १२ ॥
चामुण्ड छपन क्रिरोड़, डाढ्याली संग डोकरी ।
महा देव्यां सिरमोड़, आगै सब कै ईश्वरी ॥ १३ ॥
छिटक नाथ छी लांण, इन्दु नै कीन्ही अरज ।
प्रतिबिम्ब सुरज प्रमाण, आय रह्या वह ईश्वरी ॥ १४ ॥
काना सुण भणकार, आतुर हुय ऊठी इन्दर ।
पावां धोक अपार, इन्दू देवै ईश्वरी ॥ १५ ॥
करैं होय कण्ठोर, खिदमत में खेतल खड्या ।
आंख्यां नशै उमीर, आ मँढ उतर्यां ईश्वरी ॥ १६ ॥
उर में बहुत उछाव, इन्द्र अरज करवै अजू ।

१ नकीबबरूची

पलका म्हारे पाव, आया देता ईश्वरी ॥ १७ ॥
अमित सकति मंद आय, आज्या सुच्छ बिछात पैं ।
भैरवनाथ बुलाय, इन्द्र कह्यो इमि ईश्वरी ॥ १८ ॥
चित की प्रकृ विचार, इन्द्र अरज ऊभी करै ।
होय रही अंग हार, आसौ ल्यो कुछ ईश्वरी ॥ १९ ॥
लखि लखि सुछि ल्याजेह, भैरव बोतल वारुणी ।
प्याले नग पाजेह, इच्छा है सो ईश्वर्यां ॥ २० ॥
चामुण्ड-सुत कर चाव, खिदमत में रीज्यो खड़ा ।
सकत्यां तणा सुभाव, बैठी जै घण भैरवां ॥ २१ ॥

कवि की ओर से—

❀ कवित्त ❀

आगों ले अपार अम्ब बाघ हू भगाय आवें,
भैरव सुवीर वीर दूरि जा बदावें हैं ।
त्यागि के सवारी मात मन्दिर पधारैं तबै,
विबुध बखानि "जय" पुष्प बरषावें हैं ।
मतवाली महाकाली पैं पान बीड़ी फूल माल,
आली हो उपाली हाथ लेय थाली आवै हैं ।
कहै हिंगलाज कवि कीरत बखान करैं,
अम्मित स्वास्नी गीत—मांगलीक गावैं हैं ॥१॥

आरती उतारैं इन्द्र मात जु आदीश्वरी की,
झालरि मृदंग खूब झींझ झरणाती हैं।
घोक ह्वै नगार अति ढोल वा सुचंग हू की,
नौबत गंभीर बजि गैण गरणाती हैं।
नाद सहनाय शंख बहुत ही बजैं हैं ऊंचे,
तार सबै होय ठीक, तन्त तरणाती हैं।
कहै हिंगलाज आज सकति समाज मांझ
भैरव बल्यों की काख बीण भरणाती हैं॥ २॥

चिरजा—

मन्दिर खुड्द में होत महोत्सव महा सकत मेहाई को।
सब सैं ऊंचो जच्यों सिंहासन शक्ति आदि सुरराई को॥
देव्यां अमित विराजी देखिरु उमंगि रह्यो मन आई को।
मिणधर फिरत करत मनुहारयां, आसो मोल अथाई को॥
करि मद पान करै नृत शक्ति सुर पंचम सुखदाई को।
रोकड़ जोड़ कुबेरन बैठै, दीनदयाल बधाई को॥
सुकवि अनेक चित्र सम ठाड़ै, वरण सकै न बड़ाई को।
विवुध उछार पुहुप गुन वरणै जगदम्ब आदि बिजाई को॥
कहै हिंगलाज छयो चहुँ कूंटां विमल सुयश इन्द्र बाई को॥

सेवक–की जन्म भूमि पर सु श्री बाई जी महाराज के पदार्पण पर सु० श्री चिमन कुँवरि आढी जी धर्म-पत्नी श्री १ ० ५ कविराज गणेशदानजी जोधपुर, ठा० सा० श्री भवानी सिंह जी भांक्ता (जोधपुर), ठा० सा० अर्जुनसिंहजी नीमोदसुश्रीचाँद कुँवरि सुपुत्री कविराज श्री हिंगलाजदानजी सेवापुरा, सु श्री अनूप कुँवरि चौहान नीमराणां, सु श्री इन्द्र कुँवरि रैयां (जोधपुर), धर्मावतार सु श्री धापू बाई जी जननी दैव्यावतार खुड़द व श्री पाबूदानजी लघुभ्रात दैव्यावतार खुड़द प्रभृति का भी साथ में पदार्पण हुआ था। इस पर निम्न पंक्तियां प्रस्तुत हैं:—

कवि–भक्त–कुटीर पर देवी इन्दरेश का पदार्पण

॥ छन्द मोतीदाम ॥

कथूं यश इन्द्र कृपा जिमि कीन,
हुवैं जन खास सुणयां दुख–हीन।
धजाबन्द जो है करी घण आप,
जपूं कर जोडि त्रिहूं वेह आप ॥१॥
अमा इन्दरेश के स्वासनि नेक,
आज्ञा अनुसार चलैं घण एक।

इन्दू जिण शीश दया अणपार,
सको नित चालै कृपा अनुसार ॥२॥
घणों चिमनां शुभ नाम गंभीर,
सुण्यो जिसको हम पेशव पीर ।
जकां घण भक्ति कही नहिं जाय,
रहैं अति तापैं खुशी सुरराय ॥३॥
रह्या मद लेय अम्बा इक रैण,
भणी उन खूब कृपा लखि वैण ।
अम्बा तव मुझ्झ घणी मन आस,
चहूं दग–देखण चारणवास ॥४॥
हँस्या इन्दरेश घणा हरषाय,
भूतां–हित–हुक्म दियो वगसाय ।
दयो लघु भ्रात को अग्र पठाय,
लिया हित संग सुदास बुलाय ॥ ५ ॥
बुला निज–मात कही यह वात,
वहीर व्है हैं तव–पीर प्रभात ।
दई बड मन्दिर इन्दर धोक,
धुरंत त्रमागल मादल घोक ॥ ६ ॥
धजा बन्द आप खडा मँढ द्वार,
भई चिमनां सग हो हुशियार ।
सको सब दासिन में सिर मोड,

अजू हिय भक्त लहै कुण ओड ॥७॥
अनोप हली हिय हर्ष अपार,
विनय कर होय धजा बन्द लार ।
वडापण हूंत भयौं कुण बात,
खरी जिनके हिए भक्ति लखात ॥८॥
सको निमराण सुता चहुवाण,
सको समभयो निज पीर समान ।
चली मन च्याव घणों करि चन्द्र,
आज्ञा अति पाय हली संग इन्द्र ॥९॥
लई निज–मात को साथ बुलाय,
हल्या इन्द्रेश घणां हरखाय ।
महा महम्माय हल्या भलि माघ,
भयो उण बेर बडो जन भाग ॥१०॥
इतैं शुभ बात सुनी मों आय,
जकी पल मोद कह्यो नँह जाय ।
चखें अरविन्द घणों कर चाव,
खडी मग जोय रही इक पांव ॥११॥
घणों शुचि काव्यऽरु राग गंभीर,
खड़े स्वर गावत राग अमीर ।
अमोघ सु–मोद रह्यो भर अंग,
जकां कविराज दवै घण रंग ॥१२॥

द्दगां अति दूर लख्या इन्द्रेश,
भयो उण वेर में मोद विशेष।
तिकी तिण वेर दियो तज गान,
भई गति चन्द-चकोर समान ॥१३॥
'धिनो' अति दाखत आवत दास,
सुवासनि कीन्ह बिछायत खास।
सहस्र बिये अरु एक के साल,
दया उर धारि पधारे दयाल ॥१४॥
अषाढ सुदी दशमी शनिवार,
कृपा जगदम्ब करी अणपार।
भलो जगदम्ब जणाय कै भाव,
पधारिये मों पलकां धरि पांव ॥१५॥
घणों उण-वेर भयो शुभ गान,
'जयो-जय' आखत आलम ज़हान।
चढ्यो जिण दिव घणो मम छोह,
जुबान सकै न बखाणि जकोह ॥१६॥
जतै जन हाजिर होय कै जोग,
कही शुचि काव्य सुमोद अमोघ।
करी कविता मँह ताहि प्रकाश,
अमां मम गेह पधारण आश ॥१७॥
इन्दू उर जाणि घणी अभिलाख,

जना-निज हूंत जनावत साख।
कहा महमाय दियो फरमाय,
प्रभैं कल आहु सवारी सजाय ॥१८॥
हुयो फिर हाजिर आ हिंगलाज,
करी अरजी घर पावन-काज;
अम्मा अरदास यही है अखीर,
"धजाबन्द है मम वृद्ध शरीर ॥१६॥
समैं फिर येहु नहीं सुरराय,
हमें नजदीक रहे दिन आय।
विशेष कहूँ किम बात बणाय,
हुवै अब हुक्म हमें हरषाय" ॥२०॥
बड़ा पण धारि घणां भुजलम्ब,
'धरो उर धीर' कह्यो जगदम्ब।
हिला पुर-ओर अम्मा निज हाथ,
सवैं जन लेय चलूं तव साथ ॥२१॥
धिनो अति दाखि खड़ो निज दास,
'खमा' भणि खूब रह्यो मुख खास।
सको हिंगलाज कण्यां सिर ताज,
चलू जिण इन्द्र गरीबनिवाज ॥२२॥
भये मम गेह अछेह हगाम,
करया इन्दरेश सिद्ध काम।

'धिनो कविराज' कहैं इण दास,
रह्या जगदम्ब कृपा करि खास ॥२३॥
धजाचन्द आप रह्या दश-दीह,
जको जश भाख सकै नॅह जीह ।
भयो जग में जश येहु विख्यात,
हुवो हिंगलाज कवि सिर हाथ ॥२४॥

दोहा—

दासाँ धीरज दे अधिक, इन्द्र गरीब निवाज ।
हरषि बिशनपुर हालिया, कवि जोगा रै काज ॥

—छप्पय—

सुत्र सुजन सवार, गति-गज वैठीं गाड्याँ ।
धूरत दास्यां दौड़ि, हुलकि चढ़ि बैठी माड्यां ॥
इन्द्र कँवार अनूप, सको चिमना रथ सोहैं ।
खुड़दराय रथ खास, मात निज गोदी मोहैं ॥
अधिक दास हाल्या उमंगि, खिदमत में भणता 'खमां' ।
दाखै जोगो देखि द्युति, हुवो भाग आछो हमां ॥

शक्ति पदार्पण पर

चरजा

(राग बिहाग)

आज घर आया मो इन्दरेश ॥ टेर ॥

मारग में इन्तजाम कराणिया, निज-जन दोय नरेश ।
गावण राग घणौं स्वर ऊंचै, भृत्य निज साथ विशेष ॥
आजघर० ॥ १ ॥

आढी, चिमन चरण इन्द्र रै, साधण हुकुम विशेष ।
किरपा अधिक जकां सिर कायम, राखै मां इन्दरेश ॥
आजघर० ॥ २ ॥

देवण दरश प्रथम फिर देवी, भाँजण पूर्व भवेश ।
हर्षि इन्द्र दासां हित हाल्या, काटण विकट कलेश ॥
आजघर० ॥ ३ ॥

धनि यह घड़ी पधारथा धजवन्द, धनि फिर आज दिनेश ।
अधिक धन्य मोरै घर अम्बा, पुल जिण कियो प्रवेश ॥
आजघर० ॥ ४ ॥

कृपा इन्द्र करी सो कीरत, आखिन सकत अहेश ।
जग हिंगलाज आज ज्यूं ही जाणो, हे सुरराय हमेश ॥
आजघर० ॥ ५ ॥

दोहा—

आनन्द कन्द अम्बा इन्दर, सुजन घणां ले साथ ।
पावन करन पधारिया, अनुचर जांण अनाथ ॥ १ ॥
शनि दशमी अरु साढ सुदि, सहस्र दोय इक साल ।
कीन्ही इन्द्र करि कृपा, पूरन जन प्रतिपाल ॥ २ ॥

सेठ सा० श्री चिमनलालजी भुवालका रतनगढ द्वारा सुश्री बाईजी महाराज के चरणाम्बुजों में अमूल्य पाद-त्राण भेंट करने पर:—

दोहा—चरजा

सुजन चिमन शकति, तणों आलम-साह समान ।
कीर्ति कुउहुँ हाजिर करी,सो-त्राता जग पग-त्राण ॥
चरण तव मोचड्यां चारु, नमो भणि भक्त सिर नावै ॥टेर॥
चमड़ै चारु चीकणैं, नामी नरम बनात ।
खूब कसीदै खुबि रह्या, मोती सांचा मात ॥
विभव देख्यां न बणि आवै ॥ चरण ॥१॥
मोत्यां छबि लख मोचड्यां, किर्ती * उर सकुचात ।
उडगन हुँ इम आखवैं, दमकैं औ दिन—रात ॥
नवण इण नाक-पति आवै ॥ चरण ॥२॥
शकति हेतु मनों सरस्वती, कीन्हो हुकुम मराल ।
हंस करी उन साह घर, इण मोत्यां ओगाल ॥
पार जिण मोल कुण पावै ॥ चरण ॥३॥
कान्ति बनात सु खुबि रही, उण मोत्यां बिच ऐम ।
कीर जोय जहँ वह खुशी, जिय अनार-कन जेम ॥

---

* किर्ती—आसमान में नक्षत्र विशेष के समूह का नाम है जिनसे रात्रि में ग्रामीण समय का पता लगाते हैं। मुख्यत: कार्तिक में इनके द्वारा ठीक समय का पता लगता है।

यही उपमा मो हिये भावै ॥ चरण ॥४॥

जीव-जलन जन की हरैं, परसत उर परभात ।
पाव-पोश श्री पेखवैं, सो सेवक सुख पात ॥
दया उण शीश दरशावै ॥ चरण ॥५॥

मानहु नौका मोचड़ी, हैं जन तारण हार ।
तजि विकार परसै तिको सुजन संमद संसार ॥
उतर जग वह न आवै ॥ चरण ॥६॥

खुडद-राय चरणां खुवैं, मोचड़ सुघट अमोल ।
पावां इण हुँ ऐक पल, कहत सुकवि ' हिंगौल" ॥
रह्यो जन दूर न्ह चावै ॥ चरण ॥७॥

राज बाई महाराज

बादशाह—पृथ्वी सिंह बीकानेराधीश से ।

दोहा—"पृथ्वी सिंह बीकाणपति, करहु हुकुम अनुकूल ।
नवरौजा—देवो नृपति, मिटै न सो तो मूल ॥१।"
हुकुम सुणत आकुल भयें, भटियाणी अरु भूप ।
अन-जल तजि बैठ्या अचल, दीप जोय करि धूप ॥२॥

मात थारै हाथ कलाम हमारी, बाई राज कुँ वारि इण वारी ॥टेर॥
भय-चित्त होय भूप सब भेजै, नव रौजा निज नारी ।
दिल्लीपति महलां करि दाखिल, शरम गमावत सारी ।
मात थारै । १ ॥

पिंजस खरो खड़ो जूपैड़ो, लौएड्यां ह्वै रही लारी।
हरि-अपघात शीश निज काट्यां, भूप सहै दुख भारी॥
मात थारै॥ २॥

आपत्ति-टाल, न्हाल अर्द्धंगी, आरति अमित उचारी।
"राजल वचन इनामत राख्या, जगस जका इण वारी॥
मात थारै। ३॥

गंश्ट साद सुण्यों सुरराया, त्राहि त्राहि दत्र तारी।
नजन त्याग, भँजन दुख भागी, वाक 'हाक' करि भ.री॥
मात थारै॥ ४॥

वचन जु भाखि, राख मत बाकी, चित किमि, अमित चितारी।"
"विपति अतौल बोल भटियाणी, अंग थारै कौ! आरी॥
मात थारै॥ ५॥

दुंहु कर जोड़ि, दौड़ि मुख दाखी, साखी सृष्टि जु सारी।
"जननि जगत वख्त उण जाणी, चेप हिये पुचकारी॥"
मात थारै॥ ६॥

"धर उर धीर, पीर हर देस्यूं, टरस्यूं पीर न टारी।"
पिंजस मांहि होय पंचानन, बैठ गया उण वारी॥"
मात थारै॥ ७॥

कुटिल तणी ग्रीवा को घोटिऽरु, ऊंचा चढ़्या अटारी।
लटकत देह मनों शूली पै, दग-लखि हुरम दुखारी॥
मात थारै॥ ८॥

पीरन्ह मांहि नाहिं कछु पौरुष, भुजलम्बे बल–भारी।
कहि हिंगलाज सही यह कीरति, छोड्यो लाग छुड़ारी॥
मात थारै॥ ६॥

(२)

बीबी करो नबी मत याद, खुदा ने जान बचाई है॥टेर।
देखत खुशी हुयो मन माहिं, हूर-परी को आई है।
महाड़ोल में मुझको वह तो, सिंहनि सी दर्शाई है॥
बीबी०॥ १॥

पीर एक आड़ो नहीं आयो, कछु नांहीं सकलाई है।
अल्ला खैर से प्राण उबरिया, पिछली को पुण्याई है॥
बीबी०॥ २॥

हिन्दू देव बड़ा बलधारी, पीर थाह नहीं पाई है।
महाडोल से पकड़ मुझे तो, गढ़ पै जाय घुमाई है॥
बीबी०॥ ३॥

कहा कहूँ कहने नहीं आवे, ठेटूं लाग छुड़ाई है।
नवरोजा हूँ माफी कीन्हा, कसम खुदा की खाई है॥
बीबी०॥ ४॥

एक नवाब हुआ था ऐसा, जो मुख कही न जाई है।
उदर भरण के कारण अपने कुल को नाश कराई है॥
बीबी०॥ ५॥

चारण कौम अवतरैं चण्डी, वेद पुराण बताई है।
पहली पता नहीं था पूरण, छत्री केंहु सहाई है॥
वीवी० ॥ ६ ॥

पीरन मांहि नहीं कछु पौरुष, देवन में अधिकाई है।
पृथ्वीराज की भक्ती पूरण, वबरि रूप बन आई है॥
वीवी० ॥ ७ ॥

बीस-हथी अब वही बेचरा राजल नाम धराई है।
कह हिंगलाज सही यह कीरति, छोड्यो लाग छुड़ाई है॥
वीवी० ॥ ८ ॥

चरजा श्री हिंगलाजदानजी जागावत–सुता

(सु० श्री मोहन कुँवरि कृत)

म्हारी इन्दर माऊ वारी हूं वलिहारी सूरति ऐण ॥ टेर

जूनां विरद उजाड़न लाग्या, जगदम्ब करनी जेण।
संकट-मोचन सूरति सुन्दर, दासन को सुख देण॥ म्हारी०
सुख सम्पति हिय हूंत सुबुद्धि, लाग्या दुष्टा लेंण।
उदक भूमि नराधिप उथपी, तूं फल दीन्हो तेंण॥ म्हारी०
सीकर शाह सीरीचन्द वारी, काटी व्याधि न केण।
सो अंग–रोग मिट्यो परसन्ता, राज पगां री रेण॥ म्हारी०

तन मन हूं न्योछावर तौं पर, अम्बा विरियां ऐण ।
'मोहन' कहत कृपा करि माता, द्यो दरशण दिन रैण ॥
म्हारी इन्दर माऊ वारी हूँ बलिहारी सूरत ऐण ॥

भैरव—

दोहा-भैरव खिलाला भैरवा, आदीश्वरी अगवांण ।
करहु सिद्ध मन कामनां, छत्रपति छीलांण ॥ १ ॥

मामों म्हारो मदछक बंको महराण, छतरपति छीलाण । टेर ।
खिलालो भैरव मदछक बंको महराण ॥
भरव सुरां-सिर-सोहणों, मुकट ज्यूं मणी मण्डाण ।
सद मदवालो सांवलो, कवि-कुल रो कलियांण ॥ मामो०
अंक प्रातम्बर ओपमां, दध-सुत पटडि दिपांण ।
अरुण-अधर भैरव अजूं, बीरी-पान चबांण ॥ मामो०
जरकस जामूं कछनि मय, पट कटि योग्य प्रमांण ।
लंगर कड़ो अति पद लुभै, माल घूंघर घमकांण ॥ मामो०
आभूषण सह ऊमदा, लटियां अतर लगांण ।
सुन्दर रूप सुहावणों, कर कुंण सकै बखांण ॥ मामो०
बंको अति आछयो बली, जाहर जब्बर सुजांण ।
बीरा-पण सिर बैरियां, सुजन कुलां शुभियांण ॥ मामो०
सीमां थान सकत्यां तणीं, भूप न सकै भुजांण
गाडल्यां गावां है घणों, रखवालो रहमांण ॥ मामो०

आरति लखि अति ईहगां, आवै गरुड़-उडांण ।
आय बली अखडैतरा, पलहिक में ले प्राण ॥ मामो०
पालण पख पातां तणीं, घालण असुरां घांण ।
मामां-सुर-सिरमौर रा, विरद बड़ा बाखांण ॥ मामो०
अचल मुसाहिब अम्ब रा, मद छकिया महरांण ।
कीरति यह हिंगलाज कृत, जोगीश्वर सब जांण ॥ माम ०

चिमन-कुँवरि चिन्तामणी—

अम्बा ये मैं तो शरण चरण थारै आई ।
म्हारी दीज्यो ओड़ि निभाई ॥ टेर ॥
परम ब्रह्म परमातम पूरी, बरनी आप बड़ाई ।
आठौं पहर अमर यश आखैं, शक्ति भक्त सुखदाई ॥अम्बा०
तीरथ धाम सरब मैं त्याग्या, बहुत खुड़द मन भाई ।
व्रत स्वच्छ जाप तपादिक बीसरि, आप दरस उमगाई॥ अम्बा०
आ दिव्य सूरति राज अलौकिक, पलकां लखि सुखपाई ।
कही नँह जाय, लख्यां बणि आवै, इण सूरति अधिकाई॥ अ.
इज्जत शरम आबरू अब मैं, सर्व तनै समलाई ।
आ इन चरण पड़ी हूँ अम्बा, लीज्यो कंठ लगाई ॥अम्बा०
साम्प्रति शक्ति इन्द्र रै श्रवणां, सारी अरज सुणाई ।
कुँवरि चिमन कदमां इण केरी, ह्वै दासी हर्षायी ॥अम्बा०

चरजा २

मात म्हारी दीज्यो ओढ़ निभाय ।
हूं तो शरण पड़ी हूँ आय ॥ टेर ॥

तेतीस कोटि देवतां मांही, सबला थे सुरराय ।
तीरथ धाम तमांमहि मैं(सा) मैं बड मानी माय ॥मातम्हारी.

दुख घण भोगि जीव हुय दोरो, अवलम्ब लीनू आय ।
कदमां दूरि कदे मत कीज्यो, दासी नै किणदाय ॥मातम्हारी.

हरदम जीव रहे मो हरप्यो, गुण इण मन्दिर गाय ।
है जिमि कृपा आज मो ऊपर, रहूँ जतै रह जाय ॥मातम्हारी.

दुखित सुता निज जाण इन्द्रमा, लीन्ही खुडद बुलाय ।
औगुण अमित माफ करि अब मो, आप लिवैं अपणाय ॥
मात म्हारी.

इण पांवन री भक्ति अमोघी, करि किरपा बगसाय ।
अरज यही है चिमन कुंवरि री, हुकुम देवैं हरषाय ॥ मात.

कवित्त ।

हाल देखिइन्दू को चिमना बहु विहाल हुई,
कहे कवि कीर्ति कौन वांके पछताना की ।
त्राता जग तीन हुं की हालत निहारि तावै,
अङ्ग मे उम्मीद रही नैह एक आना की ।

करणी आवड हूं को याद उण बार करि,
कूंचीमँढ माहि गेर शीघ्र सै मकाना की।
आरति उच्चारी मन्दिर निज अन्दर यह,
भाखूं के विशेष माह बात राख वाना की।

चरजा-

हे मेहाई थानें याद घणी कर हारी मोटी माय ॥ टेर ॥
इन्दर शक्ति तणौं अङ्ग अडचन जो न सही मो जाय।
दीन्हा हूं मोटा वैद्यां ने, नोट अनेक लुटाय ॥ हे मेहा० ॥
अरजी करि करि दिन अथणावूं इण मँढ आगै माय।
कहि नॅह जाय जया हूं काटूं रजनी नै सुरराय ॥ हे मेहा०
करत्रा तप राज्या किण किन्दर, जगदम्ब दूरा जाय।
कारण कवन हमारो करणी, हेलो सुणयों न हाय ॥ हे मेहा०
आवड़ री घण आंण अम्बे, अन्न निद्रा नैन नसाय।
बलधारी बयरीक धजाबन्ध! वेगी आव भगाय ॥ हे मेहा०
चरणामृत आवड चरणां रो, कर निज वेग खुलाय।
दाखै 'चिमना' दयो इन्द्र नै, लाल धजाली ल्याय ॥ हे मेहा०

चरजा

ओ तो दिन आछ्यो जी अपार,
अम्बा मोरी इन्द्र लियो अवतार ॥टेर॥

सम्मत गुनि सै विक्रमी, शुभ लखि चौसठ साल ।
स्वांति नक्षत्र संध्या समै, प्रकटे जन प्रतिपाल ॥ ओ तो०
आछो ओ दिन ईश्वरी, शुचि सुदि नमि शुक्रवार ।
धरि दिव्य देह पधारिया, भूमि उतारण भार ॥ ओ तो०
शक्ति करी ता दिन शुरू, उन्नति कर्‌यां अमाप ।
विपता घटि भक्ति बढ़ी, पावां इण परताप ॥ ओ तो०
थान थप्पो निज हाथ सूं, साम्प्रति स्वर्ग समान ।
महिमा इण मन्दिर तणी, जाणै सकल जहान ॥ ओ तो०
चरण कमल रज चाढ़ि सिर, भणि जय आवै भूर ।
सुख घण विलसै सांतरा, शक्ति दरशि स्वरूप ॥ ओ तो०
आज कृपा ज्यों आपरी, आनन्द कन्द इन्दरेश ।
'कुंवरि चिमन' पै राखज्यो, हित कर स्थिर हमेश ।
ओ तो दिन आछ्योजी अपार,
अम्बा मोरी इन्द्र लियो अवतार ॥टेर॥

चरजा—

अम्बेजी यहां ओर विराजो सा,
किरपा करि मोपै करनी कोट में.॥टेर॥
म्हारो जीव खुशी महाराज'इन्दर बाई
ओरूं विराजो सा ॥ टेर दूसरी ॥
करि किरपा राजो थे शक्ति, महल सिरी मढ मांय ।
मूरति ईं सूरति से म्हारो, हो चित्त दूरो नांय ॥ अम्बेजी०

भावै मोद नहीं हिय मेरे, तन विपदा नहिं ताम ।
जो सुख सुपने विलसती, सो देख्यो आवड़ धाम ॥ अम्बेजी०
हर दम आणों नँह व्है सकै, सा सुरग जसै देशाण ।
करि किरपा थे दरश कराया, बड़ के करूं वखाण ॥ अम्बेजी०
थलवट राय बुलाया थानैं, महर घणी कर माय ।
साथे आय किया म्है दर्शण, आं कदमा रा आय ॥ अम्बेजी०
'चिमना' अरज करै आं चरणां, कीज्यो शक्ति कान ।
इन्द्र कहो करणी अम्बा नै, देवै भक्ति मोहि दान ॥ अम्बेजी०

आरती—

कर्णल किनियाणी, मैया करनल किनियाणी ।
जयजय जंगल धर री, जय जय जंगल धर री, ॥
धजबँध धिनियाणी । कर्नल किनियाणी ॥
सत चित आनँद शक्ति, भक्ति भव ढाणी । मैया भक्ति ।
जटधर सूंभी जूनी जट धर०। जोगणि जग जाणी ॥
कर्णल किनियाणी०
उगत सूर्य सी आभा, अर्क हुं कढि आंणी । अम्बे अर्क० ।
कारण नाम गुणाकृति, चारण पहचांणी ॥कर्नल किनि०॥
प्रगटिय रूप अनूपम अवयव अप्रमांणी । मैया अव० ॥
अतुलित कृपा अदंभित, अद्भुत अहनांणी ॥ कर्नल० ॥
स्वयं जोति महिं संचरी, साम्प्रत सहनांणी । मैया० ।

चित हित रचियत 'चिमनां', गुण आरति गांणी । करणल०
मैया करणल किनियांणी । जय जय जंगल धररी ॥

चरजा—

अम्बे हाजरथां हजूरि । उपै हाजरथां हजूरि । देवी रात
दिना दिपै हाजरथां हजूरि । देवी देशणोक दिपै । देवी.॥टेर
मेह घरे देह धरे, चण्ड मुण्ड चूरि ।
दीपा पखै देशणोक, तपी तेज पूरि ॥ अम्बे हाजरथां०
पूरा प्रेम्यां पागां पल्लां, दूरा दिल्लां दूरि ।
शूरां सच्चा-हेत सच्ची, कूरां कच्चा कूरि ॥ अम्बे० ॥
शक्तियां सर्वज्ञ सोहैं, भक्ति भाव भूरि ।
इंदू दर्श देत उठै, हेतरी हलूरि ॥ अम्बे हाजरथां० ॥
आढ़ी चिमन ठाढी, अग्र जोति ले जरूरि ।
मनों हनूमांन चाढी, राम कै मधुभूरि ॥ अम्बे हाजरथां ॥
जोति होत, जुरत जन-गन, झांकि झुकत झूरि ।
कोई निंदा करत ज्यां सिर, धरत ज्ञानी धूरि ॥
अम्बे हाजरथां हजूरि, उपै हाजरथां हजूरि ॥

राग—भैरवी—भजन—

[तर्ज—दृधि के मतवारे श्याम, खोलो प्यारे पलकैं]

श्री देशाणराय देवी महा माय दरसे ।श्री देशा० ॥ टेर ॥

शंकित तकित चकित शिव, कैलाश के शिखर से ।
कन्ध गहत, कर इशारे, इरा कहत हर से । श्री देशाण० ॥
सिंह चढी आत शक्ति, साथ सहच्चर से ।
क्षेत्र पाल वे लखात, मात की महर से ॥ श्री देशाण० ॥
तेज झलझलात गात, प्रात प्रभाकर से ।
पै हिये उपात हमैं, विस्मै वीस कर से ॥ श्री देशाण० ॥
रूप स्वइच्छाऽनुसार, रचत परापर से ।
(सोये) नप्पिछान ने रहस्य, रचे रूप वरसे ॥ श्री देशाण०॥
डाढी मूंछ दग विसाल, लाल मद-लहर से ।
ज्यू नृसिंह जुगल धजर, नजर आत नरसे ॥ श्री देशाण० ॥
कर्नी कान्ति तकि कराल, काल कम्पे डर से ।
सो, शंभू कैसे मिलि सकोगे, गहत लागि गरसे ॥ श्री० ॥
सिद्ध वद्ध सुरस तोम, व्योम पुष्प वरसे ।
'चिमन' चित्त किमन चहवै, सुख सु मन सरसे ॥ श्री० ॥
श्री देशाण राय देवी, महाम्माय दर से ॥

दोहा—

ओम् ऊंध्द्र अर्णां लच अई, वर्णों विम्ब रवि-चन्द ।
ताकर अवतर्णीं तिकण, करणी कहत कविन्द ॥
नमो नमो कर्णां किनियांणी । टेर ।
धिनियांणी जंगल धर री ॥ अम्बे धिनियाणी० ॥ नमो०॥

मंगल वृद्धि करन मेहाई, नेह निद्धि आदूनररी ॥अम्बे नेह
परमेश्वरि अवतार प्रसिद्ध हो, रिद्ध रूप दीपा घररी।
नमो नमो कर्णी किनियाणी० धिनियाणी जंगल ॥
ईश्वर अंकांकित अब्जासनि, भासणि भव्य हरा-हररी।
दुर्गम्यां सुरमारणि दुर्गे चारण-मात चराचर री।
नमो नमो कर्णी किनियाणी। धिनियाणी० ॥
जयन्ती तुं हिं राज राजेश्वरी, पूर्ण प्रियन्ती परात्पर री।
अम्बे पूर्ण०।
चिमनां चित चह दश-भक्ति-द्यो श्री शक्ति परमेश्वर री
नमो नमो कर्नल किनियांणी, धिनियांणी जंगल धर री

राग —

टेर—जय ज्योतीश्वरी जग जननी जय,
जयति जयति जयन्ती जयो ॥
श्रेष्ठ सच्चिदानन्दनि शक्ति लुभि भक्ति अवतार लयो।
आदि रूप अखिलेश अवलम्बा, त्रिपुराम्बा तिहँ नाम थयो
जय ज्योतीश्वरी जग जननी जय, जयति २ जयन्ति जयो
आपों आपतैं आप उपांणी, बडां बडी वांणी वदयो। अम्बे
महामाया जग जेष्ठ महाम्महो, पूर्ण ब्रह्म परमीष्ट प्रियो।
जय ज्योतीश्वरी जग जननी०
परमेश्वर पार्श्व कमलासनि, भासनि भांसकर विभयो। अ

तिहँ चरणाश्रय रहत त्रिशक्ति, त्रिदेव त्रिदेवि गुणान्धिमयो।
जय ज्योतीश्वरी जग जननी० ॥

जागत रह थित जूनी जोगणी, मुकुटमणी शिव शक्ति मयो।
मेरू-मँदर-साकेत लोक मधि द्वीप दिवालै ठांम ठयो।
जय ज्योतीश्वरी जग जननी० ॥

स्वयं ओउम् की ऊध्र्द्ध अणीं सोइ; लच्छ रूप वणी ललित अयो।
श्रीं-विशेष वेदां वरणी सो, करणीं नाम यथार्थ कियो।
जय ज्योतीश्वरी जग जननी० ॥

महाकाली चण्डी चामुण्डा; सँचरी कवि-कुल, लाखि समयो।
परवाड़ा पारन कोउ पावत, नित जश-छावत नयो नयो।
जय ज्योतीश्वरी जग जननी० ॥

कर्नल कृपा कल्पतरु -कविजन, ईन्दू रूप अनूप हुयो।
चिमना आढी की चिन्तामणि; देवी यह दर्शण भलो दयो।
जय ज्योतीश्वरी जग जननी जय जयति २ जयन्ति जयो।

भजन

तर्ज—मेरे तो गिरिधर गोपाल, दूसरो न कोई)।

टेर—करणीं सो कृपालु देवी देवता न कोई।
राम की ज्यूं रीझि देन, सेवक लेत सोई॥

गीता सो गुरू ग्यान गती। सीता सी सुजांन सती।

पति-प्रीता-दमैंति सी, जगत में न जोई ॥ कर्णी सी० ॥
रामस्त्व राज सो पाठ । चन्दन सो कौन काठ ।
चन्द मो अनंद थाट, पूर्ण शर्ई पौई ॥ कर्णी सी० ॥
मोती सो न उज्ज्वल औन । कज्जल सो कारो कौन ।
अमृत सो प्यारो कौन, मन्त्र अक्षर नौई । कर्णी सी० ॥
सूर सो न नूर दूर सूंहि रात जात देखो । सूर सोन० ॥
हनूमांन सो न हितू भ्रतू भैरूं दोई । कर्णी सी कृपालु ॥
महेश सो ध्यांनी मुनीं, गनेश सो ज्ञानी गुनीं ।
'चिमन' चित्त विचित्र चुनीं ह्वैन, ह्वैन, होई ।
कर्णी सो कृपालु देवी देवता न कोई ॥

भजन

टेर—करनल काय उपाय करूं, अम्बेजी मैं किण अवलम्बतिरूं ।
धजा बँध, कहो किहँ विधि उद्धरूं । कर्णी में काय० ॥
कूंणैं रहूँ, अवला बन, बसि किमि धू जिमि ध्यांन धरूं । कू. ।
हाय मैं सांपूं गीत गायन हित, माय लरूं कि मरूं ।
करनी काय उपाय करूं, किंहिं विधि मैं उद्धरूं ॥
दरस आश पूरो तो देवी, गाय हिमालै गरूं ।
नभ बाणी जे यहि निसरै तो, वहि विश्वास भरूं । करनल ॥
भक्ति भाव नहिं तद्यपि भगवति, भेटण हियो भरूं ।

अरठ घड्यां जिमि उमगत अह-निशि, झांकत आंसू झरूं।
करनल मैं काय० ॥

दिव्य-देह दरसै अपतैं द्दग, तरसे बहुत तरूं। दिव्य देह०॥
प्रेम पखै प्रकटण री पण सूं डिगण कहे न डरूं।करनल.॥
मा साक्षात न्योरतां मैं केई, निरखेइ नारि नरूं। मा साक्षा०
हत-भाग्यनि-हित मुड़ि मेहाई, दुड्डिगी काय दरूं। कर्नल०
कुरड़ी बाणी का डोकरडी, ओलिमां उच्चरूं।
अत-भोलप करि माफ भवांनी, खिज न, साफ अखरूं ॥क०
मूरति में प्रतिपूरित तउ मा, निज सूरति निजरूं।
बिन देखे किन-विधि बतरावूं, इतरावूं न अरूं। कर्न० ॥
मोरीयां में मिलि धोरियां पैं धिक, बोरियां में बिहरूं।
नँड़ी जी रै नेड़ी निरखूं तेढ़ी करॅड तरूं। कर्नल० ॥
ओयण कुञ्ज गरी नगरी की, डगरी कबु डिगरूं।
देत परिक्रमां दश दिशि देखत, पेखत चिन्ह परूं। कर्नल०
हेरत जण-जण-बूझत हारी, घण देशांण घरूं।
मणि-धर की मणि बिछुटत अणमिल, फणी की जेम फिरूं।
करनल काय० ॥

मूढन ज्यों ढूँढत हूं गढ मॅढ, गूढन ज्ञान गुरूं।
अब दरस्याँइ सरसी हो अन्दाता! माता मोद उरूं। कर्न.॥
ग्राव-नाव-गति भव-दधि मधि अमैं, त्यारन आव तिरूं।

चिमन चहै इँदरेश पेश चढि, संग शित-गिरि सँचरूं ।
कर्नल काय उपाय करूं-धजाबँध कहो किहि विधि उद्धरूं ।

चरजा—

निज विर्द रुख निहारो, हे मात मोहि त्यारो ।
जप जोग मैं न जांनूं, सो आप सूं न छानूं ॥
भ्रत्य भूल भाव भक्ति, सेवा सधैं न शक्ति ।
जगदम्ब अन्त्र जांमी, घणियाप आप धांमी ॥
मो राखियांहि सरसी, कृप और दया कर सी ।
भगवती तुम्हैं भरोसे, घिरि आई निज घरों से ॥
कर्नां मलीन की पै, कर्णी कृपा करी पै ।
इँदरेश-पेश यूंहीं, हाजिर हमेश रहूँ हीं ॥
जपि राम भीलनी ज्यों, रटि कृष्ण कूबरी ज्यों ।
मातेश्वरी मनांऊं, धजवँध तोहि ध्यांऊं ॥
दयो दर्श दिव्य देवी, विधि-विष्णु शंभु-सेवी ।
कव त्यारणी त्रिलोकां वड-चारणी विलोकां ॥
चित चिमन किन चितारो, थिर आसरो हि थारो ।
निज पाल्ल गुन निभ्हावो, जल-तरणि ज्यों तिरावों ॥

दोहा—अथवा त्रिहुं आदेश्वरी, त्रिदेवादय की मात ।
ते त्रिपुराम्बा अवतरिऽरु, कर्नां दे कहवात ॥

चरजा—

अम्बेजी म्हारै आप हि को अवलम्ब । अम्ब मति विलम्ब लगावोसा । अम्बेजी० ॥ ॥टेर॥

माता तौं चरितां मिलत, परमेश्वरी प्रभाव ।
सो गरज-सारवण-सेवकां, अरज सुणत ही आव ॥
धरम दधि पाज बँधावो सा, अम्बेजी म्हारै० ॥ अम्बेजी॥
दुहत धेनु दधि-दिश-बढा, हाथ दाहिणां हूंत ।
बलिहारी श्रुति सुणि वचन, त्यारी झाझ तुरन्त ॥
त्यूं ही तन-नाव तिरावो सा । अम्बेजी म्हारै० ॥
डौकरड़ी तुहि डीकरी, इत उडीक रही आज ।
आय उवारो ईश्वरी, सारो सेवक काज ॥
इन्दुरी आयु बढायो सा ॥ अम्बेजी ॥
अठै अनामय उद्यम नै, सुभ्यां जिमन सुचित्त ।
सुत्तां सुधि सांपू-सम न, निमन रहणुँ हुव नित्त ।
चिमन री चिन्ता मिटावो सा । अम्बेजी म्हारै आपही को०

आई माँ आपरी बालक राखो सा । डाढ्याली रावरी । टेर ।
डीकरी राखो सा । शक्ति ! निज सेवक राखोसा ।
अणमावड़ दुख अघ हरण, आवड़ आदि शक्त्ति ॥
डावड़ियां डिगती रखण, बावड़ि दुसह वखत्ति ।
दया करि धणियप दाखो सा । आई माँ आपरी० ॥

सुण चाकर री साहुलां, गुण आकर गिरिराय।
दवा देण दरसूँ हँकौ, हवा देण हरपाय।
सवासणि राज्य री राखो सा। आई माँ आपरी० ॥
वेदवती तपी तिण शिवर, तपत सुणी शिव हेत।
सो तूं आय न सकत तो द्वारपालां कर देत।
वभूती जे जन भाखो सा। आई माँ आपरी बालक० ॥
मिणधर-विहुँ वीरां मुकट, जिण दर रमत जठा हुं।
इणधर इन्दरां री मदद, परमेश्वरी पठाहु।
वठा सुंहि शीघ्र विदाखो सा। आई माँ आपरी० ॥
बीदग रखवालो बजै, कालो राज कँवार।
सो टालो नँह दे सकै, आतुर पालोई आर।
ईंदू चिरँजीव रहो आखो सा। आई माँ आपरी० ॥
सेवक सौरा राखवा, गौरा न गिरिराय।
भेज्यांई सरसी भगवति, ऊवर सी उणदाय।
चिमन चित आरति चाखो सा। आई माँ आपरी० ॥

जगडू-साहुरी अर्ज

अंग्रेजी दधि पार पुगावो, म्हारी नाव रुकी मझधार।
धजाली! दधि पार लँघावो ॥ टेर ॥
आय तूफान छाय रह्यो ऊपर सो, झाझ से अलग झुकावो।

चढि चट, बढ़ियत बैलि चाचरै आच रें जोर उफ़ावो।
बाचरै रूप बणावो ॥ अम्ग्रेजी दधि पार० ॥
भारी भँवर बीच आ भ्रमतहि, केवट भूल्यो कावो।
अब अवलम्ब न को मेहाई, बाई बाहु वढावो।
स्यात भी मत सुस्तावो। अम्ग्रेजो दधि पार पुगावो. ॥
अणदा सूं जगह्न में अधिको. आपत्ति आप हटावो।
जे दोड़त श्रम ह्वै तो जगदम्ब, ठौड़ सू पगन उठावो ॥
गौड़ी रव गौड़ गहावो। अम्ग्रेजी दधिपार. ॥
शोखा शिर शम्पा झम्पासी, आत उल्लोल उडावो।
साम्प्रत शक्ति त्रिलोकन तो सम, जम कही सुत लेजावो।
लावण जिमि साजण मिलावो, अम्ग्रेजी दधिपार. ॥
उचरत-गज-जिम-गिरा, न ओंथूं, चोंथू जिमि चित चावो।
आज करी वही गरज सरी ज्युँ ही, चिमन री चिन्ता मिटावो
उवेलू इँदरेश रै आवो, धजाली दधि पार पुगावो. ॥

(सवैया)

बारि बरोव्बर बारि चल्यो है,
बल्यो है बयारि तुफांन महा।
भूंर में पोत भ्रमै गत होत,
मलाह कलाहु चलात रहा।

हूै न हमैं अवलम्ब अवैं,
जगदम्ब करंत विलम्ब कहा।
भय हरनी वरनी कवि जे,
करनी तरणी यह त्यारो हहा ॥१॥
गोव्यंद औ गजराज गती,
श्रुति साह अवाज सुनी सुरराई।
व्हां वह आतुर दौरेऽरु ह्यां यह,
गाय दुखन्त भुजाहि बढ़ाई।
पौन के गौन ते पाथ प्रवाह,
झुकन्त श्री हाथ पै नाव चढाई।
तीर धरी कर नीर अजे पुर,
चीर सुनार के साच दृढाई ॥२॥

जगदम्ब अब तो जेज न धारो,
धज वंध जलदी धणियप धारो ॥ टेर ॥
हरभू भुज भेटण इत हालो, दुख मेटण ईन्दारो।
दूरी रखि, भूलो न अन्दाता, पूरी कृपा पसारो ॥
जगदम्ब अब तो बिलम्ब न धारो ॥१॥
जैसलमेरपती अदीठ जिमि, दृष्टी त्राटक धारो।
डाढ्याली निज नोकरी देखि र, डोकरी रोग बिडारो ॥
अब तो जेज. ॥२॥

सांपू बाई री अरज सुणी ज्यूं सजन गरज यह सारो।
कान पसाव करो सा करनला, अबला हूं मैं, उद्धारो ॥
अब तो जेज. ॥३॥

अम्बर-धर बिच एक आसरो, थान धिरांणी थारो!
निरधारां आधार कृपा निधि, चित निज-बिरद चितारो ॥
अम्बेजी अब. ॥४॥

भुजलम्बे हूँ तुझ्झ भरोसै, अम्बे पार उतारो।
करनी कवि वरनी जगडू की, तरणी ज्यूं तन-त्यारो ॥
जगदम्ब अब तो. ॥५॥

गज टेरत हरि गये अदेर ज्यों, निर अवलम्ब निहारो।
दुष्ट वृन्द इत कष्ट देत अब, फन्द ग्राह-गति फारो ॥
जगदम्ब अब तो.॥६॥

इष्ट देवि विण कष्ट हरै कुण, वणि सन्तुष्ट उबारो।
इन्दु चर्णाश्रयं 'चिमनहिं' दे, सद्गति जन्म सुधारो।
जगदम्ब धणियप निज दिल धारो, अम्बेजी अब तो. ॥७॥

— सवैया —

सर्द की चांदनी सी सुखमा,
दुख दर्द व मांद मिटाण स्वरूपम्।
चारण चीन्है चकोरन ज्यों,
चहुं ओर भे तारन की तक भूपम् ॥

वृच्छ, वनौषधि रूप प्रजा—
उपजात अनोधक मोद मधूपम् ।
चातुकी चिम्न ले स्वाति की बुन्द,
सु—अपोत इन्दु सी इन्द्र अनूपम ॥

राग

देसणोक में गायक धोला गांवैं जे राग माढ ॥ टेर ॥
गिरवर धूंधला मिर मोर गहकैं, परचा पृथी प्रवाडै ॥
दीसैं जोति मांहि जोतीश्वरी देव्यां, स्वयं जोति सुख रासी ।
भलकत विद्युति विभाकर भासकि, परम प्रकाश प्रकासी ॥
सुद्ध तेज सारांश सुशोभित, लोभ्यत चित चपलासी ।
परमानन्द इंद्र दृग प्रापित, पवन तनय प्रज्ञा सी ॥
आवड बर्वड कर्नल आदिक, दिव्य स्वरूप दिखावैं ।
चन्दचकोरि जिम इंदरां चितवत, अद्भुत आनन्द आवैं ॥
पुंगल रै पंथ निज तन प्रकटी, रवि रुचि जोति स्वरूपी ।
जे प्रति जोति मांहि नित जोवत, इंदरां सकति अनूपी ॥
जगमगात जुग जोति ज्वालप्पा, बो हो विधि बिवुध बखाणैं ।
इन्द्रमात बिण अवर यथारथ, जोगी जती न जांणैं ॥
वंदत त्रिमन्ध्यां बाजैं बाजा, राजैं राजा राई ।
छत्र धर पर्णे इंदरेश बर्णे छवि, चिमन तर्णे चितचाई ।

कवित्त—

आनन्द अखंड थंड, मंडणी चामण्ड चंडि,
दिपै सातादीप विचैं त्राता तूं त्रिलोक की।
औजधारी औतारी करन्नी वेदां वरन्नी हो,
मात इच्छा पूरो रात दीह देण धोक की॥
मानुसी आकृति ईन्दू-बाई भानु सी वखेवी,
या की सेवी रहो खुडद देवी देसणोक की।
चिमन नमन की ह्वै, रहे हर्ज होत यातैं,
अम्बे अरज उचारी सारो गरज असोक की॥
आद्या ॐ उच्चरनी ऐकी वेकी औतरनी,
हर हराद्य चिन्ता हर्नी असर्न सर्नी तरी।
चंडी चंड-मुंड-चर्नी, अज्जर रक्ताद्य जर्नी,
महिष्प भष्पनी शुंभ अहुर सूं नहुरी॥
जोधांण कै किल्ले नींव, अडिग जचांण जैत,
थल्वट धर्णी को थंभ वीकांण विप्दा हरी।
ता कौं वर्नी चारनी ते ख्यात तो अलीन ही पै,
करनी मलीन की पै करनी कृपा करी॥

दोहा—

जल ले मल धोय रु उज्जल, गलके चुम्बि लगात।
बालक करनी नह वदै, पालक करनी मात॥

सवैया—

मात को मातपनो न पलात,
ये बात विख्यात बनी वसुधा पै।
शक्ति अविक्ष सुजांनै जिसो,
हुव जातिऽरु पाति को भेदन जापै॥
भाव की भूखी स्व-प्रेम की प्यासी वे,
दश्रथमांभी को पुज्यत थापै।
अंजनी मैना ज्यूं देवल आढी की,
केवल भक्ति पै औतरी आपै॥
रुष्ट ह्वै दुष्टन भक्षक भग्वती,
भक्तन रक्षक भै हरनी की।
जेयंती कैयंती जे त्रिपुराम्बि,
उपैयंती—भानु प्रभा भरनी की॥
ओ३म् अभेद रही चहुं वेद,
वही प्रकटी मां मरुद्धर नीकी।
चारण वृन्द में तारन चन्द सी,
कारन कान्ति उगी करनी की॥

दोहा—

सिद्धि ऋद्धि संग प्रकटई, रिद्धि नाम रचात।
भुवाहिं करहे भग्वती, करना दे कहवात॥

कवित्त—

कैफ कृपा रोष के कौस से जौसधारी नैण,
सैणां सुखदाई रुष्टां दुष्टां दुखदाई हैं।
विसाल अंगता रंग लाल स्यांमता कराल,
भादवी घटा में उदै भानुसी उमाई हैं॥
सिंह सवारी त्रिशूल धाबलो लोवडी धारी,
भारी भुजां चूड़ि ड़ाढी मूंछां छीदी छाई हैं।
शीश मणीं कांनां मुद्रा पावां पायलां पलकै,
काया किर्णीं मलकै जे कर्नल कहाई हैं॥

सवैया—

गाय दुहाय रही कर वामै, वढा कर दांहिणै झांभ तिराई।
शेखा पै पड़त ही बीजली कौं, गहि फैंकि वही गति मेघ फिराई॥
ऐसे असम्भव काम स्वकर्न सूं कर्न तैं कर्नल नाम कहाई।
व्याख्या मुनीन ध्वनी सूं सुनी सो ये आख्या यथार्थ गुनीजन गाई

कवित्त—

श्रीँ मन्त्र विशेष सर्वग्य शक्ति स्व प्रकाशी,
महाम्महो ज्योति राशि सूर्य में समाई से।
सूर्यौम् की ऊर्ध्व अणी लच्च रूप त्रिपुराम्बा,
ताकर प्रत्यच्च प्रगिट करणीं कहाई से।
वे ही किरार्णं मिली दिपी दिव्य देही बीस भुजी,
ईश-अग्र पुजी राज राजेश्वरी थाई से।

पांच सैं पचांवन सालग्रह को महोत्सवये,
कह को सकैं आरंभ रचे इन्द्र बाई से ॥
साधी सनाधी सो मेरु-कंदरां मंदरा मां बे,
आई इंदरा कै मिजमाना में उमंगती।
भैरवा लैरवा लियैं खुड़द अखाड़ा में खासा,
आसा पी तमाशा तकैं हासा-रंग रंगती।
सिद्ध ऋद्धि कव्य हव्य त्यार सिरू से परू से,
सो, च्यार प्रकार से जीमे परमेश्वरयां पंगती।
स्वाहा सुधाध्यपि योग्य सराई आई मेहाई,
चिन्न चित्त चांई गाई अनुभवोक्ति संगती।

दोहा—

बीड़ी लिय अब अग्र बढि, अर्पण किय इँदरेश।
कही 'पूजन जानूं न कछु, मा, प्रिय करि मांनो पेश ॥
अड़वड़ि आशीसां दियत, कदमां पड़ि कर जोड़ि।
अंगी इन्दर हो भुजलम्बे, अम्बे निरूहाज्यो ओड़ि ॥
उचरी सब सकत्यां इँदर, मरुधरनी धर्मग्य।
तब त्यागन तग्नी तिका, श्रीं करनी सर्वग्य ॥
सजी भक्ति लुभि मक्तियां, अकथ रूप इँदरेश।
कर्नल छबि उलटो कियो, भल मरदाणों भेप ॥

(सवैया)

मंगल तैं न अमंगल है क्रुपि राहरु केतको छाह ढकैंनां।
चन्द रवी हुँ अनंद उकैंन भुकैं गुरु फंदन मन्द तकैं नां।

शुक्र सक्र दूऽरु वुद्ध विरुद्ध हूँ जुद्ध में उद्ध अरी तैं थकैं नां।
हो करनी की कृपा रहतो यह नौ ग्रह नैंक बिगारि सकैं ना॥
इष्ट हुवै वह भ्रष्ट हुवै न अरिष्ट छुवै न निगाँ हरनी की।
सूरज सोम में भ्राजैं स जोम, यही त्रिपुराम्बि प्रभा भरनी की।
कोटि अरिष्ट उकंत हैं ओट, तकंत चराचर को चरनी की।
नौ ग्रह का रहो सो-ग्रह रूठि, करैं का घरैं जो कृपा करनी की।

कवित्त—

वेदान्त बतात आदि अन्त प्रारब्धाऽनुसार,
न्याय गात नीति सात आत जात उद्धरैं।
पातांऽजली चिकित्साद्य योग विद्या औषध्याऽश्रै,
सांख्य योग महा वाक्य ब्रह्मचर्यऽरु धरैं।
जोतिष जनात जन्म मौति हाऽत नौ ग्रह के,
तो ग्रह मानो गृह में कौन शान्ति क्रुद्ध रहैं।
मीमांसा मनात अनुष्टांन ग्यांन ध्यान युक्ति,
मुक्ति मिलैं कर्नी कृपा कियैं सर्व सुधरैं॥१॥

दोहा—

जपिय जुक्ति जल जोगएयां, सदुपदेश सुख शान्ति।
इँदरां त्यारण ईश्वरी, नमो कर्णला कान्ति॥ १॥
लागी ज्युँहि लागी रहो, रागी दिल इँदरेश।
तेरी चेरी चिमन तुहि, नेरी निम्हत हमेश॥ २॥

गिरां दरां नद झॅगरां, सरां नीझरां शक्ति।
गड़ वन बागां बावड्यां, भणत इँन्दरां भक्ति ॥ ३ ॥
केई गिनार कैलाश केई, साता दीप सुमेर।
तेमड़ादथ दर तकिया, आसवि छकि अदेर ॥ ४ ॥
कवित्त सवैया कछु दुहा, चिरजा भेट चढ़ात।
काल्ही चिमनां कल्पनां, मांनूं वाल्ही मात ॥ ५ ॥
उन्नीसै अठ्यांणवै, सदँ न्योरत्यां श्लेष।
जग जाहिर जगदम्बिका, उच्छव कियै इँन्दरेश ॥ ६ ॥

संवत सर दुय सहस पर, नौ को अंक निधान।
भादव वदि एकादशी, शनीवार शुभ जान ॥
काव्य-कल्पना पूर्ण कर, शोधे हु 'जुगल किशोर'।
अर्पित किये इन्द्रेश को, कवि "हिंगोल" करजोर ॥

(सवैया)

भाव अभाव सु-भाव के कारण, पेखिन पावैं न पाव प्रकाशन।
रुचिऽरु हीतिऽरु भक्ति भरे, भल भासत वासत छन्द सुवासन ॥
जानत पद्द उभै कविता केऽरु, मानत आपहुं अज्ञ सभासन।
देख्यो है आज, सुन्यो न कभी, अस अज्ञमाना कवि विज्ञ कव्यां-सन ॥

श्री जुगलकिशोर मिश्र

—सम्पादक—